Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❊ श्रियै नमः ❊

❊ श्रीमते रामानुजाय नमः ❊

पञ्चविंश सूक्तानि

पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त, विष्णुसूक्त, नारायणानुवाकः, नारायणोपनिषत् संज्ञकानि

श्रीनारायण की लगन में, ये पांचों न सुहात ।
विषयभोग, निद्रा, हँसी, जगत् प्रीति, बहुबात ॥

प्रकाशक :

श्री केदारनाथ सहरिया

सं० २०४२ मूल्य : सप्रेम ५.०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रयम !

रायबहादुर रामेश्वरलाल सहरिया
की वैकुण्ठ उत्सव की पुण्य स्मृति में
सप्रेम समर्पित—

Umashankar Pande
Rungta House
Lanka
VARANA

CC0. In Public Domain-Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रयम् ।

अनुक्रमणिका

१	श्री लक्ष्मीस्तोत्रम्	
२	मन्त्र-महिमा	१०
३	अथ पञ्च सूक्तानि	११-१२
४	अथ पुरुषसूक्तम्	१२-१४
५	अथ श्रीसूक्तम्	१४-१६
६	अथ नारायणानुवाकः	१७-१८
७	अथ विष्णुसूक्तम्	१८-१९
८	अथ भूसूक्तम्	२०
९	अथ नारायणोपनिषत्	२१-२२
१०	संक्षिप्त पुण्याहवाचनम्	२३
११	प्रार्थना	२४
१२	श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्	२५-४२
१३	सुदर्शन कवचम्	४३-५
१४	आलबन्दार स्तोत्रम्	५१-६
१५	वरदवल्लभा स्तोत्रम्	६८-६९
१६	वेंकटेश सुप्रभातम्	६९-७६
१७	कनकधारा श्रीलक्ष्मीस्तवराजः	७७-८३
१८	सुमंगलस्तोत्रम्	८३-८४
१९	पंचघाटी	८५-८६
२०	पाण्डवगीता	८७-१०३
२१	श्रीरामानुजप्रपत्तिः	१०३
२२	अथ विष्णुसहस्र नामावलिः	१०५-१२६
२३	श्री शिवस्तुतिः	१२७-१२८
२४	श्री रुद्राक्षमाहात्म्य	१२९-१३८
२५	अथ श्री शिवमहापुराण भाषा-टीका सहितं प्रारभ्यते (श्रीरुद्राक्ष का विवरण)	१३९-१५५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्व० रायबहादुर रामेश्वरलाल सहरिया
एवम् धर्मपत्नी लक्ष्मी देवी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निवेदन

—::o::—

आज के भौतिकवादी युग में मानव आर्थिक समृद्धि प्राप्त करने को प्रयत्नशील है। परन्तु इस समय देश की दशा ठीक उसी प्रकार की है जैसी कि दुर्वासा ऋषि द्वारा शापित लक्ष्मीजी के चले जाने पर देवताओं की हुई थी। समस्त देव समाज श्रीविहीन हो गया था। प्रत्येक घर में जहाँ सोने, चाँदी आदि बहुमूल्य धातुओं के बर्तनों का प्रयोग होता था आज के परिवारों में चीनी मिट्टी व कांच के बर्तन प्रयोग में लाये जा रहे हैं। समृद्धि के अभाव में जीवनयापन कठिन हो गया है। एक ओर जहाँ मानव अन्य विभिन्न विधियों से आर्थिक समृद्धि लाने को सतत् प्रयत्नशील है दूसरी ओर अमोघ धार्मिक एवं आध्यात्मिक विधि का आश्रय भी अपरिहार्य है।

समुद्र मन्थन कर श्रीलक्ष्मीजी पुनः प्रकट हुईं उनके प्रकट होने पर देवता दैत्यों से विजयी हुए और उन्होंने अपने राज्य पर अधिकार प्राप्त कर लिया। देवराज पुनः सिंहासनारूढ़ हुए। उन्होंने समृद्धि की देवी श्रीलक्ष्मीजी की जिस स्तोत्र द्वारा प्रार्थना की, वह पाठकों के कल्याणार्थ प्रकाशित करते हुए परम सन्तोष हो रहा है। जिसके नित्य पाठ से अवश्य ही दरिद्रता का विनाश श्रीलक्ष्मीजी की कृपा से होगा ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। श्रीविष्णु पुराण में विष्णु-प्रिया, कमलाक्षी-श्रीलक्ष्मीजी ने स्वयं देवराज से कहा है :—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रलोक्यं त्रि दशश्रेष्ठ न सन्त्यक्ष्यामि वासव।
दत्तो वरो मया यस्ते स्तोत्राराधनतुष्टया॥
यश्च सायं तथा प्रातः स्तोत्रेणानेन मानवः।
मां स्तोष्यति न तस्याहं भविष्यामि पराङ्मुखी॥

हे देवराज इन्द्र ! मैं अब तीनों लोकों को कभी न छोडूंगी। तेरे से प्रसन्न होकर मैं तुझे यह वरदान देती हूं कि जो कोई मनुष्य प्रातःकाल और सायंकाल इस स्तोत्र से मेरी स्तुति करेगा उससे मैं कभी विमुख नहीं हूंगी"

पाठकों की सुविधा हेतु स्तोत्र के प्रत्येक श्लोक का सरल हिन्दी में अनुवाद साथ ही दिया गया है जिससे कि संस्कृत न जानने वाले पाठक भी श्लोक का भाव समझ कर श्रीलक्ष्मीजी की स्तुति एकाग्रमन से भली प्रकार करके लाभान्वित हो जायें। अब तक जिन व्यक्तियों द्वारा इस स्तोत्र का पाठ नियमित किया गया है आश्चर्यजनक रूप आर्थिक उन्नति हुई है। स्तोत्र के प्रकाशन में मेरे मित्र श्री धुरेन्द्र मार दीक्षित का जो सहयोग मिला है उसके लिये मैं उनका ज्ञ हूं।

निवेदक—

माधवाचार्य

—:o:—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीलक्ष्मीस्तोत्रम्

—::o::—

इन्द्रोउवाच : इन्द्र ने कहा !

नमस्ये सर्वलोकानां जननीमब्जसम्भवाम् ।
श्रियमुन्निद्रपद्माक्षीं विष्णुवक्षस्थलस्थिताम् ॥१॥

समस्त लोगों की जननी, खिले हुए कमल के समान नेत्रों वाली भगवान विष्णु के हृदय में सदा विराजमान, कमल से उत्पन्न श्री-लक्ष्मीजी देवी को मैं नमस्कार करता हूँ।

पद्मालयां पद्मकरां पद्मपत्रनिभेक्षणाम् ।
वन्दे पद्ममुखीं देवीं पद्मनाभप्रियामहम् ॥२॥

कमल पर निवास करनेवाली कमल ही जिनके कर में शोभायमान है तथा कमलदल के समान जिनके सुन्दर नेत्र हैं ऐसी कमल-मुखी, कमलनाभ श्री विष्णु की प्रिया श्री कमला देवी की मैं हृदय से वन्दना करता हूँ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधात्वं लोकपावनी ।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूतिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती ॥३॥

हे देवि ! तुम सिद्धि हो, स्वधा हो और तुम ही स्वाहा हो, अमृत मयी और तीनों लोकों को पवित्र करनेवाली हो तथा हे माता तुम ही संध्या, रात्रि, प्रभा, विभूति मेधा, श्रद्धा और सरस्वती हो।

यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या च शोभने ।
आत्मविद्या च देवित्वं विमुक्तिफलदायिनी ॥४॥

हे सुमुखि ! आपही यज्ञविद्या (कर्मकाण्ड स्वरूपा) महाविद्या (उपासना और गुह्यविद्या (इन्द्रजाल) तुम्हीं हो और मुक्ति फल देने वाली आत्म विद्या भी हो।

आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिस्त्वमेव च ।
सौम्यासौम्यैर्जगद्रूपैस्त्वयैतद्देवि पूरितम् ॥५॥

हे देवि ! तुम आन्वीक्षिकी (तर्कविद्या) तथा वेदत्रयी, वार्ता (शिल्प, वाणिज्य आदि) और तुम ही राजनीति (दण्डनीति) भी हो। तुम्हारा ही शान्त एवं उग्र रूप समस्त संसार में व्याप्त है।

का त्वन्या त्वामृते देवि सर्वयज्ञ मयं वपुः ।
अध्यास्ते देवदेवस्य योगिचिन्त्य गदाभृतः ॥६॥

हे देवि ! योगियों द्वारा निरन्तर चिन्तन किये जाने वाले सर्वयज्ञमय भगवान विष्णु के शरीर का आश्रय पाने वाली तुम्हारे अतिरिक्त संसार में कोई स्त्री नहीं है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वया देवि परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयम् ।
विनष्टप्रायमभवत्त्वयेदानीं समेधितम् ॥७॥

हे विष्णुप्रिये ! तुम्हारे छोड़ देने पर तीनों लोक नष्ट जसे हो गये थे अब तुम्हीं ने उन्हें नवजीवन दान दिया है ।

दाराः पुत्रास्तथागार सुहृद्धान्यधनादिकम् ।
भवत्येतन्महाभागे नित्यं त्वद्वीक्षणान्नृणाम् ॥८॥

हे महादेवी ! स्त्री पुत्र, गृह, घन, धान्य तथा मित्र, ये सब आपकी कृपा दृष्टि से ही मनुष्य को प्राप्त होते हैं ।

शरीरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखम् ।
देवि त्वद्दृष्टि दृष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम् ॥९॥

हे देवि ! तुम्हारी दया दृष्टि पात्र पुरुषों के लिए शारीरिक आरोग्य, ऐश्वर्य, शत्रुओं का नाश और समस्त सुखों का प्राप्त होना अति सुलभ है ।

त्वं माता सर्वलोकानां देवदेवो हरिः पिता ।
त्वयैतद्विष्णुना चाम्ब जगद्व्याप्तं चराचरम् ॥१०॥

तुम समस्त लोगों की माँ हो और भगवान विष्णु पिता हैं । हे मातः ! तुम और देवाधिदेव भगवान हरि समस्त चराचर में व्याप्त हैं ।

मा नः कोशं तथा गोष्ठं मा गृहंमा परिच्छदम् ।
मा शरीरं कलत्रं च त्यजेथाः सर्वपावनि ॥११॥

मातेश्वरी ! आप सबको पवित्र करनेवाली हैं । हमारे खजाने, गौशाला, घर, भोगसामग्री, शरीर और स्त्री को, आप कभी भी न त्यागें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मा पुत्रान्मा सुहृद्वर्गं मा पशून्मा विभूषणम् ।
त्यजेथा मम देवस्य विष्णोर्वक्षःस्थलालये ॥१२॥

चराचरपति विष्णु के हृदय पटल पर निवास करने वाली देवि हमारे पुत्र मित्र, पशु और भूषणों को आप कभी न छोड़ें।

सत्वेन सत्यशौचाभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः ।
त्यज्यन्ते ते नराः सद्यः सन्त्यक्ता ये त्वयामले ॥१३॥

हे विमले ! जिन मनुष्यों को तुम छोड़ देती हो उनके सत्व (मानसिक बल) सत्य, शौच और शील आदि गुण शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

त्वया विलोकिताः सद्यः शीलाद्यैरखिलैर्गुणैः ।
कुलैश्वर्यैश्च युज्यन्ते पुरुषा निर्गुणा अपि ॥१४॥

तुम्हारी कृपा दृष्टि पड़ते ही मनुष्य गुणहीन होने पर भी शीघ्र ही शील आदि सम्पूर्ण गुणों, कुलीनता एवं ऐश्वर्य से सम्पन्न हो जाता है।

सश्लाघ्यः स गुणीधन्यः स कुलीनः स बुद्धिमान् ।
सशूरः स च विक्रान्तो यं त्वं देवि निरीक्षसे ॥१५॥

हे देवि ! जिस पर तुम्हारी कृपा दृष्टि पड़ जाती है वही प्रशंसा के योग्य, गुणी और धन्य भाग्य वाला है और वही मनुष्य परम कुलीन, बुद्धिमान महान पराक्रमी हो जाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सद्यो वैगुण्यमायान्ति शीलाद्याः सकला गुणाः ।
पराङ्मुखी जगद्धात्री यस्य त्वं विष्णुवल्लभे ॥१६॥

हे विष्णु प्रिया मातेश्वरी ! तुम्हारे विमुख हो जाने पर मनुष्य के शील आदि गुण अवगुणों में बदल जाते हैं ।

न ते वर्णयितुं शक्ता गुणाञ्जिह्वापि वेधसः ।
प्रसीद देवि पद्माक्षि मास्मांस्त्याक्षीः कदाचन ॥१७॥

हे जगन्मातः ! तुम्हारे गुण का वर्णन करने में तो ब्रह्माजी की जीभ असमर्थ है फिर मैं तो अत्यन्त तुच्छ हूँ । अतः हे कमलनयने मुझ पर अब प्रसन्न हो जाइये और कभी न छोड़िए ।

श्रीपराशर उवाच

एवं श्रीः संस्तुता सम्यक् प्राह देवी शतक्रतुम् ।
शृण्वतां सर्वदेवानां सर्वभूतस्थिता द्विज ॥१८॥

श्रीरुवाच

परितुष्टास्मि देवेश स्तोत्रेणानेन ते हरे ।
वरं वृणीष्व यस्त्विष्टो वरदाहं तवागता ॥१९॥

इन्द्र उवाच

वरदा यदि मे देवि वरार्हो यदि वाप्यहम् ।
त्रैलोक्यं न त्वया त्याज्यमेष मेऽस्तु वरः परः ॥२०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तोत्रेण यस्तथैतेन त्वां स्तोष्यत्यब्धिसम्भवे ।
स त्वया न परित्याज्यो द्वितीयोऽस्तु वरो मम ॥२१॥

श्रीरुवाच

त्रैलोक्यं त्रिदशश्रेष्ठ न सन्त्यक्ष्यामि वासव ।
दत्तो वरो मया यस्ते स्तोत्राराधनतुष्टया ॥२२॥

यश्च सायं तथा प्रातः स्तोत्रेणानेन मानवः ।
मां स्तोष्यति न तस्याहं भविष्यामि पराङ्मुखी ॥२३

श्रीपराशर उवाच

एवं ददौ वरं देवी देवराजाय वै पुरा ।
मैत्रेय श्रीर्महाभागा स्तोत्राराधनतोषिता ॥२४॥
भृगोः ख्यात्यां समुत्पन्ना श्रीः पूर्वमुदधेः पुनः ।
देवदानवयत्नेन प्रसूतामृतमन्थने ॥२५॥

एवं यदा जगत्स्वामी देवदेवो जनार्दनः ।
अवतारं करोत्येषा तदा श्रीस्तत्सहायिनी ॥२६॥

पुनश्च पद्मादुत्पन्ना आदित्योऽभूद्यदा हरिः ।
यदा तु भार्गवो रामस्तदाभूद्धरणी त्वियम् ॥२७॥

राघवत्वेऽभवत्सीता रुक्मिणी कृष्णजन्मनि ।
अन्येषु चावतारेषु विष्णोरेषानपायिनी ॥२८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवत्वे देवदेहेयं मनुष्यत्वे च मानुषी ।
विष्णोर्देहानुरूपां वै करोत्येषात्मनस्तनुम् ॥२६॥

यश्चैतच्छृणुयाज्जन्म लक्ष्म्या यश्च पठेन्नरः ।
श्रियो न विच्युतिस्तस्य गृहे यावत्कुलत्रयम् ॥३०॥

पठ्यते येषु चैवेयं गृहेषु श्रीस्तुतिर्मुने ।
अलक्ष्मीः कलहाधारा न तेष्वास्ते कदाचन ॥३१॥

एतत्ते कथितं ब्रह्मन्यन्मां त्वं परिपृच्छसि ।
क्षीराब्धौ श्रीर्यथा जाता पूर्वं भृगुसुता सती ॥३२॥

इति सकलविभूत्यवाप्तिहेतुः
स्तुतिरियमिन्द्रमुखोद्गता हि लक्ष्म्याः ।
अनुदिनमिह पठ्यते नृभिर्यै-
र्वसति न तेषु कदाचिदप्यलक्ष्मी ॥३३॥

॥ इति श्रीलक्ष्मी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मन्त्र-महिमा

हे मर्त्याः ! परमं हितं शृणुत वो वक्ष्यामि संक्षेपतः :
संसारार्णवमापदूर्मिबहुलं सम्यक् प्रविश्य स्थिताः ।
तस्मादुत्तरितु यदीच्छथ नमो नारायणायेत्यमुम्
मन्त्रं सप्रणवं प्रणामसहितं प्रावर्तयध्वं मुहुः ॥

मधुरं मधुरेभ्योऽपि, मङ्गलेभ्योऽपि मलङ्गम् ।
पावनं पावनेभ्योऽपि, 'हरेर्नामैव केवलम्' ॥ १ ॥

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं, सर्वं मायामयं जगत् ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं, 'हरेर्नामैव केवलम्' ॥ २ ॥

स गुरुः स पिता चापि, सा माता बान्धवोऽपि ते ।
शिक्षयेच्चेत्सदा स्मर्तुं, 'हरेर्नामैव केवलम्' ॥ ३ ॥

निःश्वासे नहि विश्वासः, कदा रुद्धो भविष्यति ।
कीर्तनीयमतो बाल्यात्, 'हरेर्नामैव केवलम्' ॥ ४ ॥

हरिर्वसति तत्रैव, यत्र भागवता जनाः ।
गायन्ति भक्तिभावेन, 'हरेर्नामैव केवलम्' ॥ ५ ॥

अहो दुःखमहो दुःखं, दुःखाद् दुःखतरं यतः ।
काचार्थं विस्मृतं रत्नं, 'हरेर्नामैव केवलम्' ॥ ६ ॥

दीयतां दीयतां कर्णौ, नीयतां नीयतां वचः ।
गीयतां गीयतां नित्यं, 'हरेर्नामैव केवलम्' ॥ ७ ॥

तृणीकृत्य जगत्सर्वं राजते सकलोपरि ।
चिदानन्दमयं शुद्धं, 'हरेर्नामैव केवलम्' ॥ ८ ॥

★

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

★ श्रीमते रामानुजाय नमः ★

अथ पञ्च सूक्तानि

अथ स्वस्तिवाचनम्

ॐ आनो भद्राःऋतवो यन्तु विश्वतो दब्धासोऽअपरीतास उद्भिदद्रः ।
देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥ १ ॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाꣳरातिरभिन्नो निवर्त्तताम् ।
देवानाꣳ सख्यमुपसेदिमावयन्देवानऽ-आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ २ ॥
तान्पूर्वया निविदाहूमहे वयं भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम् ।
अर्यमणं वरुणꣳ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत् ॥ ३ ॥
तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्यायुवम् ॥ ४ ॥
तमीशानञ्जगत स्तस्थुषस्पतिन्धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ५ ॥
स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वस्तिनस्ताक्ष्यो॑ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ६ ॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह ७ ॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ ८ ॥
शतमिन्नुशरदोऽअन्ति देवा यत्रानश्चक्रा जरसन्तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ॥ ९ ॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।
विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ १ ॥
तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः ।
नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः ॥ ११ ॥
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवीःशान्तिरापः शान्तिरोषधः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः ।
सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ १२ ॥

अथ पुरुषसूक्तम्

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
सभूमिꣳ सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥
पुरुष एवेदꣳ सर्वं तद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायां श्च पूरुषः ।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रिपादूर्ध्वं उद त्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ।। ४ ।।

ततो विराडजायत विराजो अधिपूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः ।। ५ ।।

तस्माद्यज्ञा त्सवहुत सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूं स्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या न्ग्राम्याश्च ये ।। ६ ।।

तस्माद्यज्ञा त्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजु स्तस्मादजायत । ७ ।।

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मा त्तस्माज्जाता अजावय ।। ८ ।।

त यज्ञ म्बर्हिषि प्रौक्ष न्पुरुषञ्जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ।। ९ ।।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखङ्किमस्यासी त्किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते ।। १० ।।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्याꣳ शूद्रो अजायत ।। ११ ।।

चन्द्रमा मनसो जात श्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ।। १२ ।।

नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पदभ्यांभूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकां२ कल्पयन् ।। १३ ।।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ।। १४ ।।

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञन्तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम् ।। १५ ।।

यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः ।। १६ ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च, विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे ।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥ १७ ॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वातिमृत्युमेतिनान्यः पंथा विद्यतेऽयनाय ॥ १८ ॥

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते ।
तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरा स्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥ १९ ॥

यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः ।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥ २० ॥

रुच ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन् वशे ॥ २१ ॥

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ ।
व्यात्तम्, इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण ॥ २२ ॥

हरिः ओम् ३ ॥

(शुक्लयजुर्वेद ३१)

—:o:—

अथ श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १ ॥

ॐ ताम्म आवह जातवेद लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवी मुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम् ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारा मार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।। ४ ।।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मी र्मे नश्यतां त्वां वृणे ।। ५ ।।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पति स्तव वृक्षोथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।। ६ ।।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रेस्मिन्कीर्तिमृद्धि ददातु मे ।। ७ ।।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।। ८ ।।

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।। ९ ।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।। १० ।।

कर्दमेन प्रजाभुता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुल मातरं पद्ममालिनीम् ।। ११ ।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वश मे गृहे ।
निचदेवीं मातरं श्रिय वासय मे कुले ।। १२ ।।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातदेदो ममावह ।। १३ ।।

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ।। १४ ।।

ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ।। १५ ।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
त्रियः पञ्चदशर्चंञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ।। १६ ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
पद्मानने पद्मऊरु पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥ १७ ॥
अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहिमे ॥ १८ ॥
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वादिगवीरथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु माम् ॥ १९ ॥
धनमग्निधनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ ॥ २० ॥
वैनतेयः सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥ २१ ॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपत् ॥ २२ ॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवती हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ २३ ।
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
विष्णोः प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥ २४ ॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ २५ ॥
श्रीवर्चस्वमायुष्य मारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशु बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ २६ ॥

—:०:—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ नारायणानुवाकः

ॐ सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशम्भुवम् ।
विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं प्रभुम् ॥ १ ॥

विश्वतः परमं नित्यं विश्वं नारायणं हरिम् ।
विश्वमेवेदं पुरुष स्तद्विश्व मुपजीवति ॥ २ ॥

पतिं विश्वस्यात्मेश्वरं शाश्वतं शिवमच्युतम् ।
नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम् ॥ ३ ॥

नारायणः परंब्रह्म तत्वं नारायणः परः ।
नारायणः परो ज्योति रात्मा नारायणः परः ॥ ४ ॥

यच्च किञ्चिज्जगत्यस्मिन्दृश्यते श्रूयतेऽपि वा ।
नारायणः परोध्याता ध्यानं नारायणः परः ।
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः ॥ ५ ॥

अनन्तमव्यं कविं समुद्रेऽन्तं विश्वशम्भुवम् ।
पद्मकोशप्रतीकाशं हृदय चाप्यधोमुखम् ॥ ६ ॥

अधो निष्टयावितस्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति ।
ज्वालमालाकुलं भाति विश्वस्यायतनं महत् ।
हृदय तद्विजानीया द्विश्वस्यायतनं महत् ॥ ७ ॥

सन्ततꣳ शिराभिस्तु लम्बत्याकोशसन्निभवम् ।
तस्यान्ते सुषिरं सूक्ष्मं तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥ ८ ॥

तस्य मध्ये महानग्नि र्विश्वार्चि विश्वतो मुखः ।
सोऽग्रभुग्विभजन् तिष्ठन्नहारमजरः कविः ॥ ९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तिर्यगूर्ध्वमधः शायी रश्मयस्तस्य सन्तताः।
सन्तापयति स्वं देहमापादतलमस्तकम्।
तस्य मध्ये वन्हिशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थिता ॥१०॥

नीलतोयदमध्यस्था विद्युल्लेखेव भास्वरा।
नीवारशूकवत्तन्वी पीताभास्वत्यणूपमा ॥११॥

तस्याः शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः।
स ब्रह्मा स शिवः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमस्वराट् ॥१२॥

ऋतं सत्यं परब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्।
ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः ॥१३॥

ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि।
तन्नोविष्णुः प्रचोदयात् ॥

—:o:—

अथ विष्णुसूक्तम्

ॐ विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममेरजांᳫसि।
यो अस्कभा यदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ॥ १ ॥

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः पृष्ठमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थः।
विष्णोः स्यूरसि विष्णो ध्रुवमसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ २ ॥

तदस्य प्रियमपि पाथो अस्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति।
उरुक्रमस्य सहिबन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः ॥ ३ ॥

प्रतद्विष्णु स्तवते वीर्याय मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठा।
यस्योरुषु त्रिषु विचक्रमणेषु अधिक्षयन्ति भुवनानि विश्वा ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परो मात्रया तनु वावृधान नते महित्वमन्वश्नुवन्ति ।
उभेते विद्म रजसो पृथिव्या विष्णो देवत्वं परमस्य वित्से ॥ ५ ॥

विचक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन् ।
ध्रुवासो अस्य कीरयो जनास उरुक्षितिं सुजनिमा चकार ॥ ६ ॥

त्रिर्देवः पृथिवीमेष एतां विचक्रमे शतर्चसं महित्वा ।
प्रविष्णुरस्तु तवसस्तवीयान् त्वेषꣳ ह्यस्य स्थविरस्य नाम ॥ ७ ॥

अतो देवा अवन्तु नो, यतो विष्णु र्विचक्रमे,
पृथिव्याः सप्तधामभिः ॥ ८ ॥

इदं विष्णु र्विचक्रमे, त्रेधानिसधे पदम् । समूढमस्य पा सुरे ॥ ९ ॥

त्रीणि पदा विचक्रमे, विष्णु र्गोपा अदाभ्यः ।
तको धर्माणि धारयन् ॥ १० ॥

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पसे ।
इन्द्रस्य युज्यः सदा ॥ ११ ॥

तद्विष्णोः परमं पदं, सदा पश्यन्ति सूरयः ।
दिवीव चक्षुराततम् ॥ १२ ॥

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाꣳ सः समिन्धने ।
विष्णो र्यत्परमंपदम् ॥ १३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ भूसूक्तम्

ॐ भूमिर्भूम्ना द्यौर्वरिम्णान्तरिक्षं महित्वा ।
उपस्थे ते देव्यदितेऽग्निमन्नाद्याया दधे ॥ १ ॥

आयं गौः पृश्निरक्रमीदशदन्मातरं पुनः । पितरं च प्रयन्त्सुवः ॥ २ ॥

त्रिंशद्धामविराजति वाक्पतङ्गाय शिश्रिये । प्रत्यस्य वहद्युभिः ॥ ३ ॥

अस्यप्राणादपानन्त्यन्तश्चरति रोचना । व्यख्यन्महिषः सुवः ॥ ४ ॥

यत्वाक्रुद्धः परोवप मन्युना यदवर्त्या ।
सुकल्पमग्ने तत्तव पुनस्त्वोद्दीपयामसि ॥ ५ ॥

यत्ते मन्युपरोप्तस्य पृथिवीमनुदध्वसे ।
आदित्या विश्वे तद्देवा वसवश्च समाभरन् ॥ ६ ॥

मेदिनी देवी वसुन्धरा स्याद्वसुधा देवी वासवी ।
ब्रह्मवर्चसः पितृणां श्रोत्रं चक्षुर्मनः ॥ ७ ॥

देवी हिरण्यगर्भिणी देवी प्रसूवरी रसने सत्यायने सीद ॥ ८ ॥

समुद्रवती सावित्रीह नो देवी मत्यवी मही ।
धरणीमहोव्यधिष्ठा शृंगे शृंगे यज्ञे यज्ञे विभीषिणी ॥ ९ ॥

इन्द्रपत्नी व्यापिनी सुरसरीरिह वायुमती जलशयनी ।
श्रियंधा राजा संत्यन्धोपरिमेदिनी श्वोपरिधत्त गायत्री ॥ १० ॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥ ११ ॥
ॐ धनुर्धरायै विद्महे सर्वसिद्ध्यै च धीमहि ।
तन्नो धरा प्रचोदयात् ॥ १२ ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ नारायणोपनिषत्

ॐ अथ पुरुषो ह वै नारायणोऽकामयत प्रजाः सृजेयेति। नारायणात्प्राणो जायते। मन सर्वेन्द्रियाणि च। खं वायु-र्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी। नारायणाद् ब्रह्मा जायते। नारायणाद्रुद्रो जायते। नारायणादिन्द्रो जायते। नारायणात्प्रजापतिः प्रजायते। नारायणाद्द्वादशादित्या रुद्रा वसवः सर्वाणि छन्दाँसि, नारायणादेव समुत्पद्यन्ते। नारायणात्प्रवर्तन्ते। नारायणे प्रलीयन्ते। एतदृग्वेदशिरोऽधीते ॥ १ ॥

अथ नित्यो नारायणः। ब्रह्मा नारायणः। दिशश्च नारायणः। शक्रश्च नारायणः। कालश्च नारायणः। दिशश्च नारायणः विदिशश्च नारायणः ऊर्ध्वश्च नारायण। अधश्च नारायणः। अन्तर्बहिश्च नारायणः एवेदं सर्वयद् भूतं यच्च भव्यम्। निष्कलङ्कोनिरञ्जनो निर्विकल्पो-निराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणो न द्वितीयोऽस्तिक-श्चित्। य एवं वेद स विष्णुरेव भवति, स विष्णुरेव भवति। एतद्यजुर्वेद शिरोऽधीते ॥ २ ॥

'ॐ' इत्यग्रे व्याहरेत्। 'नमः' इति पश्चात्। 'नारायणाय' इत्युपरिष्टात्। 'ॐ' इत्येकाक्षरम्। 'नमः' इति द्वे अक्षरे। 'नारायणाय' इति पञ्चाक्षराणि। एतद्वै नारायण-स्याष्टाक्षपं पदम्। यो ह वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदम-ध्येति। अनपब्रुवः सर्वमायुरेति। विन्दते प्राजापत्यं,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रायस्पोषं गौपत्यं ततोऽमृतत्वश्नुते इति । एतत्सामवेद शिरोऽधीते ॥ ३ ॥

'प्रत्यगानन्दं ब्रह्मपुरुषं प्रणवस्वरूपम् । अकार उकारमकार इति । ता अनेकधा समभवत्तदेतदोमिति यमुक्त्वा मुच्यते योगी जन्मसंसारबन्धनात् । 'ॐ नमो नारायणाय' इति मन्त्रोपासको वैकुण्ठं भुवनं गमिष्यति तदिदं पुण्डरीकं विज्ञानघनं तस्मात्तडिदाभमात्रम् । ब्रह्मण्यो देवकीपुत्रो ब्रह्मण्यो मधुसूदनः । ब्रह्मण्यः पुण्डरीकाक्षो ब्रह्मण्यो विष्णुरच्युत इति । सर्वभूतस्थमेकं नै नारायणं कारणपुरुषम कारणं परं ब्रह्मोम् एतदथर्वशिरोऽधीते ॥ ४ ॥

'प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । तत्सायं प्रातरधीयानो पापोऽपापो भवति । मध्यंदिनमादित्याभिमुखोऽधीयानः पञ्चमहापातकोपपातकात्प्रमुच्यते । सर्ववेदपारायणपुण्यं लभते । नारायणसायुज्यमवाप्नोति । श्रीमन्नरायणसायुज्यमवाप्नोति एवं वेद ।'

ॐ सहनाववत्विति शान्तिः ।

॥ इति नारायणोपनिषद् समाप्ता ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संक्षिप्त पुण्याहवाचनम्

हारः ओं
पुण्याहं, स्वस्ति, ऋद्धि मित्योंकार पूर्वत्रि
स्त्रिरेकैकामाशिषः वाचयेत् (इतिबोधायनः)
ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां।
पुनर्ब्रह्मानो बसुनीत यज्ञैः ॥
घृतेम त्वं तनुवो बर्द्धयस्व।
सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥
ब्रुवन्त। प्रतिवचन, पुण्याहमस्तु ३
भो ब्राह्मणा अस्य यजमानस्य पुण्याहं भवन्तो
ब्रुवन्तु। प्रतिवचनं, पुण्याहस्तु ३
ओं स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पुषा विश्ववेदा ॥
स्वस्तिनस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥
भो ब्राह्मणा अस्य यजमानस्य ऋद्धि भवन्तो
ब्रुवन्तु। प्रतिवचनं, स्वस्तिरस्तु ३
ओं ऋध्यामस्तोमं सनुयाम वाज।
मा नो मन्त्रं मधुगोष्वन्तरा ॥
यशो न पक्वं सरथेहोपयाताम्।
भूतांशो अश्विनोकामप्राः ॥ (ऋक् ८।६।२)
भो ब्राह्मणा अस्य यजमानस्य ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु।
प्रतिवचनं, ऋद्धिरस्तु ३

—:o:—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रार्थना

प्रभु में प्रेम बढ़ाकर, रहो सदा आनन्द ।
विषय वासना दूर कर, करो सदा सत्संग ॥

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में
यह विनती है पल-पल छिन-छिन रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
चाहे बैरी कुल संसार रहे चाहे जीवन मुझ पर भार रहे
चाहे मौत गले का हार बने रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
चाहे अग्नि में मुझे ज़लना हो चाहे काँटों पर मुझे चलना हो
चाहे छोड़ के देश निकाला हो रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो चाहे चारों ओर अँधेरा हो
पर मन मेरा डगमग न हो रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
जीवों पर तेरा ध्यान रहे तेरी याद सुबह और शाम रहे
श्रीलक्ष्मीनाथ से विनती है संसार का मोह छुड़ा देना
हम तेरी शरण में आये हैं हमें भव से पार लगा देना
सत्संग की गंगा बहती है भगवान तुम्हारे चरणों में
मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में

★

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥
नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥

वैशम्पायन उवाच—

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥१॥

युधिष्ठिर उवाच

किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥२॥
को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किं जन्ममुच्यते जन्तुजन्मसंसारबन्धनात् ॥३॥

भीष्म उवाच—

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥४॥
तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यायन्स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥५॥
अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षंस्तुवन्नित्यंसर्वदुःखातिगोभवेत् ॥६॥
ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥७॥
एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः ।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥८॥
परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥९॥
पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥१०
यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥११॥
तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्रं मे श्रृणु पापभयापहम् ॥१२॥
यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥१३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद् भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥१४॥
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमागतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥१५॥
योगो योगविदां नेता प्रधान पुरुषेश्वरः ।
नारसिंहवपुः श्रीमान्केशवः पुरुषोत्तमः ॥१६॥
सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
सम्भवोभावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥१७॥
स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥१८॥
अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टास्थविष्ठाः स्थविरोध्रुवः ॥१९
अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥२०॥
ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥२१॥
ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी बिक्रमः क्रमः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥२२॥
सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः ।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥२३॥
अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥२४॥
वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः ।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृति ॥२५॥
रुद्रो बहुशिरा बभ्रुः विश्वयोनिः शुचिश्रवा ।
अमृतः शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपा ॥२६॥
सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित्कविः ॥२७॥
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥२८॥
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥२९॥
उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः ।
अतीन्द्रःसंग्रहःसर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥३०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥३१॥
महाबुद्धिर्महावीर्योमहाशक्तिर्महाद्युतिः।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृत ॥३२॥
महेष्वासो महीभर्त्ता श्रीनिवासः सतां गतिः।
अनिरुद्धः सुरानन्दोगोविन्दोगोविदां पतिः ॥३३॥
मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥३४॥
अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धातासंधिमान् स्थिरः।
अजोदुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥३५॥
गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः।
निमिषोऽनिमिषःस्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥३६॥
अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्न्यायी नेता समीरणः।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मासहस्राक्षः सहस्रपात् ॥३७॥
आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः।
अहः संवर्तको विह्नरनिलो धरणीधरः ॥३८॥
सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वसृड्विश्वभुग्विभुः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥३९॥
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः॥४०
वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः।
वर्धनो बर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥४१॥
सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥४२॥
ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥४३
अमृतांशूद्भवो भानुः शशविन्दुः सुरेश्वरः।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥४४॥
भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥४५
युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥४६॥
इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्ट शिखण्डीनहुषोवृषः।
क्रोधहा क्रोधकृत् कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥४७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपां निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥४८॥
स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥४९॥
अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥५०॥
पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत् ।
महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥५१॥
अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान्समितिञ्जयः ॥५२॥
विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥५३॥
उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥५४॥
व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥५५॥
रामो विरामो विराजो मार्गो नेयो नयोऽनयः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥५६॥
वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्राणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥५७॥
ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥५८॥
विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥५९॥
अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥६०॥
यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥६१॥
सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥६२॥
स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥६३॥
धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्राँशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥६४॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥६५॥
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ।६६॥
सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसोत्तमः ।
विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्वतां पतिः॥
जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमिताविक्रमः ।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥
अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥
महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत् ॥७०॥
महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकङ्गदी ।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥७१॥
वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णोदृढः संकर्षणोऽच्युतः ।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥७२॥
भगवान्भगहानंदी वनमाली हलायुधः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥७३

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।
दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥७४॥

त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक् ।
संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठाशान्तिः परायणम् ॥

शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥७६॥

अनिवर्ती निवृतात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः ॥

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ॥

स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ।
विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतः स्थिरः ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥७६॥

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ।८१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥
कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनंजयः ॥८३॥
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्रह्मणप्रियः ॥८४॥
महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥८५॥
स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥८६॥
मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥८७॥
सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥८८॥
भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ॥८९॥
विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥६०॥
एको नैकः सर्वः कः किंः यत्तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबंधुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥६१॥
सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चंदनाङ्गदी ।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥६२॥
अमानीमानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् ।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥६३॥
तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः ॥६४॥
चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥६५॥
समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥६६॥
शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतंतुस्तंतुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥६७॥
उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः शृङ्गी जयंतः सर्वविज्जयी ।६८।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥९९॥
कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।
अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥१००॥
सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ।१०१।
सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥१०२॥
अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ।१०३
भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥१०४॥
धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः ।
अपराजितः सर्वसहो नियन्ता नियमो यमः ।१०५
सत्त्ववान्सात्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्धनः ।१०६
विहायसगतिर्ज्योति सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रविर्विरोचनः सूर्यः सरिता रविलोचनः ।१०७
अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥
सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः ।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति
स्वास्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः ॥१०६
अरौद्रः कुण्डलो चक्री विक्रम्यूर्जितशासन ः ।
शब्दातिगः शव्दसहः शिशिरः शर्बरीकर ः ॥
अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥१११॥
उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्पप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनं पर्यवस्थितः ।११२
अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरश्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥
अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः ।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः । ११४
आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणद प्रणवः पणः ॥
प्रमाणं प्राणिनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः ।
तत्वंतत्त्वविदेकात्माजन्ममृत्युजरातिग ॥११६
भूर्भुवः स्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामह ः ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥११७॥
यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥११८॥
आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ।११९
शंखभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथांगपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥१२०

। सर्वप्रहारणायुध ॐ नमः इति ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ।
नाम्नांसहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥१२१
य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात्किञ्चित्सोऽमुत्रेह च मानवः ॥
वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ।।१२३
धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाः ।।
भक्तिमान्यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत् ।।१२५।।
यशः प्राप्नोति विपुलं यातिप्राधान्यमेव च ।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् १२६
न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः ।।१२७।।
रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ।।१२८।।
दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ।।१२९
वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ।।१३०।।
न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नाप्युपजायते ।।१३१।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
युज्येतात्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥१३३॥
द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रं खं दिशोभूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥१३४॥
ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥१३५॥
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ॥१३६॥
सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्प्यते ।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥१३७॥
ऋषयः पितरो देवो महाभूतानि धातवः ।
जङ्गमाजंगमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥१३८॥
योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्याः शिल्पादि कर्म च।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रींल्लोकान्व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः ॥

इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥ १४१

विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभुमव्ययम् ।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ।

ॐ तत्सदिति श्री महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां
वैयासिक्यामानुशासनिके पर्वणि भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे
श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

———

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ सुदर्शन कवचम् ॥

अस्य श्री सुदर्शनकवचमहामन्त्रस्य भगवानन्तर्यामी नारायण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, श्री सुदर्शनरूपी श्रीमन्नारायणो देवता रं बीजम् हुं शक्तिः फट्कीलकम्, श्रीसुदर्शनप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। "शंखं चक्रं गदा पद्मं मुसलं खड्गमेव च। धेनुश्च यमपाशश्च मुद्रा ह्येताः प्रकीर्तिताः। ॥" पाञ्चजन्याय शंखाधिपतये नमः, सुदर्शनाय हेतिराजाय नमः कौमोदक्यै गदाधिपतये नमः, पं पद्माय नमः, मुं मुसलाय नमः, नं नन्दकाय खड्गाधिपतये नमः, सुं सुरभ्यै नमः, यं यमपाशाय नमः। शंखं शार्ङ्गं सखेटं हलपरशुगदाकुन्तपाशान्द-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यानम् त्वन्यैर्वा मैश्च चक्रेष्वसिमुसललसद्वज्र
शूलांकुशाग्नीन् । ज्वालाकेशं किरीटं ज्वलद्-
नलनिभं बह्निमुग्रस्थपीठम् प्रत्यालीढं त्रिनेत्रं
रिपुगणदमनम्भावये चक्रराजम् ॥

मस्तकं मे सहस्रारः भालं पातु सुदर्शनः ।
भ्रुवौ मे चक्रराट् पातुनेत्रेद्वे ऽर्कैन्दुलोचनः ॥१॥
कर्णौ वेदैः स्तुतः पातु पातु घ्राणं विभीषणः ।
महादीप्तः कपोलौ मे ओष्ठं रुद्रवरप्रदः ॥२॥
दन्तान्पातु जगद्वन्द्यो रसनां मम सर्वदा ।
सर्वविद्यार्णवः पातु गिरं वागीश्वरो मम ॥३॥
वीरसिंहो मुखं पातु चिबुकं भक्तवत्सलः ।
सर्वदा पातु मे कण्ठं मेघगम्भीरनिस्स्वनः ॥४॥
मम स्कन्धयुगं पातु धराभारापहारकः ।
वाणासुरभुजारण्यदावाग्निः पातु मे भुजौ ॥५॥
कालनेमिशिरश्छेता पातु मे कूर्परद्वयम ।
करौ दिव्यायुधः पातु नखान्वज्रनखोपमः ॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुक्षौ पातु महाशूरः स्तनौ शत्रुनिषूदनः
पातु मे हृदयं भक्तजनानन्दश्च सर्वदा ॥७॥
सर्वशास्त्रार्थसद्भूतिहेतुः पातूदरं मम।
वक्षः पातु महाधारो दिवि दानवमर्दनः ॥८॥
पार्श्वौ मे पातु दीनार्तशरणागतवत्सलः।
सर्वदा पृष्ठदेशं मे देवानामभयप्रदः ॥९॥
नाभिषट्कोणधामा मे पातु घंटारवः कटिम्।
आदिमूलः पुमान्पातु गुह्यदेशन्निरन्तरम् ॥१०॥
ऊरु पातु महाशूरो जानुनी भीमविक्रमः।
जंघे पातु महावेगो गुल्फे पातु महाबलः ॥११॥
पादौ पातु सदा श्रीदो ब्रह्माद्यैरभिवन्दितः।
पातु पादतलद्वन्द्वं विश्वभारो निरन्तरम् ॥१२॥
सुदर्शननृसिंहो मे शरीरं पातु सर्वदा।
मम सर्वाङ्गरोमाणि ज्वाला केशास्स रक्षतु ॥१३॥
अन्तर्बहिश्च मे पातु विश्वात्मा विश्वतोमुखः।
रक्षाहीनञ्च यत्स्थानं प्रचण्डस्त्रत रक्षतु ॥१४॥
सर्वतो दिक्षु मे पातु ज्ववालाशतपरिवृतः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रिनेत्रिः पातुमत्प्राणान् भ्रातृन्पात्वनसुद्युतिः॥१५
भार्यां लक्ष्मीसखः पातु पुत्रान्पातु सुदर्शनः।
श्रीकरो मे श्रियः पातु बन्धून्पातु बलाधिकः॥१६
गोपांश्चैव पशून्पातु सहस्रारधरः सदा।
क्षेत्रं विश्वम्भरः पातु मित्रं पात्वघनाशनः॥१७॥
दिवारात्रौ च मां पातु अहिर्बुध्न्यवरप्रदः।
षोडशोत्तुङ्गबाहुस्तु पातु मे राजसुखम्॥१८॥
वरिविद्वेषसङ्गे तु संग्रामे शत्रुसूदनः।
अवान्तरा अबाधाश्चत्रासयेत्सार्वकालिकम॥१९॥
आधिव्याधिमहाव्याधि-मध्यतोपद्रवेऽपिच।
अपमृत्युमहामृत्यू नाशयेच्चक्रनायकः ॥२०॥
परप्रयुक्तमन्त्रांश्च यन्त्रतन्त्रविभाञ्जनः।
सुदर्शनोऽयमस्माकं दुर्दशादुःखनाशनः॥२१॥
सर्वसम्पत्प्रदाता माँ चक्रराजो निरन्तम्।
जपं पातु जगद्वन्द्यो मानसामाक्षयप्रदः॥२२॥
प्रमादांश्चास्त्रधामासौ ज्ञानं रक्षतु सर्वदा।
अणिमादिमहैश्वर्य्यं पातुसाम्राज्यसिद्धिदः॥२३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तिर्यग्ज्वालाग्निरूपश्च नष्टराजज्यार्थदो मम ।
राज्यं पातु सहस्रारः पदातिं पातु वाच्युतः ॥२४॥
चतुरङ्गबलस्तोमं रक्ष त्वञ्चक्रभावन ।
ज्योतिर्मयश्चक्रराजः सर्वान्वरुणरक्षकः ॥२५॥
अखण्डमण्डितः पातु परचक्रापहारकः ।
त्रिविक्रमश्चक्रराजः पातु धैर्य्यं सदा मम ॥२६॥
नभो दशदिशव्याप्तिकीर्तिं पातु सुदर्शनः ।
आयुर्बलं धृतिं पातु लोकत्रयभयापहः ॥२७॥
सुधामंडलसंविष्टो मायापञ्च सुशीतलः ।
राजद्वारे सभामध्ये पातु मां चण्डविक्रमः ॥२८॥
पूर्वे सुदर्शनः पातु आग्नेये पातु चक्रराट् ।
याम्ये रथाङ्गकः पातु त्रिनेमिः पातुनैर्ऋते ॥२९॥
लोकत्रयप्रभारज्वालो रक्षतु पश्चिमे ।
षट्कोणःपातु वायव्ये ह्यस्रराजोत्तरां दिशम् ॥३०
ऐशान्यां चक्रराट् पातु मध्ये भूचक्रचक्रिणः ।
अनन्तादित्यसंकाशःक्षमान्तरिक्षौ च पातु मे॥३१
सर्वतो दिक्षु गे पातु ज्वाला-साहस्रसंवृतः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एवं सर्वत्र संरक्षा सर्वदा सर्वरूपवान् ॥३२॥
सकारः पृथिवी ज्ञेयो हकार उप उच्यते ।
स्त्राकारो वायुरुक्तश्च रकारोम्बर उच्चते ॥३३॥
हुंकारस्त्वग्निरित्याहुः फट्कारं सूर्यरूपकम् ।
स्वाहाकारं न्यसेन्मूर्ध्नि पीतरक्तसुवर्णकम् ॥३४॥
सकारं नासिकायान्तु हकार वदने न्यसेत् ।
स्त्राकरं हृदयेचैव सृष्टिसंहारकारणम् ॥३५॥
रकारं विन्यसेद्गुह्ये हुंकार जानुदेशक ।
फकारं गुल्फदेशेतु टकारं पादयोर्न्यसेत् ॥३६॥
सर्वाणि चैव वर्णाणि जप्यान्यंगुलिपर्वसु ।
क्षिप्रं सौदर्शनश्चक्रं ज्वालामालाति भीषणम् ॥३७॥
सर्वदैत्यप्रशमनं कुरु देववराच्युत ।
सुदर्शन महाज्वाल छिन्धि छिन्धि सुवेदनाम ॥३८॥
परयन्त्रञ्च तन्त्रञ्च छिन्धि मन्त्रौषधादिकम् ।
सुदर्शन महाचक्र गोविन्दस्य करायुध ॥३९॥
सूक्ष्माधारमहावेग छिन्धि छिन्धि सुभैरवम् ।
छिन्धि पातञ्च लूतञ्च छिन्धि घोरं महाद्विषम ॥४०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति सौदर्शनं दिव्यं कवचं सर्वकामदम् ।
सर्वबाधाप्रशमनं सर्वव्याधिविनाशकम् ॥४१॥
सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वमंगलदायकम् ।
त्रिसन्ध्यंविजयं नृणां सर्वदा विजयप्रदम् ॥४२॥
सर्वपापप्रशममं भोगमोक्षैकसाधनम् ।
प्रातरुत्थाय यो भक्त्या पठेदेतत्सदा नरः ॥४३॥
तस्य सर्वेषु कालेषु विघ्नः क्वापि न जायते ।
यक्षराक्षसवेताल-भैरवाश्च विनायकः ॥४४॥
शाकिनी डाकिनी ज्येष्ठानिद्रबालग्रहादयः ।
भूतप्रेतपिशाचाद्या अन्येदुष्टग्रहा अपि ॥४५॥
कवचस्यास्य जप्तारं दृष्टमात्रेण तेऽखिलाः ।
पलायन्ते यथा नागाःपक्षिराजस्य दर्शनात् ॥४६॥
अस्यायुतं पुरश्चर्य दशांशं तिलतर्पणम् ।
हवनं तर्पणञ्चैव तपणं गंधवारिणा ॥४७॥
पुष्पाञ्जलिर्दशांशं च मिष्टान्नं सघृतप्लुतम् ।
चतुर्विंशद्विजानभोज्य ततःकार्याणिसाधयेत् ।
विन्यस्याङ्गेष्विदन्धीरो युद्धार्थ योऽभिगच्छति ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रणे जित्वाखिलाञ्छत्रून्विजयी भवतिध्रुवम् ।
मंत्रिताम्बुत्रिवारं वा पिबेत्सप्तदिनावधि ।
व्यधायः प्रविनश्यन्ति सकलाः कुक्षिसम्भवाः ॥
मुखप्रक्षालने नेत्रनासिकारोगनाशनम् ।
भीतानामभिषेकञ्च महाभयनिवारणम् ॥५१॥
सप्ताभिमन्त्रितानेन तुलसीमूलमृत्तिका ।
लेपान्नश्यन्ति ते रोगाःसद्यःकुष्ठादयोऽखिलाः ।
ललाटे तिलकं स्त्रिणां मोहनं सर्ववश्यकृत् ।
परेषां मन्त्रयन्त्राणि तन्त्राण्यपि विनाशकृत् ।
व्याल-सर्पादि सर्वेषां विषापहरणं परम् ।
सौवर्णे राजते वापि भूर्जे ताम्रादिकेऽपिवा ॥५४॥
लिखित्वात्वर्चयेद्भक्त्या स श्रीमान्भवतिध्रुवम् ।
बहुना किमिहोक्तेन यद्यद्वाञ्छति यो नरः ॥५५॥
सकलं प्राप्नुयादस्य कवचस्य प्रसादतः ॥

इति श्रीविहगेन्द्रसंहितान्तर्गतं श्रीसुदर्शनकवचं समाप्तम् ।

——

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आलबन्दारस्तोत्रम्

स्वादयन्निह सर्वेषां त्रय्यन्तार्थं सुदुर्ग्रहम् ।
स्तोत्रयामास योगीन्द्रस्तं वन्दे यामुनाह्वयम ॥१॥
नमो नमो यामुनाय यामुनाय नमो नमः ।
नमो नमो यामुनाय यामुनाय नमो नमः ॥२॥
नमो यामुनापादाब्जरेणुभि पावितात्मने ।
विदिताखिलवेद्याय गुरवे विदितात्मने ॥३॥
नमोऽचिन्त्याद्भुताक्लिष्टज्ञानवैराग्यराशये ।
नाथाय मुनयेऽगाधभगवद्भक्तिसिन्धवे ॥४॥
तस्मै नमो मधुजिदङ्घ्रिसरोजतत्व—
ज्ञानानुरागमहिमातिशयान्तसीम्ने ।
नाथाय नाथमुनयेऽत्र परत्र चापि
नित्यं यदीयचरणौ शरणं मदीयम् ॥५॥
भूयो नमोऽपरिमिताच्युत भक्तितत्त्व—
ज्ञानामृताब्धिपरिवाहशुभैर्वचोभिः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लोकेऽवतीर्णपरमार्थसमग्रभक्ति—
योगाय नाथमुनये यमिनां वराय ॥६॥

तत्त्वेन यश्चदचिदीश्वरतत्स्वभाव—
भोगापवर्गतदुपायगतीरुदारः ।
सन्दर्शयन्निरमिमीत पुराणरत्नं
तस्मै नमो मुनिवराय पराशराय ॥७॥

माता पिता युवतयस्तनया विभूतिः
सर्वं यदेव नियमेन मदन्वयानाम् ।
आद्यस्य नः कुलपतेर्बकुलाभिरामं
श्रीमत्तदङ्घ्रियुगलं प्रणमामि मूर्ध्ना ॥८॥

यन्मूर्ध्नि मे श्रुतिशिरस्सु च भाति यस्मिन्
अस्मन्मनोरथपथः सकलः समेति ।
स्तोष्यामि नः कुलधनं कुलदैवतं तत्
पादारविन्दमरविन्दविलोचनस्य ॥९॥

तत्त्वेन यस्य महिमार्णवशीकराणुः
शक्यो न मातुमपि शर्वपितामहाद्यैः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्तुं तदीयमहिमस्तुतिमुद्यताय
महयं नमोस्तु कवये निरपत्रपाय ॥१०॥
यद्वा श्रमावधि यथामति वाप्यशक्तः
स्तौम्येवमेव खलु तेऽपि सदा स्तुवन्तः ।
वेदाश्चतुर्मुखमुखाश्च महार्णवान्तः
को मज्जतोरणुकुलाचलयोर्विशेषः ॥११॥
किं चैष शक्त्यतिशयेन न तेऽनुकंप्यः
स्तोतापि तु स्तुतिकृतेन परिश्रमेण ।
तत्र श्रमस्तु सुलभो मम मन्दबुद्धे-
रित्युधामोऽयमुचितो मम चाब्जनेत्र ॥१२॥
नावेक्षसे यदि ततो भुवनान्यमूनि
नालं प्रभो भवितुमेव कुतः प्रवृत्तिः ।
एवं निसर्गसुहृदि त्वयि सर्वजन्तोः
स्वाभिन्न चित्रमिदमाश्रितवत्सलत्वम् ॥१३
स्वमाविकानवधिकातिशयेशितृत्वं
नारायण त्वयि न मृष्यति वैदिकःकः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मा शिवः शतमखः परमस्वराडि—
त्येतेऽपि यस्य महिमार्णवविप्रुषस्ते ॥१४॥
कः श्रीः श्रियः परमसत्वसमाश्रयः कः
कः पुण्डरीकनयनः पुरुषोत्तमः कः।
कस्ययुतायुतशतैककलांशकांशे
विश्वं विचित्रचिदचित्प्रविभागवृत्तम्॥१५॥
वेदापहारगुरुपातकदैत्यपीड़ा—
द्यापद्विमोचनमहिष्ठफलप्रदानैः
कोऽन्यः प्रजापशुपती परिपाति कस्य
पादोदकेन स शिवः स्वशिरोधृतेन ॥१६॥
कस्योदरे हरविरञ्चिमुखः प्रपञ्चः
को रक्षतीममजनिष्ट च कस्य नाभेः।
क्रान्त्वा निगीर्य पुनरुद्गिरति त्वदन्यः
कः केन चैष परवानिति शक्यशंकः ॥१७॥
त्वां शीलरूपचरितैः परमप्रकृष्ट—
सत्वेन सात्विकतया प्रबलैश्च शास्त्रैः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रख्यातदैवपरमार्थविदां मतैश्च
नैवासुरप्रकृतयः प्रभवन्ति बोद्धुम् ॥१८॥
उल्लंघितत्रिविधसीमातिशायि-
संभावनं तव परिब्रढिमस्वभावम् ।
मायाबलेन भवतापि निगूह्यमानं
पश्यन्ति केचिदनिशं त्वदनन्यभावाः ॥१६
यदण्डमण्डान्तरगोचरं च यद्द-
दशोत्तराण्यावरणानि यानि च ।
गुणाः प्रधानं पुरुषः परं पदं
परात्परं ब्रह्म च ते विभूतयः ॥२०॥
वशी वदान्यो गुणवानृजुः शुचि-
र्मृदुर्दयालुर्मधुरः स्थिरः समः ।
कृती कृतज्ञस्त्वमसि स्वभावतः
समस्तकल्याणगुणामृतोदधिः ॥२१॥
उपर्युपर्यब्जभुवोऽपि पुरूषान्
प्रकल्प्य ते ये शतमित्यनुक्रमात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गिरस्तवदेकैकगुणावधीप्सया—
सदास्थिता नोद्यमतोऽतिशेरते ॥२२॥
त्वदाश्रितानां जगदुद्भवस्थिति—
प्रणाशसंसारविमोचनादयः ।
भवन्ति लीलाविधयश्च वैदिका—
स्त्वदीयगम्भीरमनोनुसारिणः ॥२३॥
नमो नमो वाङ्मनसातिभूमये
नमो नमो वाङ्मनसैकभूमये ।
नमो नमोऽनन्तमहाविभूतये
नमो नमोऽनन्तदयैकसिन्धवे ॥२४॥
न धर्मनिष्ठोऽस्मि न चात्मवेदी
न भक्तिमांस्त्वच्चरणारविन्दे ।
अकिंचनोऽनन्यगतिः शरण्यं
त्वत्पादमूलं शरणं प्रपद्ये ॥२५॥
न निन्दितं कर्म तदस्ति लोके
सहस्रशो यन्न मया व्यधायि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सोऽहं विपाकावसरे मुकुन्द
क्रन्दामि सम्प्रत्यगतिस्तवाग्रे ॥२६॥
निमज्जतोऽनन्तभवार्णवान्त—
श्चिराय मे कूलमिवासि लब्धः।
त्वयापि लब्धं भगवन्निदानी—
मनुत्तमं पात्रमिदं दयायाः ॥२७॥
अभूतपूर्वं मम भावि किं वा
सर्वं सहे मे सहजं हि दुःखम्।
किं ते त्वदग्रे शरणागतानां
पराभवो नाथ न तेऽनुरूपः ॥२८॥
निरासकस्यापि न तावदुत्सहे
महेश हातुं तव पादपंकजम्।
रुषा निरस्तोऽपि शिशुः स्तनन्धयो
न जातु मातुश्चरणौ जिहासति ॥२९॥
तवामृतस्यन्दिनि पादपंकजे
निवेशितात्मा कथमन्यदिच्छति।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थितेऽरविन्दे मकरन्दनिर्भरे
मधुव्रतो नेक्षुरकं हि वीक्षते ॥३०॥
त्वदंघ्रिमुद्दिश्य कदापि केनचिद्—
यथा तथा वापि सकृत्कृतोऽञ्जलि।
तदैव मुष्णात्यशुभान्यशेषतः
शुभानि पुष्णाति न जातु हीयते ॥३१॥
उदीर्णसंसारदवाशुशुक्षणिं
क्षणेन निर्वाप्य परां च निर्वृतिम्।
प्रयच्छति त्वच्चरणारुणाम्बुज—
द्वयानुरागामृतसिन्धुशीकरः ॥३२॥
विलासविक्रान्तपरावरालयं
नमस्यदार्तिक्षपणे कृतक्षणम्।
धनं मदीयं तव पादपङ्कजं
कदा नु साक्षात्करवाणि चक्षुषा ॥३३॥
कदा पुनः शंखरथाङ्गकल्पक—
ध्वजारविन्दांकुशवज्रलाञ्छनम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रिविक्रम त्वच्चरणाम्बुजद्वयं
मदीयमूर्द्धानमलं करिष्यति ॥३४॥

विराजमानोज्ज्वलपीतवाससं
स्मितातसीसूनसमामलच्छविम् ।
निमग्ननाभिं तनुमध्यमुल्लस–
द्विशालवक्षःस्थलशोभिलक्षणम् ॥३५॥

चकासतं ज्याकिणकर्कशैः शुभै–
श्चतुर्भिराजानुविलम्बिभिर्भुजैः ।
प्रियावतंसोत्पलकर्णभूषण–
श्लथालकाबन्धविमर्दशंसिभिः ॥३६॥

उदग्रपीनांसविलम्बिकुण्डला–
लकावलीबन्धुरकम्बुकंधरम् ।
मुखश्रिया न्यक्कृतपूर्णनिर्मला–
मृतांशुबिम्बाम्बुरुहोज्ज्वलश्रियम् ॥३७॥

प्रबुद्धमुग्धाम्बुजचारुलोचनं
सविभ्रमभ्रूलतमुज्ज्वलाधरम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुचिस्मितं कोमलगण्डमुन्नसं
ललाटपर्यन्तविलम्बितालकम् ॥३८॥

स्फुरत्किरीटाङ्गदहारकण्ठिका—
मणीन्द्रकाञ्चीगुणनूपुरादिभिः ।
रथाङ्गशङ्खासिगदाधनुर्वरै
र्लसत्तुलस्या वनमालयोज्ज्वलम् ॥३९॥

चकर्थ यस्या भवनं भुजान्तरं
तव प्रियं धाम यदीयजन्मभूः ।
जगत्समस्तं यदपाङ्गसंश्रयं
यदर्थमम्भोधिरमन्थ्यबन्धि च ॥४०॥

स्ववैश्वरूप्येण सदानुभूतया—
प्यपूर्ववद्विस्मयमादधानया ।
गुणेन रूपेण विलासचेष्टितैः
सदा तवैवोचितया तव श्रिया ॥४१॥

तया सहासीमनन्तभोगिनि
प्रकृष्टविज्ञानबलैकधामनि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फणामणिव्रातमयूखमण्डल-
प्रकाशमानोदरदिव्यधामनि ॥४२॥

निवासशय्यासनपादुकांशुको-
पधानवर्षातपवारणादिभिः ।
शरीरभेदैस्तव शेषतां गतै-
र्यथोचितं शेष इतीर्यते जनैः ॥४३॥

दासः सखा वाहनमासनं ध्वजो
यस्ते वितानं व्यजनं त्रयीमयः ।
उपस्थितं तेन पुरो गरुत्मता
त्वदङ्घ्रिसम्मर्दकिणाङ्कशोभिना ॥४४॥

त्वदीयभुक्तोज्झितशेषभोजिना
त्वया विसृष्टात्मभरेण यद्यथा ।
प्रियेन सेनापतिना निवेदितम्
तथानुजानन्तमुदारवीक्षणैः ॥४५॥

हताखिलक्लेशमलैः स्वभावतः
सदानुकूल्यैकरसैस्तवोचितैः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गृहीततत्तत्परिचारसाधनै-
 निषेव्यमाणं सचिवैर्यथोचितम् ॥४६॥

अपूर्वनानारसभावनिर्भर-
 प्रबुद्धया मुग्धविदग्धलीलया ।

क्षणाणुवत्क्षिप्तपतादिकालया
 प्रहर्षयन्तं महिषीं महाभुजम् ॥४७॥

अचिन्त्यदिव्याद्भुतनित्ययौवन-
 स्वभावलावण्यमयामृदोधिम् ।

श्रियः श्रियं भक्तजनैकजीवितं
 समर्थमापत्सखमर्थिकल्पम् ॥४८॥

भवन्तमेवानुचरन्निरन्तरं
 प्रशान्तनिःशेषमनोरथान्तरः ।

कदाहमैकान्तिकनित्यकिङ्करः
 प्रहर्षयिष्यामि सनाथजीवितः ॥४९॥

धिगशुचिमविनीतं निर्दयं मामलज्जं
 परमपुरुष योऽहं योगिवर्याग्रगण्यैः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विधिशिवसनकाद्यैर्ध्यातुमत्यन्तदूरं
तव परिजन भावं कामये कामवृत्तः ॥५०॥

अपराधसहस्रभाजनं
पतितं भीमभवार्णवोदरे ।
अगतिं शरणागतं हरे
कृपया केवलमात्मसात्कुरु ॥५१॥

अविवेकघनान्धदिङ्मुखे
बहुधा सन्ततदुःखवर्षिणि ।
भगवन् भवदुर्दिने पथ-
स्स्खलितं मामवलोकयाच्युत ॥५२॥

न तृषा परमार्थमेव मे
शृणु विज्ञापनमेकमग्रतः ।
यदि मे न दयिष्यसे ततो
दयनीयस्तव नाथ दुर्लभः ॥५३॥

तदसं त्वदृते न नाथवान्-
मदृते त्वं दयनीयवान्न च ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विधिनिर्मितमेतदन्वयं
भगवन् पालय मा स्म जीहपः ॥५४॥

वपुरादिषु योऽपि कोऽपि वा
गुणतोऽसानि यथातथाविधः ।
तदयं तव पादपद्मयो-
रहमद्यैव मया समर्पितः ॥५५॥

मम नाथ यदस्ति योऽस्म्यहं
सकलं तद्धि तवैव माधव ।
नियतः स्वमिति प्रबुद्धधी-
रथवा किंनु समर्पयामि ते ॥५६॥

अवबोधितवानिमां यथा
मयि नित्यां भवदीयतां स्वयम् ।
कृपयैवमनन्यभोग्यतां
भगवन् भक्तिमपि प्रयच्छमे ॥५७॥

तव दास्यसुकैकसंगिनां
भवनेष्वस्त्वपि कीटजन्म मे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इतरावमर्थेषु मा स्म भू—
दपि मे जन्म चतुर्मुखात्मना ॥५८॥
सकृत्वदाकारविलोकनाशया
तृणीकृतानुत्तमभुक्तिमुक्तिभिः ।
महात्मभिर्मामवलोक्यतां नय
क्षणेऽपि ते यद्विरहोऽविदुःसहः ॥५९॥
न देहं न प्राणान्न च सुखमशेषाभिलषितं
न चात्मानं नान्यत्किमपि तव शेषत्वविभवात् ।
बहिर्भूतं नाथ क्षणमपि सहे या तु शतधा
विनाशं तत्सत्यं मधुमथन विज्ञापनमिदम् ॥६०॥
दुरन्तस्यानादेरपरिहरणीयस्य महतो
विहीनाचारोऽहं नृपशुरशुभस्यास्पदमपि ।
दयासिन्धो बन्धो निरवधिकवात्सल्यजलधे
तव स्मरं स्मरं गुणगणमितिच्छामिगतभीः ॥६१॥
अनिच्छन्नप्येवं यदि पुनरितीच्छन्निव रज-
स्तमश्छन्नच्छद्मस्तुतिवचनभङ्गीमरचयम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तथापीत्थं रूपं वचनमवलम्ब्यापि कृपया
त्वमेवैवंभूतं धरणिधर मे शिक्षय मनः ॥६२॥

पिता त्वं माता त्वं दयिततनयस्त्वं प्रियसुहृ-
त्त्वमेव त्वं मित्रं गुरुरपि गतिश्चापि जगताम् ।
त्वदीयस्त्वद्भृत्यस्तव परिजनस्त्वद्गतिरहं
प्रपन्नश्चैवं सत्यहमपि तवैवास्मि हि भरः ॥६३॥

जनित्वाहं वंशे महति जगति ख्यातयशसां
शुचीनां युक्तानां गुणपुरुषतत्त्वस्थितिविदाम् ।
निसर्गादेव त्वच्चरणकमलकान्तमनसा-
मधोऽधः पापात्माशरणद निमज्जामि तमसि ।६४।

अमर्यादः क्षुद्रश्चलमतिरसूयाप्रसवभूः
कृतघ्नो दुर्मानी स्मरपरवशो वञ्चनपरः ।
नृशंसः पापिष्ठः कथमहमितो दुःखजलधे
रपारादुत्तीर्णस्तव परिचरेयं चरणयोः ॥६५॥

रघुवर यदभूस्त्वं तादृशो वायसस्य
प्रणत इति दयालुर्यश्च चाद्यस्य कृष्णः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रतिभवमपराद्धुर्मुग्धसायुज्यदोभू-
र्वद किमपदमागस्तस्य तेऽस्ति क्षमायाः ॥६६॥

ननु प्रपन्नः सकृदेव नाथ
तवाहमस्मीति च याचमानः ।
तवानुकम्प्यः स्मरतः प्रतिज्ञां
मदेकवर्ज्यं किमिदं व्रतं ते ॥६७॥

अकृत्रिमत्वच्चरणारविन्द-
प्रेमप्रकर्षावधिमात्मवन्तम् ।
पितामहं नाथमुनिं विलोक्य
प्रसीद मद्वृत्तमचिन्तयित्वा ॥६८॥

यत्पदाम्भोरुहध्यानविध्वस्ताशेषकल्मषः ।
वस्तुतामुपयातोऽहं यामुनेयं नमामि तम् ॥६९॥

—-—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वरदवल्लभास्तोत्रम्

कान्तस्ते पुरुषोत्तमः, फणिपतिः शय्यासनं वाहनं वेदात्मा विहगेश्वरो, यवनिका माया जगन्मोहिनी। ब्रह्मेशादिसुरव्रजः सदायितस्त्वद्दासदासीगणः श्रीरित्येव च नाम ते भगवति ब्रूमः कथं त्वां वयम् ॥१॥

यस्यास्ते महिमानमात्मन इव त्वद्वल्लभोऽपि प्रभुर्नालं मातुमियत्तया निरवधिं नित्यानुकूलं स्वतः। तां त्वां दास इति प्रपन्न इति च स्तोष्याम्यहं निर्भयो लोकैकेश्वरि लोकनाथदयिते दान्ते दयां ते विदन् ॥२॥

ईषत्त्वत्करुणानिरीक्षणसुधासन्धुक्षणाद्रक्ष्यते नष्टं प्राक्तदलाभतस्त्रिभुवनं संप्रत्यनन्तोदयम् श्रेयो नह्यरविन्दलोचनमनःकान्ताप्रसादादृते संसृत्यक्षरवैष्णवाध्वसु नृणां सम्भाव्यते कर्हिचित् ॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शान्तानन्तमहाविभूतिपरमं यद्ब्रह्मरूपं हरेर्मूर्तं ब्रह्म ततोऽपि तत्प्रियतरं रूपं यदत्यद्भुतम्। यन्यन्यानि यथासुखं विहरतो रूपाणि सर्वाणि तान्याहुः स्वैरनुरूपरूपविभवैर्गाढोपगूढानि ते ॥४॥

आकारत्रयसंपन्नामरविन्दनिवासिनम्।
अशेषजगदीशित्रीं वन्दे वरदवल्लभाम् ॥५॥

वेंकटेशसुप्रभातम्

कौसल्या सुप्रजाराम पूर्वा संध्या प्रवर्त्तते।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम् ॥१॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रिलोक्यं मङ्गलं कुरु ॥२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मातः समस्तजगतां मधुकैटभारेः
वक्षोविहारिणि मनोहरदिव्यमूर्ते ।
श्रीस्वामिनि श्रितजनप्रियदानशीले
श्रीवेंकटेशदयिते तव सुप्रभातम् ॥३॥

तव सुप्रभातमरविन्दलोचने
भवतु प्रसन्नमुखचन्द्रमण्डले ।
विधिशङ्करेन्द्रवनिताभिरर्चिते
वृषशैलनाथदयिते दयानिधे ॥४॥

अत्र्यादिसप्तऋषयस्समुपास्य सन्ध्याम्
आकाशसिन्धुकमलानि मनोहराणि ।
आदाय पादयुगमर्चयितुं प्रपन्नाः
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥५॥

पञ्चाननाब्जभवषण्मुखवासवाद्याः
त्रैविक्रमादिचरितं विबुधाः स्तुवन्ति ।
भाषापतिः पठति वासरशुद्धिमारात्
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ईषत्प्रफुल्लसरसीरुहनारिकेल-
पूगद्रुमादिसुमनोहरपालिकानाम् ।
आवाति मन्दमनिलः सह दिव्यगन्धैः
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥७॥

उन्मील्य नेत्रयुगमुत्तमपञ्जरस्थाः
पात्रावशिष्टकदलीफलपायसानि ।
भुक्त्वा सलीलमथ केलिशुकाः पठन्ति
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥८॥

तन्त्रीप्रकर्षमधुरस्वनया विपञ्च्या
गायत्यनन्तचरितं तव नारदोऽपि ।
भाषासमग्रमसकृत्करचाररम्यं
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥९॥

भृङ्गावली च मकरन्दरसानुविद्ध-
झङ्कारगीतनिनदैः सह सेवनाय ।
निर्यात्युपान्तसरसीकमलोदरेभ्यः
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

योषागणेन वरदध्नि विमथ्यमाने
घोषालयेषु दधिमन्थनतीव्रघोषाः ।
रोषात्कलिं विदधते ककुभश्च कुम्भाः
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥११॥
पद्मेशमित्रशतपत्रगतालिवर्गाः
हर्तुं श्रियं कुवलयस्य निजाङ्गलक्ष्म्या ।
भेरीनिनादमिव बिभ्रति तीव्रघोषं
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥१२॥
श्रीमन्नभीष्टवरदाखिललोकबन्धो
श्रीश्रीनिवास जगदेकदयैकसिन्धो ।
श्रीदेवतागृहभुजान्तरदिव्यमूर्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१३॥
श्रीशेषशैलगरुडाचलवेङ्कटाद्रि
नारायणाद्रिवृषभाद्रिवृषाद्रिमुख्याम् ।
आख्यां त्वदीयवसतेरनिशं वदन्ति
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीस्वामिपुष्करिणिकाप्लवनिर्मलाङ्गाः
श्रेयोऽर्थिनो हरविरिञ्चिसनन्दनाद्याः ।
द्वारे वसन्ति वरवेत्रहतोत्तमाङ्गाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१५॥

सेवापराः शिवसुरेशकृशानुधर्म–
रक्षोम्बुनाथपवमानधनाधिनाथाः ।
बद्धाञ्जलिप्रविलसन्निजशीर्षदेशाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१५॥

धाटीषु ते विहगराजमृगाधिराज-
नागाधिराजगजराजहयाधिराजाः ।
स्वस्वाधिकारमहिमाधिकमर्थयन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१७॥

सूर्येन्दुभौमबुधवाक्पतिकाव्यसौरि-
स्वर्भानुकेतुदिविषत्परिषत्प्रधानाः ।
त्वद्दासदासचरमावधिदासदासाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वत्पादधूलिभरितस्फुरितोत्तमाङ्गाः
स्वर्गापवर्गनिरपेक्षनिजान्तरङ्गाः ।
कल्पागमाकलनयाकुलतां लभन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥१६॥

त्वद्गोपुराग्रशिखराणि निरीक्षमाणाः
स्वर्गापवर्गपदवीं परमां श्रयन्तः ।
मर्त्या मनुष्यभुवने मतिमाश्रयन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२०॥

श्रीभूमिनायक दयादिगुणामृताब्धे
देवाधिदेव जगदेकशरण्यमूर्त्ते ।
श्रीमन्ननन्तगरुडादिभिरर्चिताङ्घ्रे
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ।२१॥

श्रीपद्मनाभ पुरुषोत्तम वासुदेव
वैकुण्ठ माधव जनार्दन चक्रपाणे ।
श्रीवत्सचिह्न शरणागतपारिजात
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कन्दर्पहर सुन्दरदिव्यमूर्ते
कान्ताकुचाम्बुरुहकुड्मललोलदृष्टे ।
कल्याणनिर्मलगुणाकरदिव्यकीर्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२३॥

मीनाकृते कमठ कोल नृसिंह वर्णिन्
स्वामिन्परश्वधतपोधन रामचन्द्र ।
शेषांश राम यदुनन्दन कल्किरूप
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२४॥

एलालवङ्गघनसारसुगन्धतीर्थं
दिव्यं वियत्सरसि हेमघटेषु पूर्णम् ।
धृत्वाद्य वैदिकशिखामणयः प्रहृष्टा
तिष्ठन्ति वेङ्कटपते तव सुप्रभातम् ॥२५॥

भास्वानुदेति विकचानि सरोरुहाणि
सम्पूरयन्ति निनदैः ककुभो विहङ्गाः ।
श्रीवैष्णवाः सततमर्थितमङ्गलास्ते
धामाश्रयन्तितव वेङ्कट सुप्रभातम् ॥२६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मादयः शिवसुरेशमहर्षयस्ते
सन्तस्सनन्दनमुखास्त्वथ योगिवर्गाः ।
धामान्तिके तव हि मंगलवस्तुहस्ताः
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रफातम् ॥२७॥

लक्ष्मीनिवास निरवद्यदयैकसिन्धो
संसारसागरसमुत्तरणेकसेतो ।
वेदांतवेद्य निजवैभवभव्ययोग्य
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२८॥

इत्थं वृगाचलपतेरिह सुप्रभातं
ये मानवाः प्रतिदिनं पठितुं प्रवृत्ताः ।
तेषां प्रभात समये स्मृतिरंगभाजां
प्रज्ञां परार्थसुलभां परमांगषूते ॥२९॥

इति श्री वेङ्कटेश सुप्रभातं सम्पूर्णम्

—·—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कनकधाराश्रीलक्ष्मीस्तवराजः

श्रीमान्वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे संनिधत्तां सदा हृदि॥

ईशानां जगतोऽस्य वेङ्कटपतेर्विष्णोः परां
प्रेयसीं तद्वक्षःस्थलनित्यवासरसिकां तत्क्षान्ति-
संवर्द्धिनीम्। पद्मालंकृतपाणिपल्लवयुगां पद्मा-
सनस्थां श्रियं वात्सल्यादि गुणोज्ज्वलां भगवतीं
वन्दे जगन्मातरम् ॥१॥

मानातीतप्रथितविभवां मंगलं मंगलानां
वक्षःपीठीं मधुविजयिनो भूषयन्तीं स्वकांत्या।
प्रत्यक्षानुश्रविकमहिमप्रार्थिनीनां प्रजानां
श्रेयोमूर्तिं श्रियमशरणस्त्वां शरण्यां प्रपद्ये ॥२॥

आविर्भावः कलशजलधावध्वरे वापि यस्याः
स्थानं यस्याः सरसिजवनं विष्णुवक्षःस्थलं वा।
भूमा यस्या भुवनमखिलं देवि दिव्यं पदं वा
स्तोकप्रज्ञैरनवधिगुणा स्तूयसे सा कथं त्वम् ॥३॥

स्तोतव्यत्वं दिशति भवती देहिभिः स्तूयमाना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तामेव त्वामनितरगतिः स्तोतुमाशंसमानः ।
सिद्धारम्भः सकलभुवनश्लाघनीयो भवेयं
सेवापेक्षा तव चरणयोः श्रेयसे कस्य न स्यात् ॥४

यत्संकल्पाद्भवति कमले यत्र देहिन्यमीषां
जन्मस्थेमप्रलयरचना जङ्गमाजङ्गमानाम् ।
तत्कल्याणं किमपि यमिनामेकलक्ष्यं समाधौ
पूर्णं तेजः स्फुरति भवतीपादलाक्षारसाङ्कम् ॥५॥

निष्प्रत्यूहप्रणयघटितं देवि नित्यानपायं
विष्णुस्त्वं चेत्यनवधिगुणं द्वन्द्वमन्योन्यलक्ष्यम् ।
शेषश्चित्तं विमलमसां मौलयश्च श्रुतीनां
संपद्यन्ते विहरणविधौ यस्य शय्याविशेषा ॥६

उद्देश्यत्वं जननि भजतोरुज्झितोपाधिगन्धं
प्रत्यग्रूपे हविषि युवयोरेकशेषित्वयोगात् ।
पद्मे पत्युस्तव च निगमैर्नित्यमन्विष्यमाणो
नावच्छेदं भजति महिमा नर्तयन्मानसं नः ॥७॥

पश्यन्तीषु श्रुतिषु परितः सूरिबृन्देन सार्धं
मध्येकृत्य त्रिगुणफलकं निर्मितस्थानभेदम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विश्वाधीशप्रणयिनि सदा विभ्रमद्य तवृत्तौ
ब्रह्मेशाद्या दधति युवयोरक्षशार प्रचारम् ॥८॥
अस्येशाना त्वमसि जगतः संश्रयन्ती मुकुन्दं
लक्ष्मीः पद्मा जलधितनया विष्णुपत्नीन्दिरेति ।
यन्नामानि श्रुतिपरिपणान्येवमावर्तयन्तो
नावर्तन्तते दुरितपवनप्रेरिते जन्मचक्रे ॥९॥
त्वामेवाहुः कतिचिदपरे त्वत्प्रियं लोकनाथं
किं तैरन्तःकलहमलिनैः किंचिदुत्तीर्य मग्नैः ।
त्वत्संप्रीत्यै विहरति हरौ सम्मुखीनां श्रुतीनां
भावारूढौ भगवति युवां दम्पती दैवतं नः ॥१०
आपन्नार्तिप्रशमनविधौ बद्धदीक्षस्य विष्णो-
राचख्युस्त्वां प्रियसहचरीमैकमत्योपपन्नाम् ।
प्रादुर्भावैरपि समतनुः प्राध्वमर्वीयसे त्वं
दूरोत्क्षिप्तैरिव मधुरता दुग्धराशेस्तरंगैः ॥११
धत्ते शोभां हरिमरकते तावकी मूर्तिराद्या
तन्वी तुंगस्तनभरनता तप्तजाम्बूनदाभा ।
यस्यां गच्छन्त्युदयविलयैर्नित्यमानंदसिंधा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विच्छावेगोल्लसितलहरी विभ्रमं व्यक्तयस्ते ॥१२॥
आसंसारं वितयमखिलं वाङ्मयं यद्विभूति-
र्यद्भ्रूभंगात्कुसुमधनुषः किंकरो मेरुधन्वा ।
यस्यां नित्यं नयनशतकैरेकलक्ष्यो महेन्द्रः
पद्मे तासां परिणतिरसौ भावलेशैस्त्वदीयैः ॥१३॥
अग्रे भर्तुः सरसिजमये भद्रपीठे निषण्णा-
मम्भोराशेरधिगतसुधासंप्लवादुत्थितां त्वाम् ।
पुष्पासारस्थगितभुवनैः पुष्कलावर्तकाद्यैः
रुक्तरम्भाः कनककलशैरभ्यषिञ्चन् गजेन्द्रा १४
आलोक्य त्वामतृतसहजे विष्णुवक्षःस्थलस्थां
शापाक्रान्ताः शरणमगमन्सावरोधाः सुरेन्द्राः ।
लब्ध्वा भूयस्त्रिभुवनमिदं लक्षितं त्वत्कटाक्षैः
सर्वाकारस्थिरसमुदयां सम्पदं निर्विशन्ति ॥१५॥
आर्तत्राणव्रतिभिरमितासारनीलाम्बुवाहैरम्भोजा-
नामुषसि मिषतामन्तरंगैरपांगैः । यस्यां यस्यां
दिशि विहरते देवि दृष्टिस्त्वदीया तस्यां
तस्यामहमहमिकां तन्वते सम्पदोघाः ॥१६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

योगारम्भत्वरितमनसो युष्मदैकान्त्ययुक्तं धर्मं
प्राप्तुं प्रथममिह ये धारयन्ते धनायाम् ।
तेषां भूमेर्धनपतिगृहादम्बरादम्बुधेर्वा धारा
निर्यान्त्यधिकमधिकंवाच्छितानां वसूनाम् ॥२७॥
श्रेयस्कामाः कमलनिलये चित्रमाम्नायवाचां
चूडापीडं तव पदयुगं चेतसा धारयन्तः ।
छत्रच्छायासुभगशिरसश्चामरस्मेरपार्श्वाः श्लाघा-
शब्दश्रवणमुदिताः स्रग्विणः संचरन्ति ॥१८॥
ऊरीकर्तुं कुशलमखिलं जेतुमादीनरातीन्
दूरीकर्तुं दुरितनिवहं त्यक्तुमाद्यामविद्याम् ।
अम्ब स्तम्बावधिकजननग्रामसीमांतरेखा-
मालम्बन्ते विमलमनसो विष्णुकान्ते दयां ते ॥१६
जाताकाङ्क्षा जननि युवयोरेकसेवाधिकारे
मायालीढं विभवमखिलं मन्यमानास्तृणाय ।
प्रीत्यै विष्णोस्तव च कृतिनः प्रीतिमन्तो भजन्ते
वेलाभङ्गप्रशमनफलं वैदिकं धर्मसेतुम् ॥२०॥
सेवे देवि त्रिदशमहिलामौलिमालार्चितं ते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सिद्धिक्षेत्रं शमितविपदां सम्पदां पादपद्मम् ।
यस्मिन्नोपन्नमितशिरसो यापयित्वा शरीरं
वर्तिष्यन्ते वितमसि पदे वासुदेवस्य धन्याः ॥२१॥
सानुप्रासप्रकटितदयैः सान्द्रवात्सल्यदिग्धै-
रम्ब स्निग्धैरमृतलहरीलब्धसब्रह्मचर्यैः ।
धर्मे तापत्रयविरचिते गाढतप्तं क्षणं मामा-
किञ्चन्यग्लपितमनघैरार्द्रयेथाः कटाक्षैः ॥२२॥
सम्पद्यन्ते भवभयतमीभानवस्त्वत्प्रसादाद्भावाः
सर्वे भगवति हरौ भक्तिमुद्वेलयन्तः । याचे
किं त्वामहमिह यतः शीतलोदारशीला भूयो
भूयो दिशसि महतां मङ्गलानां प्रबन्धान् ॥२३॥
माता देवि त्वमसि भगवान्वासुदेवः पिता मे
जातः सोऽहं जननि युवयोरेकलक्ष्यं दयायाः ।
दत्तो युष्मत्परिजनतया देशिकैरप्यतस्त्वं किं ते
भूमः प्रियमिति किल स्मेरवक्त्रा विभासि ॥२४॥
कल्याणानामविकलनिधिः कापि कारुण्यसीमा
नित्यामादा निगमवचसां मौलिमन्दारमन्दम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सम्पद्दिव्या मधुविजयिनः संनिधत्तां सदा मे
सैषा देवी सकलभुवनप्रार्थना कामधेनुः ॥२५॥

उपचितगुरुभक्तेरुत्थितं वेङ्कटेशात्
कलिकलुषनिवृत्त्यै कल्पमानं प्रजानाम् ।
सरसिजनिलयायः स्तोत्रमेतत्पठन्तः
सकलकुशलसीमाः सार्वभौमा भवन्ति ॥२६॥

कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने ।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः ।

इति श्रीकवितार्किकसिंहस्य सर्वतन्त्रस्वतन्त्रस्य श्रीमद्वेङ्कटनाथस्य वेदान्ताचार्यस्य कृतिषु कनकधाराश्रीस्तवराजः सम्पूर्णः

सुमंगलस्तोत्रम्

सुमङ्गलं मङ्गलमीश्वराय ते
सुमङ्गलं मङ्गलमच्युताय ते ।
सुमङ्गलं मंगलमन्तरात्मने
सुमंगलं मंगलमब्जनाभ ते ॥१॥

सुमंगलं श्रीनिलयोरुवक्षसे
सुमंगलं पद्मभवादिसेविते ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुमङ्गलं पद्मजगन्निवासिने
सुमङ्गलं चाश्रितमुक्तिदायिने ॥२॥
चाणूरदर्पघ्नसुवाहदण्डयोः
सुमंगलं मंगलमादिपूरुष ।
बालार्ककोटिप्रतिमाय तेविभो
चक्राय दैत्येन्द्रविनाशहेतवे ॥३॥
शंखाय कोटीन्दुसमानतेजसे
शार्ङ्गाय रत्नोज्ज्वलदिव्यरूपिणे ।
खड्गाय विद्यामयविग्रहाय ते
सुमंगलं मंगलमस्तु ते विभो ॥४॥
तदावयोस्तत्वविशिष्टशेषिणे
शेषित्वसम्बन्धनिबोधनाय ते ।
यन्मंगलानां च सुमंगलाय ते
पुनः पुनर्मंगलमस्तु सन्ततम् ॥५॥

इति श्रीविष्णुचित्तस्वामिकृतं सुमङ्गलस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पञ्चघाटी

श्रीमान्वेंकटनाथार्यः कवितार्किककेसरी ।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि ॥

पाषण्डद्रुमषण्डदावदहनश्चर्वाकशैलाशनि-
वौद्धध्वान्तनिरासवासरपतिर्जैनेभकंठीरवः ।
मायावादिभुजंगभंग गरुडस्त्रैविद्यचूडामणिः
श्रीरंगेशजयध्वजो विजयते रामानुजोऽयं मुनिः॥

पाषण्डषंडगिरिखण्डनवज्रदण्डाः
प्रच्छन्नबौद्धमकरालयमन्थदण्डाः ।
वेदान्तसारसुखदर्शनदीपदंडाः
रामानुजस्य विलसन्ति मुनेस्त्रिदण्डाः ॥२॥

चारित्रोद्धारदण्डं चतुरनयपथालङ्क्रिया-
केतुदण्डं सद्विद्यादीपदंडं सकलकलिकथा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संहृतेःकालदण्डम् । त्रय्यन्तालम्बदंडं त्रिभुवन-
विजयच्छत्रसौवर्णदंडं धत्ते रामानुजार्यः प्रति-
कथकशिरोवज्रदंडं त्रिदंडम् ॥ ३

त्रय्या मांगल्यसूत्रं त्रियुगपदयुगारोहणा-
लम्बसूत्रं सद्विद्यादीपसूत्रं सगुणनयकथासंपदां
हारसूत्रम् । प्रज्ञासूत्रं बुधानां प्रशमधनमनः-
पद्मनीनालसूत्रं रक्षासूत्रं यतीनां जयति यति-
पतेर्वक्षसि ब्रह्मसूत्रम् ॥ ४

पाषण्डसागरमहावडबामुखाग्निः
श्रीरंगराजचरणाम्बुजमूलदासः ।
श्रीविष्णुलोकमणिमण्डपमार्गदायी
रामानुजो विजयते यतिराजराजः ॥५॥

कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने ।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाण्डवगीता

पाण्डव उवाच—

प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीक
व्यासाम्बरीषशुकशौनकभीष्मदाल्भ्यान् ।
रुक्माङ्गदार्जुनवसिष्ठविभीषणादीन्
पुण्यानिमान्परमभागवतान्स्मरामि ॥१॥

लोमहर्षण उवाच—

धर्मो विवर्द्धति युधिष्ठिरकीर्तनेन
पापं प्रणश्यति वृकोदरकीर्त्तनेन ।
शत्रुर्विनश्यति धनञ्जयकीर्त्तनेन
माद्रीसुतौ कथयतां न भवन्ति रोगाः ॥२॥

ब्रह्मोवाच—

ये मानवा विगतरागपरावरज्ञा
नारायणं सुरगुरुं सततं स्मरन्ति ।
ध्यानेन तेन हतकल्मषचेतनास्ते
मातुः पयोधररसं न पुनः पिबन्ति ॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इन्द्र उवाच—

नारायणो नाम नरो नराणां
प्रसिद्धचोरः कथितः पृथिव्याम् ।
अनेकजन्मार्जितपापसञ्चयं
हरत्यशेषं स्मरतां सदैव ॥४॥

युधिष्ठिर उवाच—

मेघश्याम पीतकौशेयवासं
श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भासितांगम् ।
पुण्योपेतं पुण्डरीकाताक्ष
विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम् ॥५॥

भीमसेन उवाच—

जलौघमग्ना सचराचरा धरा
विषाणकोट्याखिलविश्वमूर्तिना ।
समुद्धृता येन वराहरूपिणा
स मे स्वयम्भूर्भगवान्प्रसीदताम् ॥६॥

अर्जुन उवाच—

अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमव्यय
विभुं प्रभुं भावितविश्वभावनम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रैलोक्यविस्तारविचारकारकं
हरिं प्रपन्नोऽस्मि गतिं महात्मनाम् ॥७॥

नकुल उवाच—

यदि गमनमधस्तात्कालपाशानुबद्धो
यदि च कुलविहीने जायते पक्षिकीटे।
कृमिशतमपि गत्वा जायते चान्तरात्मा
मम भवतु हृदिस्थे केशवे भक्तिरेका ॥८॥

सहदेव उवाच—

तस्य यज्ञवराहस्य विष्णोरमिततेजसः।
प्रणामं येपि कुर्वन्ति तेषामपि नमो नमः ॥९॥

कुन्त्युवाच—

स्वकर्मफलनिर्दिष्टां यां यां योनिं व्रजाम्यहम्।
तस्यां तस्यां हृषीकेश त्वयि भक्तिर्दृढास्तु मे ॥

माद्र्युवाच—

कृष्णे रताः कृष्णमनुस्मरन्ति
रात्रौ च कृष्णं पुनरुत्थिता ये।
ते भिन्नदेहाः प्रविशन्ति कृष्णं
हविर्यथा मन्त्रहुतं हुताशम् ॥११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्रुपद उवाच—

कीटेषु पक्षिषु मृगेषु सरीसृपेषु
रक्षःपिशाचमनुजेष्वपि यत्र यत्र ।
जातस्य मे भवतु केशव त्वत्प्रसादात्
त्वय्येव भक्तिरचलाऽव्यभिचारिणी च ॥१२॥

सुभद्रोवाच—

एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो
दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः ।
दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म
कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय ॥१३॥

अभिमन्युरुवाच—

गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे
गोविन्द गोविन्द मुकुंद कृष्ण ।
गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे
गोविन्द गोविन्द नमो नमस्ते ॥१४॥

धृष्टद्युम्न उवाच—

श्रीरामनारायण वासुदेव
गोविन्द वैकुण्ठ मुकुंद कृष्ण ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीकेशवानन्त नृसिंह विष्णो
मां त्राहि संसारभुजङ्गदष्टम् ॥१५॥

सात्यकिरुवाच—

अप्रमेय हरे विष्णो कृष्ण दामोदराच्युत ।
गोविन्दानन्द सर्वेश वासुदेव नमोऽस्तुते ॥१६॥

उद्धव उवाच—

वासुदेवं परित्यज्य योऽन्यं देवमुपासते ।
तृषितो जाह्नवीतीरे कूपं खनति दुर्मतिः ॥१७॥

धौम्यउवाच—

अपां समीपे शयनासनस्थितौ
दिवा च रात्रौ च यथाधिगच्छता ।
यद्यस्ति किञ्चित्सुकृतं कृतं मया
जनार्दनस्तेन कृतेन तुष्यतु ॥१८॥

संजय उवाच—

आर्ता विषण्णाः शिथिलाश्च भीताः
घोरेषु च व्याधिषु वर्तमानाः ।
संकीर्त्य नारायणशब्दमात्रं
विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवन्ति ॥१९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अक्रूर उवाच—

अहं हि नारायणदासदास-
दासानुदासस्य च दासदासः ।
अस्त्यन्य ईशो जगतो नराणां
तस्मादहं चान्ययरोऽस्मि लोके ॥२०॥

विदुर उवाच—

वासुदेवस्य ये भक्ताः शान्तास्तद्गतमानसाः ।
तेषां दासस्य दासोऽहम भूवं जन्म जन्मनि ॥२१॥

भीष्म उवाच—

विपरीतेषु कालेषु परीक्षणेषु बन्धुषु ।
त्राहि मां कृपया कृष्ण शरणागतवत्सल ॥२२॥

द्रोणाचार्य उवाच —

ये ये हतश्चक्रधरेण राजन्
त्रैलोक्यनाथेन जनार्दनेन ।
ते ते नरा विष्णुपुरं प्रयाताः
क्रोधोऽपि देवस्य वरेण तुल्यः ॥२३॥

कृपाचार्य उवाच—

मज्जन्मनः फलमिदं मधुकैटभारे
मत्प्रार्थनीयमदनुग्रह एष एव ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वद्भृत्यभृत्यपरिचारकभृत्यभृत्य-
भृत्यस्य भृत्य इति मां स्मर लोकनाथ ॥२४॥

अश्वत्थामोवाच—

गोविन्द केशव जनार्दन वासुदेव
विश्वेश विश्व मधुसूदन विश्वनाथ ।
श्रीपद्मनाभ पुरुषोत्तम पुष्कराक्ष
नारायणाच्युत नृसिंह नमो नमस्ते ॥२५॥

कर्ण उवाच—

नान्यं वदामि नशृणोमि न चिन्तयामि
नान्यं स्मरामि न भजामि न चाश्रयामि ।
भक्त्या त्वदीयचरणाम्बुजमादरेण
श्रीश्रीनिवास पुरुषोत्तम देहि दास्यम् ॥२६॥

धृतराष्ट्र उवाच—

नमो नमः कारणवामनाय
नारायणायामितविक्रमाय ।
श्रीशार्ङ्गचक्राब्जगदाधराय
नमोऽस्तु तस्मै पुरुषोत्तमाय ॥२७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गान्धार्युवाच—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥२८॥

द्रौपद्युवाच—

यज्ञेशाच्युत गोविन्द माधवानन्त केशव।
कृष्ण विष्णो हृषीकेश वासुदेव नमोऽस्तुते ॥२९॥

जयद्रथ उवाच—

नमः कृष्णाय देवाय ब्रह्मणेऽनन्तमूर्त्तये।
योगेश्वराय योगाय त्वामहं शरणं गतः ॥३१॥

विकर्ण उवाच—

कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च।
नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः ॥३१॥

सोमदत्त उवाच—

नमः परमकल्याण नमस्ते विश्वभावन।
वासुदेवाय शान्ताय यदूनां पतये नमः ॥३२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विदुर उवाच—

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥३३॥

शल्य उवाच—

अतसीपुष्पसङ्काशं पीतवाससमच्युतम् ।
ये नमस्यन्ति गोविंदं न तेषां विद्यते भयम् ॥३४॥

बलभद्र उवाच—

कृष्ण कृष्ण कृपालुस्त्वमतीनां गतिर्भव ।
संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम ॥४५॥

श्रीकृष्ण उवाच—

कृष्ण कृष्णेति कृष्णेति यो मां स्मरति नित्यशः ।
जलं भित्त्वा यथा पद्मं नरकादुद्धराम्यहम् ॥३६॥

सत्यं ब्रवीमि मनुजाः स्वयमूर्ध्वबाहु-
र्यो मां मुकुन्द नरसिंह जनार्दनेति ।
जीवो जपत्यनुदिनं मरणे रणे वा
पाषाणकाष्ठसदृशाय ददाम्यभीष्टम् ॥३७॥

सूत उवाच—

तत्रैव गङ्गा यमुना च वेणी
गोदावरी सिन्धुसरस्वती च ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वाणि तीर्थानि बसन्ति तत्र
यत्राच्युतोद्धारकथाप्रसङ्ग ॥३८॥

यम उवाच—

नरके पच्यमानस्तु यमेन परिभाषितः ।
किं त्वया नार्चितो देवः केशवः क्लेशनाशनः ॥

नारद उवाच—

जन्मान्तरसहस्रेण तपोध्यानसमाधिभिः ।
नराणां क्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते ॥

प्रह्लाद उवाच

नाथ योनिसहस्रेषु येषु येषु व्रजाम्यहम् ।
तेषु तेष्वचला भक्तिरच्युतास्तु सदा त्वयी ॥४१॥
या प्रीतिरविवेकानां विषयेष्वनपायिनी ।
त्वामनुस्मरतः सा मे हृदयान्नापसर्पतु ॥४२॥

विश्वामित्र उवाच—

किं तस्य दानैः किं तीर्थैः किं तपोभि किमध्वरैः ।
यो नित्यं ध्यायते देवं नराणां मनसि स्थितम् ॥

जमदग्निरुवाच—

नित्योत्सवः सदा तेषां नित्यश्रीर्नित्यमङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान्मङ्गलायतनो हरिः ॥४४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भारद्वाज उवाच—

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥४५॥

गौतम उवाच—

गोकोटिदानं ग्रहणेषु काशी
प्रयागगङ्गायुतकल्पवासः ।
यज्ञायुतं मेरुसुवर्णदानं
गोविन्दनाम्ना न समं न तुल्यम् ॥४६॥

अत्रिरुवाच—

गोविन्देति सदा स्नानं गोविन्देति सदा जपः ।
गोविन्देति सदा ध्यानं सदा गोविन्दकीर्त्तनम् ॥
अक्षरं हि परं ब्रह्म गोविन्देत्यक्षरत्रयम् ।
कस्मादुच्चरितं येन ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥४८॥

श्रीशुक उवाच—

अच्युतः कल्पवृक्षोऽसावन्तः कामधेनवः ।
चिन्तामणिश्च गोविन्द हरिर्नाम विचिन्तयेत् ॥

हरिरुवाच—

जयति जयति देवो देवकीनन्दनोयं
जयति जयति कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जयति जयति मेघश्यामलः कोमलांगो
जयति जयति पृथ्वीभारनाशो मुकुन्दः ॥५०॥

विप्पलायन उवाच—

श्रीमन्नृसिंहविभवे गरुडध्वजाय
तापत्रयोपशमनाय भवौषधाय।
कृष्णाय वृश्चिकजलाग्निभुजङ्गरोग-
क्लेशव्ययाय हरये गुरवे नमस्ते ॥५१॥

अविर्होत उवाच—

कृष्ण त्वदीयपदपङ्कजपञ्जरान्ते
अद्यैव मे विशतु मानसराजहंसः।
प्राणप्रयाणसमये कफवातपित्तैः
कण्ठावरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते ॥५२॥

विदुर उवाच—

हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥

वशिष्ठ उवाच—

कृष्णेति मङ्गलं नाम यस्य वाचि प्रवर्तते।
भस्मीभवन्ति तस्याशु महापातककोटयः ॥५४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अरुन्धत्युवाच—

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥५५॥

काश्यप उवाच—

कृष्णानुस्मरणादेव पापसंघातपञ्जरः ।
शतधा भेदमाप्नोति गिरिर्वज्रहतो यथा ॥५६॥

दुर्योधन उवाच

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्ति–
जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः ।
केनापि देवेन हृदिस्थितेन
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ॥५७॥

येन स्वागुणदोषेण क्षम्यतां मधुसूदनः
अहमेवमहं हन्तुं मम दोषो न विद्यते ॥५८॥

भृगुरुवाच—

नामैव तव गोविन्द नाम त्वत्तः शताधिकम् ।
ददात्युच्चरणान्मुक्तिं विनाप्यष्टाङ्गयोगतः ॥५९॥

लोमहर्षण उवाच—

नमामि नारायणपादपङ्कजं
करोमि नारायणपूजनं सदा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वदामि नारायणनाम निर्मलं
स्मरामि नारायणतत्वमव्ययम् ॥६०॥

शौनक उवाच—

स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते ।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥६१॥

गर्ग उवाच—

नारायणेति शब्दोऽस्ति वागस्ति वशवर्तिनी ।
तथापि नरके घोरे पतन्तित्येतदद्भूतम् ॥६२॥

दाल्भ्य उवाच—

किं तस्य बहुभिर्मन्त्रैर्भक्तिर्यस्य जनार्दने ।
नमो नारायणायेति मन्त्रः सर्वार्थसाधकः ॥६३॥

वैशम्पायन उवाच—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥६४॥

अंगिरा उवाच—

हरिर्हरति पापानि दुष्टचित्तैरपि स्मृतः ।
अनिच्छयापि संस्पृष्टो दहत्येव हि पावकः ॥६५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पराशर उवाच—

सकृदुच्चरितं येन हरिरित्यक्षरद्वयम् ।
बद्धः परिकरस्तेन मोक्षाय गमनं प्रति ॥६६॥

पौलस्त्य उवाच—

हे जिह्वे रससारज्ञे सर्वदा मधुरप्रिये ।
नारायणाख्यपीयूषं पिब जिह्वे निरन्तरम् ॥६७॥

व्यास उवाच—

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं भुजमुत्थाप्य चोच्यते ।
न वेदाच्च परं शास्त्रं न देवः केशवात्परः ॥६८॥

धन्वन्तरिरुवाच—

अच्युतानन्तगोविन्दनामोच्चारणभेषजात् ।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।

मार्कण्डेय उवाच—

सा हानिस्तन्महच्छिद्रं सा चान्धजडमूढता ।
यन्मुहुर्त्तं क्षणं वापि वासुदेवं न चिन्तयेत्॥८७।

अगस्त्य उवाच —

निमिषं निमिषार्द्धं वा प्राणिनां विष्णुचिन्तनम् ।
क्रतुकोटिसहस्त्राणां ध्यानमेकं विशिष्यते ॥७१।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मनसा कर्मणा वाचा ये स्मरन्ति जनार्दनम् ।
तत्र तत्र कुरुक्षेत्रं प्रयोग नैमिषं वनम् ॥७२॥

श्रीशुक उवाच—

आलोड्य सर्वशास्त्राणि विचार्यैव पुनः पुनः ।
इदमेकं सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायणः सदा ॥७३॥

श्री महादेव उवाच—

शरीरं च नवच्छिद्रं व्याधिग्रस्तं कलेवरम् ।
औषधं जाह्नवीतोयं वैद्यो नारायणो हरिः ॥७४॥

शौनक उवाच

भोजनाच्छादने चिन्तां वृथा कुर्वन्ति वैष्णवाः ।
योऽसौ विश्वम्भरो देवः स भक्तान् किमुपेक्षते ॥
एवं ब्रह्मादयो देवा ऋषयश्च तपोधनाः ।
कीर्तयन्ति सुरश्रेष्ठं देवं नारायणं विभुम् ॥७६॥

सनत्कुमार उवाच—

यस्य हस्ते गदाचक्रं गरुडो यस्य वाहनम् ।
शंखः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु ॥७७॥
इदं पवित्रमायुष्यं पुण्यं पापप्रणाशनम् ।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय वैष्णवं स्तोत्रमुत्तमम् ॥७८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थं पाण्डवैः परिकीर्तितम् ॥७९।
आकाशात्पतितं तोयं तथा गच्छति सागरम् ।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ॥८०॥

इति श्रीपाण्डवकृतप्रपन्नगीता सम्पूर्णा ।

श्रीरामानुजप्रपत्तिः

तत्त्वावबोधमिहिराभ्युदयस्य पूर्वं
सन्ध्यायितैर्दरविनिद्रसरोजरम्यैः
आपाटलांशुपटलैः परिरभ्यमाणौ
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१॥

भोगापवर्गरसिकैः पुरुषः प्रयुक्त-
न्यासाङ्गपञ्चकयुगीमतिदायिनीभिः ।
दीर्घाङ्गुलीभिरतुलौ दशभिः सुशोभौ
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥२॥

वेदान्तदेशिकशिखाभरणायमानौ
तस्याच्छमानससरोवरराजहंसौ ।
तत्प्रौढवाक्सुरनदीकमठायमानौ
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निर्वापितप्रचुरगर्वविनम्रसर्व
दुर्वादिशीर्षपरिषद्बहुमानिताभ्याम् ।
वादाहवेषु घटितौ वरपादुकाभ्यां
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥४॥

उत्थाय योगसुखतो महतः प्रभाते
सह्याद्रिजाप्लवविधौ भृशमुत्सुकस्य ।
चित्तस्य शीघ्रगमनेन वितीर्णसाह्यौ
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥५॥

रेखाध्वजाङ्कुशसरोरुहशङ्खमुख्य-
चिन्हैर्निजैस्तत इतो मृदुचङ्क्रमेण ।
सह्यात्मजापुलिनसीमनि भूषयन्तौ
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥६॥

निर्वर्त्तने सति च सांध्यविधेयथावद्-
भक्त्या मुहुः प्रणमतां महतां जनानाम् ।
द्रागर्चिता सुविहिताञ्जलिपद्मकोशैः
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥७॥

श्रीरङ्गनाथचरणाविव वेदमौलि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वात्मीयवैभवविदां महतां द्विजानाम् ।
धन्योत्तमाङ्गवलभीषु विहारभाजौ
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥८॥
रङ्गाधिराजसदनाभिमुखं प्रयान्तौ
रथ्यापरागपटलीं निजसङ्गभूम्ना ।
संसाररोगशमनौषधचूर्णयन्तौ
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥९॥
प्राबोधिकस्तुतिवरेण विधूतनिद्रः
स्नेहार्द्रया निजदृशा पुरुषः पुराणः ।
यौ सिञ्चतिस्म सपदि क्रमशो मुखाद्यः
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१०॥
वेदान्तगह्वरनिलीनमनोहराथ-
व्याख्यारसैकमनसो निजशिष्यवर्गे ।
निष्पन्दतामुपगतौ श्रवणेच्छयैव
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥११॥
भिक्षाटनस्य समये दिनयौवनेपि
तेजोऽनलेन्धनमहं न भवेयमस्य ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इत्थं धरा धृतवती शिशिरासती यौ
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१२॥

श्रीशेषशैलकरिभूधरयावदाद्रि-
सिंहाचलेन्द्रबदरीवननायकानाम् ।
नित्यं गतागतजुषौ पदसेवनाय
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१३॥

स्नानेन पातकीजनैः परिमुक्तसक्त-
दोषोपनोदकृते सुरनिम्नगायाः ।
तीरे नखद्युतिभिरादधताविवान्यां
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१४॥

श्रीरामसेतुपरिकर्मवता महोर्मि-
जालेन सिन्धुसविधे कलहायमानौ ।
श्रीपादुकास्वनमिषाद्वृजिनापनोदे
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१५॥

रामानुजप्रपत्तिं ये तत्पदाम्भोजभक्तितः ।
पठन्त्यनुदिनं प्रातर्मुक्तिस्तेषां करे स्थिता ॥१६॥

——

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ विष्णुसहस्र नामावलि:

ॐ

श्री गणेशायनमः ।। अस्य श्री विष्णोदिव्यसहस्रनामस्तोत्र मन्त्रस्य ।। भगवान् वेदव्यास ऋषिः ।। श्रीकृष्णः परमात्मा देवता ।। अनुष्टुपछन्दः ।। अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम् ।। देवकीनंदनः स्त्रष्टेति शक्तिः ।। त्रिसामा सामगः सामेति हृदयम् ।। शंख भृन्नंदकी चक्रीति कीलकम् ।। शार्ङगधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम् ।। रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति कवचम् ।। उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मंत्रः ।। श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।।

।। अथ ध्यानम् ।।

ॐ शांताकारं भुजगशयनं,
पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगन—सदृशं,
मेघवर्णं शुभांगम् ।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं,
योगभिर्ध्यानिगम्यं,
वंदे विष्णुं भव-भयहरं,
सर्वलोकैकनाथम् ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ इति ध्यानम् ॥

१ ॐ विश्वस्मै नमः
२ विष्णुवे नमः
३ वषट्काराय नमः
४ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः
५ भूतकृते नमः
६ भूतभृते नमः
७ भावाय नमः
८ भूतात्मने नमः
९ भूतभावनाय नमः
१० पूतात्मने नमः
११ परमात्मने नमः
१२ मुक्तानां परमाय गतये नमः
१३ अव्ययाय नमः
१४ ॐ पुरुषाय नमः
१५ साक्षिणे नमः
१६ अक्षराय नमः
१७ क्षेत्रज्ञाय नमः
१८ योगाय नमः
१९ योगविदां नेत्रे नमः
२० प्रधान पुरुषेश्वराय०
२१ नारसिंहवपुषे नमः
२२ श्रीमते नमः
२३ केशवाय नमः
२४ पुरुषोत्तमाय नमः
२५ सर्वाय नमः
२६ शर्वाय नमः
२७ शिवाय नमः
२८ स्थाणवे नमः
२९ भूतादये नमः
३० निधये अव्ययाय०
३१ संभवाय नमः
३२ भावनाय नमः
३३ भर्त्ते नमः
३४ प्रभवाय नमः
३५ प्रभवे नमः
३६ ईश्वराय नमः
३७ स्वयंभुवे नमः
३८ शंभवे नमः
३९ आदित्याय नमः
४० ॐ पुष्कराक्षाय नमः
४१ महास्वनाय नमः
४२ अनादिनिधनाय नमः
४३ धात्रे नमः
४४ विधात्रे नमः
४५ धातुरुत्तमाय नमः
४६ अप्रमेयाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४७ हृषीकेशाय नमः

३८ पद्मनाभाय नमः

४९ अमरप्रभवे नमः

५० विश्वकर्मणे नमः

५१ मनवे नमः

५२ त्वष्ट्रे नमः

५३ स्थविष्ठाय नमः

५४ स्थविराय ध्रुवाय नमः

५५ अग्राह्याय नमः

५६ शाश्वताय नमः

५७ कृष्णाय नमः

५८ लोहिताक्षाय नमः

५९ प्रतर्दनाय नमः

६० प्रभूताय नमः

६१ त्रिककुब्धाम्ने नमः

६२ पवित्राय नमः

६३ मंगलाय परस्मै नमः

६४ ईशानाय नमः

६५ प्राणदाय नमः

६६ प्राणाय नमः

६७ ज्येष्ठाय नमः

६८ श्रेष्ठाय नमः

६९ प्रजापतये नमः

७० हिरण्यगर्भाय नमः

७१ भूगर्भाय नमः

७२ माधवाय नमः

७३ ॐ मधुसूदनाय नमः

७४ ईश्वराय नमः

७५ विक्रमिणे नमः

७६ धन्विने नमः

७७ मेधाविने नमः

७८ विक्रमाय नमः

७९ क्रमाय नमः

८० अनुत्तमाय नमः

८१ दुराधर्षाय नमः

८२ कृतज्ञाय नमः

८३ कृतये नमः

८४ आत्मवते नमः

८५ सुरेशाय नमः

८६ शरणाय नमः

८७ शर्मणे नमः

८८ विश्वरेतसे नमः

८९ प्रजाभवाय नमः

९० अह्ने नमः

९१ संवत्सराय नमः

९२ व्यालाय नमः

९३ प्रत्ययाय नमः

९४ सर्वदर्शनाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

९५ अलाय नमः
९६ सर्वेश्वराय नमः
९७ सिद्धाय नमः
९८ सिद्धये नमः
९९ सर्वादये नमः
१०० अच्युताय नमः
१०१ वृषाकपये नमः
१०२ अमेयात्मने नमः
१०३ सर्वयोगविनिः सृतायः नमः
१०४ वसवे नमः
१०५ वसुमनसे नमः
१०६ ॐ सत्याय नमः
१०७ समात्मने नमः
१०८ सम्मिताय नमः
१०९ समाय नमः
११० अमोघाय नमः
१११ पुंडरीकाक्षाय नमः
११२ वृषकर्मणे नमः
११३ वृषाकृतये नमः
११४ रुद्राय नमः
११५ बहुशिरसे नमः
११६ बभ्रवे नमः
११७ विश्वयोनये नमः
११८ शुचिश्रवसे नमः
११९ अमृताय नमः
१२० शाश्वतस्थाणवे नमः
१२१ वरारोहाय नमः
१२२ महातपसे नमः
१२३ सर्वगाय नमः
१२४ सर्वविद्भानवे नमः
१२४ विष्वक्सेनाय नमः
१२६ जनार्दनाय नमः
१२७ वेदाय नमः
१२८ वेदविदे नमः
१२९ अव्यंगाय नमः
१३० वेदांगाय नमः
१३१ वेदविदे नमः
१३२ कवये नमः
१३३ लोकाध्यक्षाय नमः
१३४ सुराध्यक्षाय नमः
१३५ धर्माध्यक्षाय नमः
१३६ कृताकृताय नमः
१३७ चतुरात्मने नमः
१३८ चतुर्व्यूहाय नमः
१३९ ॐ चतुर्दष्टाय नमः
१४० चतुर्भुजाय नमः
१४१ भ्राजिष्ठावे नमः
१४२ भोजनाय नमः

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१४३ भोक्तो नमः
१४४ सहिष्णवे नमः
१४५ जगदादिजाय नमः
१४६ अनघाय नमः
१४७ विजयाय नमः
१४८ जेत्रे नमः
१४९ विश्वयोनये नमः
१५० पुनर्वसवे नमः
१५१ उपेंद्राय नमः
१५२ वामनाय नमः
१५३ प्रांशवे नमः
१५४ अमोघाय नमः
१५५ शुचये नमः
१५६ अजिताय नमः
१५७ अतींद्राय नमः
१५८ संग्रहाय नमः
१५९ सर्ग्रायि नमः
१६० धूतात्मने नमः
१६१ नियमाय नमः
१६२ यमाय नमः
१६३ वेद्याय नमः
१६४ वैद्याय नमः
१६५ सदायोगिने नमः
१६६ वीरघ्ने नमः
१६७ माधवाय नमः
१६८ मधवे नमः
१६९ अतींद्रियाय नमः
१७० महामायाय नमः
१७१ महोत्साहाय नमः
१७२ ॐ महाबलाय नमः
१७३ महाबुद्धये नमः
१७४ महावीर्याय नमः
१७५ महाशक्तये नमः
१७६ महाद्युतये नमः
१७७ अनिर्देश्यवपुषे नमः
१७८ श्रीमते नमः
१७९ अमेयात्मने नमः
१८० महाद्रिधृषे नमः
१८१ महेष्वासाय नमः
१८२ महीभर्त्रे नमः
१८३ श्रीनिवासाय नमः
१८४ सतांगतये नमः
१८५ अनिरुद्धाय नमः
१८६ सुरानंदाय नमः
१८७ गोविंदाय नमः
१८८ गोविदांपतये नमः
१८९ मरीचये नमः
१९० दमनाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१९१ हंसाय नमः
१९२ सुपर्णाय नमः
१९३ भुजगोत्तमाय नमः
१९४ हिरण्यनाभाय नमः
१९५ सुतपसे नमः
१९६ पद्मनाभाय नमः
१९७ प्रजापतये नमः
१९८ अमृत्यवे नमः
१९९ सर्वदृशे नमः
२०० सिंहाय नमः
२०१ संधात्रे नमः
२०२ संधिमते नमः
२०३ स्थिराय नमः
२०४ अजाय नमः
२०५ ॐ दुर्मर्षणाय नमः
२०६ शास्त्रे नमः
२०७ विश्रुतात्मने नमः
२०८ सुरारिघ्ने नमः
२०९ गुरवे नमः
२१० गुरुतमाय नमः
२११ धाम्ने नमः
२१२ सत्याय नमः
२१३ सत्यपराक्रमाय नमः
२१४ निमिषाय नमः
२१५ अनिमिषाय नमः
२१६ स्त्रग्विणे नमः
२१७ वाचस्पतये उदारधिये नमः
२१८ अग्रण्यै नमः
२१९ ग्रामण्यै नमः
२२० श्रीमते नमः
२२१ न्यायाय नमः
२२२ नेत्रे नमः
२२३ समीरणाय
२२४ सहस्त्रामूर्ध्न नमः
२२५ विश्वात्मने
२२६ सहस्त्रक्षाय नमः
२२७ सहस्त्रपदे नमः
२२८ आवर्तनाय नमः
२२९ निवृत्तात्मने नमः
२३० संवताय नमः
२३१ संप्रमर्दनाय नमः
२३२ अहः संवर्तकाय नमः
२३३ व्हनये नमः
२३४ अनिलाय नमः
२३५ धरणीधराय नमः
२३६ सुप्रसादाय नमः
२३७ प्रसन्नात्मने नमः
२३८ ॐ विश्वधृषे नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२३९ विश्व भुजे नमः
२४० विभवे नमः
२४१ सत्कले नमः
२४२ सत्कृताय नमः
२४३ साधवे नमः
२४४ जह्नवे नमः
२४५ नारायणाय नमः
२४६ नराय नमः
२४७ असंख्येयाय नमः
२४८ अप्रमेयात्मने नमः
२४९ विशिष्टाय नमः
२५० शिष्टकृते नमः
२५१ शुचये नमः
२५२ सिद्धार्थाय नमः
२५३ सिद्धसंकल्पाय नमः
२५४ सिद्धिदाय नमः
२५५ सिद्धि साधनाय नमः
२५६ वृषाहिणे नमः
२५७ वृषभाय नमः
३५८ विष्णवे नमः
२५९ वृषपर्वणे नमः
२६० वृषोदराय नमः
२६१ वर्धनाय नमः
२६२ वर्धमानाय नमः
२६३ विविक्ताय नमः
२६४ श्रुतिसागराय नमः
२६५ सुभुजाय नमः
२६६ दुर्धराय नमः
२६७ वाग्मिने नमः
२६८ महेद्राय नमः
२६९ वसुदाय नमः
२७० वसवे नमः
२७१ ॐ नैकरूपाय नमः
२७२ बृहद्र्‌पाय नमः
२७३ शिपि विष्टाय नमः
२७४ प्रकाशनाय नमः
२७५ ओजस्तेजोद्यु तिधराय नमः
२७६ प्रकाशात्मने नमः
२७७ प्रतापनाय नमः
२७८ ऋद्धाय नमः
२७९ स्पष्टाक्षराय नमः
२८० मन्त्राय नमः
२८१ चन्द्रांशवे नमः
२८२ भास्करद्यु तये नमः
२८३ अमृतांशूद्भवाय नमः
२८४ भानवे नमः
२८५ शशिंविदवे नमः
२८६ सुरेश्वराय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२८७ औषधाय नमः
२८८ जगतः सेतवे नमः
२८९ सत्यधर्मपराक्रमाय नमः
२९० भूतभव्यभवन्नाथाय नमः
२९१ पावनाय नमः
२९२ पावनाय नमः
२९३ अनलाय नमः
२९४ कामघ्ने नमः
२९५ कामकृते नमः
२९६ कांताय नमः
२९७ कामाय नमः
२९८ कामप्रदाय नमः
२९९ प्रभवे नमः
३०० युगादिककृते नमः
३०१ युगावर्ताय नमः
३०२ नेकमायाय नमः
३०३ महाशनाय नमः
३०४ ॐ अदृश्याय नमः
३०५ अव्यक्तरुपाय नमः
३०६ स्त्रहजिते नमः
३०७ अनतजिते नमः
३०८ इष्टाय नमः
३०९ विशिष्टाय नमः
३१० शिष्टेष्टाय नमः
३११ शिखंडिने नमः
३१२ नहुषाय नमः
३१३ वृषाय नमः
३१४ क्रोधघ्ने नमः
३१५ क्रोधकृत्कर्त्ते नमः
३१६ विश्वबाहवे नमः
३१७ महीधराय नमः
३१८ अच्युताय नमः
३१९ प्रथिताय नमः
१२० प्राणाय नमः
३२१ प्राणदाय नमः
३२२ वासवानुजाय नमः
३२३ अपांनिधये नमः
३२४ अधिष्ठानाय नमः
३२५ अप्रमत्ताय नमः
३२६ प्रतिष्ठिताय नमः
३२७ स्कंदाय नमः
३२८ स्कंदधराय नमः
३२९ धुर्याय नमः
३३० वरदाय नमः
३३१ वायुवाहनाय नमः
३३२ वासुदेवाय नमः
३३३ बृहद्भानवे नमः
३३४ आदिदेवाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३३५ पुरंदराय नमः
३३६ अशोकाय: नमः
३३७ ॐ तारणाय नमः
३३८ ताराय नमः
३३९ शूराय नमः
३४० शौरये नमः
३४१ जनेश्वराय नमः
३४२ अनुकूलाय नमः
३४३ शतावर्ताय नमः
३४४ पद्मिने नमः
३४५ पद्मनिभेक्षणाय नमः
३४६ पद्मनाभाय नमः
३४७ अरविंदाक्षाय नमः
३४८ पद्मगर्भाय नमः
३४९ शरीरभृते नमः
३५० महर्द्धये नमः
३५१ ऋद्धाय नमः
३५२ वृद्धात्मने नमः
३५३ महाक्षाय नमः
३५४ गरुडध्वजाय नमः
३५५ अतुलाय नमः
३५६ शरभाय नमः
३५७ भीमाय नमः
३५८ समयज्ञाय नमः
३५९ हरिर्हरये नमः
३६० सर्वलक्षणलक्षण्याय०
३६१ लक्ष्मीवते नमः
३६२ समितिंजयाय नमः
३६३ विक्षराय नमः
३६४ रोहिताय नमः
३६५ मार्गहेतवे नमः
३६६ दामोदराय नमः
३६७ सहाय नमः
३६८ महीधराय नमः
३६९ महाभागाय नमः
३७० ॐ वेगवते नमः
३७१ अमिताशनाय नमः
३७२ उदभवाय नमः
३७३ क्षोभणाय नमः
३७४ देवाय नमः
३७५ श्रीगर्भाय नमः
३७६ परमेश्वराय नमः
३७७ करणाय नमः
३७८ कारणाय नमः
३७९ कर्त्रे नमः
३८० विकर्त्रे नमः
३८१ गहनाय नमः
३८२ गुहाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३८३ व्यवसायाय नमः
३८४ व्यवस्थानाय नमः
३८५ संस्थानाय नमः
३८६ स्थानदाय नमः
३८७ ध्रुवाय नमः
३८८ परर्द्धये नमः
३८९ परमाय नमः
३९० स्पष्टाय नमः
३९१ तुष्टाय नमः
३९२ पुष्टाय नमः
३९३ शुभेक्षणाय नमः
३९४ रामाय नमः
३९५ विरामाय नमः
३९६ विरजाय नमः
३९७ मार्गाय नमः
३९८ नेयाय नमः
३९९ नयाय नमः
४०० अनयाय नमः
४०१ वीराय नमः
४०२ शक्तिमतां श्रेष्ठाय०
४०३ ॐ धर्माय नमः
४०४ धर्मविदुत्तमाय नमः
४०५ बैकुंठाय नमः
४०६ पुरुषाय नमः
४०७ प्राणाय नमः
४०८ प्राणदाय नमः
४०९ प्रणवाय नमः
४१० पृथवे नमः
४११ हिरण्यगर्भाय नमः
४१२ शत्रुघ्नाय नमः
४१३ वायवे नमः
४१४ अधोक्षजाय नमः
४१५ व्याप्ताय नमः
४१६ ऋतवे नमः
४१७ सुदर्शनाय नमः
४१८ कालाय नमः
४१९ परमेष्ठिने नमः
४२० परिग्रहाय नमः
४२१ उग्राय नमः
४२२ संवत्सराय नमः
४२३ दक्षाय नमः
४२४ विश्रामाय नमः
४२५ विश्वदक्षिणाय नमः
४२६ विस्ताराय नमः
४२७ स्थावरस्थाणवे नमः
४२८ प्रमाणाय नमः
४२९ बीजायाव्ययाय ०
४३० अर्थाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४३१ अनर्थाय नमः
४३२ महाकोशाय नमः
४३३ महाभोगाय नमः
४३४ महाधनाय नमः
४३५ अनिर्विण्णाय नमः
४३६ ॐ स्थविष्ठाय नमः
४३७ अभुवे नमः
४३८ धर्मयूपाय नमः
४३९ महामखाय नमः
४४० नक्षत्रनेमये नमः
४४१ नक्षत्रिणे नमः
४४२ क्षमाय नमः
४४३ क्षामाय नमः
४४४ समीहनाय नमः
४४५ यज्ञाय नमः
४४६ ईज्याय नमः
४४७ महेज्याय नमः
४४८ क्रतवे नमः
४४९ सत्राय नमः
४५० सतांगतये नमः
४५१ सर्वदर्शिने नमः
४५२ विमुक्तात्मने नमः
४५३ सर्वज्ञाय नमः
४५४ ज्ञानमुत्तमाय नमः
४५५ सुव्रताय नमः
४५६ सुमुखाय नमः
४५७ सूक्ष्माय नमः
४५८ सुधोषाय नमः
४५९ सुखदाय नमः
४६० सुहृदे नमः
४६१ मनोहराय नमः
४६२ जितक्रोधाय नमः
४६३ वीरबाहवे नमः
४६४ विदारणाय नमः
४६५ स्वापनाय नमः
४६६ स्ववशाय नमः
४६७ व्यापिने नमः
४६८ नैमात्मने नमः
४६९ ॐ नैकंकर्मकृते नमः
४७० वत्सराय नमः
४७१ वत्सलाय नमः
४७२ वत्सिने नमः
४७३ रत्नगर्भाय नमः
४७४ धनेश्वराय नमः
४७५ धर्मगुपे नमः
४७६ धर्मकृते नमः
४७७ धर्मिणे नमः
४७८ सते नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४७९ असते नमः
४८० क्षराय नमः
४८१ अक्षराय नमः
४८२ अविज्ञात्रे नमः
४८३ सहस्रांशवे नमः
४८४ विधात्रे नमः
४८५ कृतलक्षणाय नमः
४८६ गभस्तिनेमये नमः
४८७ सत्त्वस्थाय नमः
४८८ सिंहाय नमः
४८९ भूतमहेश्वराय नमः
४९० आदिदेवाय नमः
४९१ महादेवाय नमः
४९२ देवेशाय नमः
४९३ देवभृद्गुरवे नमः
४९४ उत्तराय नमः
४९५ गोपतये नमः
४९६ गोप्त्रे नमः
४९७ ज्ञान गम्याय नमः
४९८ पुरातनाय नमः
४९९ शरीरभूतभृते नमः
५०० भोक्त्रे नमः
५०१ कपींद्राय नमः
५०२ ॐ भूरिदक्षिणाय नमः
५०३ सोमपाय नमः
५०४ अमृतपाय नमः
५०५ सोमाय नमः
५०६ पुरुजिते नमः
५०७ पुरुसत्तमाय नमः
५०८ विनयाय नमः
५०९ जयाय नमः
५१० सत्यसंधाय नमः
५११ दाशार्हाय नमः
५१२ सात्त्वतांपतये नमः
५१३ जीवाय नमः
५१४ विनियितासाक्षिणे नमः
५१५ मुकुन्दाय नमः
५१६ अभित विक्रमाय नमः
५१७ अंभोनिधये नमः
५१८ अनंतात्मने नमः
५१९ महोदधिशयाय नमः
५२० अंतकाय नमः
५२१ अजाय नमः
५२२ महाहयि नमः
५२३ स्वाभाव्याय नमः
५२४ जितामित्राय नमः
५२५ प्रमोदनाय नमः
५२६ आनंदाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५२७ नंदनाय नमः
५२८ नंदाय नमः
५२९ सत्यधर्मणे नमः
५३० त्रिविक्रमाय नमः
५३१ महर्षि कपिलाचार्याय नमः
५३२ कृतज्ञाय नमः
५३३ मेदिनीपतये नमः
५३४ त्रिपदाय नमः
५३५ ॐ त्रिदशाध्यक्षाय नमः
५३६ महाशृंगाय नमः
५३७ कृतांतकृते नमः
५३८ महावशहाय नमः
५३९ गोविंदाय नमः
५४० सुषेणाय नमः
५४१ कनकांगदिने नमः
५४२ गुह्याय नमः
५४३ गभीराय नमः
५४४ गहनाय नमः
५४५ गुप्ताय नमः
५४६ चक्रगदाधराय नमः
५४७ वेधसे नमः
५४८ स्वांगाय नमः
५४९ अजिताय नमः
५५० कृष्णाय नमः
५५१ दृढ़ाय नमः
५५२ संकर्षणाय नमः
५५३ अच्युताय नमः
५५४ वरुणाय नमः
५५५ वारुणाय नमः
५५६ वृक्षाय नमः
५५७ पुष्कराक्षाय नमः
५५८ महामनसे नमः
५५९ भगवते नमः
५६० भगघ्ने नमः
५६१ आनंदिने नमः
५६२ वनमालिने नमः
५६३ हलायुधाय नमः
५६४ आदित्याय नमः
५६५ ज्योतिरादित्याय नमः
५६६ सहिष्ठावे नमः
५६७ गतिसत्तमाय नमः
५६८ ॐ सुधन्विने नमः
५६९ खंडपरशवे नमः
५७० दारुणाय नमः
५७१ द्रविणप्रदाय नमः
५७२ दिवस्पृशे नमः
५७३ सर्वदृग्व्यासाय नमः
५७४ वाचस्पतये नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५७५ अयोनिजाय नमः
५७६ त्रिसाम्ने नमः
५७७ सामगाय नमः
५७८ सामाय नमः
५७९ निर्वाणाय नमः
५८० भेषजाय नमः
५८१ भिषजे नमः
५८२ सन्यासकृते नमः
५८३ शभाय नमः
५८४ शांताय नमः
५८५ निष्ठाशांतिपरायणाय नमः
५८६ शुभांगाय नमः
५८७ शान्तिदाय नमः
५८८ स्रष्टे् नमः
५८९ कुमुदाय नमः
५९० कुवलेशयाय नमः
५९१ गोहिताय नमः
५९२ गोपतये नमः
५९३ गोस्त्रे नमः
५९४ वृषभाक्षाय नमः
५९५ वृषप्रियाय नमः
५९६ अनिर्वर्तिने नमः
५९७ निवृत्तात्मने नमः
५९८ संक्षेप्णे नमः
५९९ क्षेमकृते नमः
६०० शिवाय नमः
६०१ ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः
६०२ श्री वासाय नमः
६०३ श्रीपतये नमः
६०४ श्री मतांवराय नमः
६०५ श्रीदाय नमः
६०६ श्रीशाय नमः
६०७ श्रीनिवासाय नमः
६०८ श्रीनिधये नमः
६०९ श्रीविभापनाय नमः
६१० श्रीधराय नमः
६११ श्रीकराय नमः
६१२ श्रेयसे नमः
६१३ लोकस्त्रयाश्रयाय नमः
६१४ स्वक्षाय नमः
६१५ श्रीमते नमः
६१६ स्वंगाय नमः
६१७ शतानंदाय नमः
६१८ नंदिने नमः
६१९ ज्योतिर्गणेश्वराय नमः
६२० विजितात्मने नमः
६२१ विधेयात्मने नमः
६२२ सत्कीर्तये नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

६२३ छिन्नसंशयाय नमः
६२४ उदीर्णाय नमः
६२५ सर्वतश्चक्षुषे नमः
६२६ अनीशाय नमः
६२७ शाश्वतस्थिराय नमः
६२८ भूशयाय नमः
६२९ भूषणाय नमः
६३० भूतये नमः
६३१ विशोकाय नमः
६३२ शोकनाशनाय नमः
६३३ अर्चिष्मते नमः
६३४ ॐ अर्चिताय नमः
६३५ कुंभाय नमः
६३६ विशुद्धात्मने नमः
६३७ विशोधनाय नमः
६३८ अनिरुद्धाय नमः
६३९ अप्रतिरथाय नमः
६४० प्रद्युम्नाय नमः
६४१ अमितविक्रमाय नमः
६४२ कालनेमिनिघ्ने नमः
६४३ वीराय नमः
६४४ शौरये नमः
६४५ शूरजनेश्वराय नमः
६४६ त्रिलोकात्मने नमः
६४७ त्रिलोकेशाय नमः
६४८ केशवाय नमः
६४९ केशिघ्ने नमः
६५० हरये नमः
६५१ कामदेवाय नमः
६५२ कामपालाय नमः
६५३ कामिने नमः
६५४ कांताय नमः
६५५ कृतागमाय नमः
६५६ अनिर्देश्यवपुषे नमः
६५७ विष्णवे नमः
६५८ वीराय नमः
६५९ अनंताय नमः
६६० धनंजयाय नमः
६६१ ब्रह्मण्याय नमः
६६२ ब्रह्मकृते नमः
६६३ ब्रह्मणे नमः
६६४ ब्रह्मणें नमः
६६५ ब्रह्मविवर्धनाय नमः
६६६ ब्रह्मविदे नमः
६६७ ॐ ब्राह्मणाय नमः
६६८ ब्रह्मिणे नमः
६६९ ब्रह्मज्ञाय नमः
६७० ब्राह्मणप्रियाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

६७१ महाक्रमाय नमः
६७२ महाकर्मणे नमः
६७३ महातेजसे नमः
६७४ महोरगाय नमः
६७५ महाक्रतवे नमः
६७६ महायज्वने नमः
६७७ महायज्ञाय गमः
६७८ महाहविषे नमः
६७९ स्तव्याय नमः
६८० स्तवप्रियाय नमः
६८१ स्तोत्राय नमः
६८२ स्तुतये नमः
६८३ स्तोत्रे नमः
६८४ रणप्रियाय नमः
६८५ पूर्णाय नमः
६८६ पुरयित्रे नमः
६८७ पुण्याय नमः
६८८ पुण्यकीर्तये नमः
६८९ अनामगाम नमः
६९० मनोजवाय नमः
६९१ तीर्थकराय नमः
६९२ वसुरेतसे नमः
६९३ वसुप्रदाय नमः
६९४ वसुप्रदाय नमः
६९५ वासुदेवाय नमः
६९६ वसवे नमः
६९७ वसुमनसे नमः
६९८ हविषे नमः
६९९ सदगतये नमः
७०० ॐ सत्कृतये नमः
७०१ सत्तायै नमः
७०२ सदभूतये नमः
७०३ सत्परायणाय नमः
७०४ शूरसेनाय नमः
७०५ यदुश्रेष्ठाय नमः
७०६ सन्निवासाय नमः
७०७ सुयाभुनाय नमः
७०८ भूतावासाय नमः
७०९ वासुदेवाय नमः
७१० सर्वासुनिलयाय०
७११ अनलाय नमः
७१२ दर्पघ्ने नमः
७१३ दर्पदाय नमः
७१४ दृप्ताय नमः
७१५ दुर्धराय नमः
७१६ अपराजिताय नमः
७१७ विश्वमूर्तये नमः
७१८ महामूर्तये नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

७१९ दीप्तमूर्तये नमः
७२० अमूर्तिमते नमः
७२१ अनेकमूर्तये नमः
७२२ अव्यक्ताय नमः
७२३ शतमूर्तये नमः
७२४ शताननाय नमः
७२५ एकाय नमः
७२६ नैकाय नमः
७२७ सवाय नमः
७२८ काय नमः
७२९ कस्मै नमः
७३० यस्मै नमः
७३१ तस्मै नमः
७३२ पदमनुत्तमाय नमः
७३३ ॐ लोकबन्धवे नमः
७३४ लोकनाथाय नमः
७३५ माधवाय नमः
७३६ भक्तवत्सलाय नमः
७३७ सुवर्ण वर्णाय नमः
७३८ हेमांगाय नमः
७३९ वरांगाय नमः
७४० चंदनांगदिने नमः
७४१ वीरघ्ने नमः
७४२ विषमाय नमः
७४३ शून्याय नमः
७४४ धृताशिषे नमः
७४५ अचलाय नमः
७४६ चलाय नमः
७४७ अमानिने नमः
७४८ मानदाय नमः
७४९ मान्याय नमः
७५० लोकस्वामिने नमः
७५१ त्रिलोकधृषे नमः
७५२ सुमेधसे नमः
७५३ मेधजाय नमः
७५४ धन्याय नमः
७५५ सत्यमेधसे नमः
७५६ धराधराय नमः
७५७ तेजोवृषाय नमः
७५८ द्युतिधराय नमः
७५९ सर्वशस्त्रभृतांवराय नमः
७६० प्रग्रहाय नमः
७६१ निग्रहाय नमः
७६२ व्यग्राह नमः
७६३ नेकशृंगाय नमः
७६४ गदाग्रजाय नमः
७६५ चतुर्मूर्तये नमः
७६६ ॐ चतुर्बाहवे नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

७६७ चतुर्व्यूहाय नमः
७६८ चतुर्गतये नमः
७६९ चतुरात्मने नमः
७७० चतुर्भावाय नमः
७७१ चतुर्वेदविदे नमः
७७२ एकपदे नमः
७७३ समावर्ताय नमः
७७४ अनिवृत्तात्मने नमः
७७५ दुर्जयाय नमः
७७६ दुरतिक्रमाय नमः
७७७ दुर्लभाय नमः
७७८ दुर्गमाय नमः
७७९ दुर्गाय नमः
७८० दुरावासाय नमः
७८१ दुरारिघ्ने नमः
७८२ शुभांगाय नमः
७८३ लोकसारंगाय नमः
७८४ सुतंतवे नमः
७८५ तंतुवर्धनाय नमः
७८६ इन्द्रकर्मणे नमः
७८७ महाकर्मणे नमः
७८८ कृतकर्मणे नमः
७८९ कृतागमाय नमः
७९० उद्भवाय नमः
७९१ सुन्दराय नमः
७९२ सुंदाय नमः
७९३ रत्ननाभाय नमः
७९४ सुलोचनाय नमः
७९५ अर्काय नमः
७९६ वाजसनाय नमः
७९७ श्रृंगिणे नमः
७९८ जयंताय नमः
७९९ ॐ सर्वविज्जयिने नमः
८०० सुवर्णबिंदवे नमः
८०१ अक्षोभ्याय नमः
८०२ सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः
८०३ महाहृदाय नमः
८०४ महागर्ताय नमः
८०५ महाभूताय नमः
८०६ महानिधये नमः
८०७ कुमुदाय नमः
८०८ कुंदराय नमः
८०९ कुंदाय नमः
८१० पर्जन्याय नमः
८११ पावनाय नमः
८१२ अनिलाय नमः
८१३ अमृतांशाय नमः
८१४ अमृतवपुषे नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

८१५ सर्वज्ञाय नमः
८१६ सर्वतोमुखाय नमः
८१७ सुलभाय नमः
८१८ सुव्रताय नमः
८१९ सिद्धाय नमः
८२० शत्रुजिते नमः
८२१ शत्रुतापनाय नमः
८२२ न्यग्रोधाय नमः
८२३ उदुंबराय नमः
८२४ अश्वत्थाय नमः
८२५ चाणूरांध्रनिषूदनाय नमः
८२६ सहस्रार्चिषे नमः
८२७ सप्तजिह्वाय नमः
८२८ सप्तैधसे नमः
८२९ सप्तवाहनाय नमः
८३० अमूर्तये नम
८३१ अनघाय नमः
८३२ ॐ अचित्याय नमः
८३३ भयकृते नमः
८३४ भयनाशनाय नमः
८३५ अणवे नमः
८३६ बृहते नमः
८३७ कृशाय नमः
८३८ स्थूलाय नमः
८३९ गुणभृते नमः
८४० निर्गुणाय नमः
८४१ महते नमः
८४२ अधृताय नमः
८४३ स्वधृताय नमः
८४४ स्वास्याय नमः
८४५ प्राग्वंशाय नमः
८४६ वंशवर्धनाय नमः
८४७ भारभृते नमः
८४८ कथिताय नमः
८४९ योगिने नमः
८५० योगीशाय नमः
८५१ सर्वकामदाय नमः
८५२ आश्रमाय नमः
८५३ श्रमणाय नमः
८५४ क्षामाय नमः
८५५ सुपर्णाय नमः
८५६ वायुवाहनाय नमः
८५७ धनुर्धराय नमः
८५८ धनुर्वेदाय नमः
८५९ दंडाय नमः
८६० दमयित्रे नमः
८६१ दमाय नमः
८६२ अपराजिताय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

८६३ सर्वसहाय नमः
८६४ नियंत्रे नमः
८६५ ॐ नियमाय नमः
८६६ यमाय नमः
८६७ सत्त्ववते नमः
८६८ सात्त्विकाय नमः
८६९ सत्याय नमः
८७० सत्यधर्वपरायणाय नमः
८७१ अभिप्रायाय नमः
८७२ प्रियार्हाय नमः
८७३ अर्हाय नमः
८७४ प्रियकृते नमः
८७५ प्रीतिवर्धनाय नमः
८७६ विहायसगतये नमः
८७७ ज्योतिषे नमः
८७८ सुरुचये नमः
८७९ हुतभुजे नमः
८८० विभवे नमः
८८१ रवये नमः
८८२ विरोचनाय नमः
८८३ सूर्याय नमः
८८४ सवित्रे नमः
८८५ रविलोचनाय नमः
८८६ अनंताय नमः
८८७ हुतभुजे नमः
८८८ भोक्त्रे नमः
८८९ सुखदाय नमः
८९० नैकजाय नमः
८९१ अग्रजाय नमः
८९२ अनिर्विण्णाय नमः
८९३ सदामर्षिणे नमः
८९४ लोकाधिष्ठानाय०
८९५ अद्भुताय नमः
८९६ सनाते नमः
८९७ सनातनतमाय नमः
८९८ ॐ कपिलाय नमः
८९९ कपये नमः
९०० अव्ययाय नमः
९०१ स्वस्तिदाय नमः
९०२ स्वस्तिकृते नमः
९०३ स्वस्तिने नमः
९०४ स्वस्तिभुजे नमः
९०५ स्वस्तिदक्षिणाय नमः
९०६ आरौद्राय नमः
९०७ कुण्डलिने नमः
९०८ चक्रिणे नमः
९०९ विक्रमिणे नमः
९१० उर्जितशासनाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

९११ शब्दातिगाय नमः
९१२ शब्दसहाय नमः
९१३ शिशिराय नमः
९१४ शर्वरीकराय नमः
९१५ अक्रूराय नमः
९१६ पेशलाय नमः
९१७ दक्षाय नमः
९१८ दक्षिणाय नमः
९१९ क्षमिणांवराय नमः
९२० विद्वत्तमाय नमः
९२१ वीतभयाय नमः
९२२ पुण्य श्रवणकीर्तनाय नमः
९२३ उत्तारणाय नमः
९२४ दुष्कृतिघ्ने नमः
९२५ पुण्याय नमः
९२६ दुःस्वप्ननाशनाय०
९२७ वीरघ्ने नमः
९२८ रक्षणाय नमः
९२९ संताय नमः
९३० जीवनाय नमः
९३१ ॐ पर्यवस्थिताय नमः
९३२ अनंत रूपाय नमः
९३३ अनंतश्रिये नमः
९३४ जितमन्यवे नमः
९३५ भयापहाय नमः
९३६ चतुरस्राय नमः
९३७ गभीरात्मने नमः
९३८ विदिशाय नमः
९३९ व्यादिशाय नमः
९४० दिशाय नमः
९४१ अनादये नमः
९४२ भुवे नमः
९४३ भुवोलक्ष्म्यै नमः
९४४ सुवीराय नमः
९४५ रुचिरांगदाय नमः
९४६ जननाय नमः
९४७ जनजन्मादये नमः
९४८ भीमाय नमः
९४९ भीमपराक्रमाय नमः
९५० आधार निलयाय नमः
९५१ धात्रे नमः
९५२ पुष्पहासाय नमः
९५३ प्रजागराय नमः
९५४ ऊर्ध्वगाय नमः
९५५ सत्पथाचाराय नमः
९५६ प्राणदाय नमः
९५७ प्रणवाय नमः
९५८ पणाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

९५९ प्रमाणाय नमः
९६० प्राणनिलयाय नमः
९६१ प्राणभृते नमः
९६२ प्राणजीवनाय नमः
९६३ तत्त्वाय नमः
९६४ ॐ तत्त्वविदे नमः
९६५ एकात्मने नमः
९६६ जन्ममृत्युजरातिगा नमः
९६७ भूर्भुवः स्वस्तरवे नमः
९६८ ताराय नमः
९६९ सपित्रे नमः
९७० प्रपितामहाय नमः
९७१ यज्ञाय नमः
९७२ यज्ञपतये नमः
९७३ यज्वने नमः
९७४ यज्ञांगाय नमः
९७५ यज्ञवाहनाय नमः
९७६ यज्ञभृते नमः
९७७ यज्ञकृते नमः
९७८ यज्ञिने नमः
९७९ यज्ञभुजे नमः
९८० यज्ञसाधनाय नमः
९८१ यज्ञांतकृते नमः
९८२ यज्ञगुह्याय नमः
९८३ अन्नाय नमः
९८४ अन्नादाय नमः
९८५ आत्मयोनये नमः
९८६ स्वयंजाताय नमः
९८७ वैखानाय नमः
९८८ सामगायनाय नमः
९८९ देवकीनंदनाय नमः
९९० स्त्रष्टे नमः
९९१ क्षितीशाय नमः
९९२ पापनाशनाय नमः
९९३ शंखभृते नमः
९९४ नंदकिने नमः
९९५ चक्रिणे नमः
९९६ शार्गंधन्वने नमः
९९७ ॐ गदाधराय नमः
९९८ रथांगपाणये नमः
९९९ ॐ अक्षोभ्याय नमः
१००० सर्वप्रहरणायुधाय नमः

 In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री शिवस्तुतिः

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसंतं हृदयारविन्दे, भवंभवानी सहितं नमामी ॥

★

श्री पशुपतिनाथ प्रार्थना

ॐ हर-२ हर महादेव
जय जय शिव शंकर भोले
जय जय करुणा सागर
ॐ हर-२ हर महादेव-२ ॥ १ ॥

ॐ हर-हर हर महादेव
भूषण नाग मुण्डमाल
वाहन बृषभ मनोहर-२
भस्म धारण संपूर्ण शरीर
ॐ हर हर हर महादेव-२ ॥२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ हर हर हर महादेव
वेद पुराण सदा वर्णित
शिव प्रभुके वर्णन में
कण-कण व्यापक प्रभु के
महिमा त्रिभुवन के
ॐ हर हर हर महादेव-२ ॥३॥

ॐ हर हर हर महादेव
प्रभुका नित्य दित्त ध्यान करके
परमानन्द है इसी जगत में
चञ्चल पार करैं
ॐ हर हर हर महादेव-२ ॥४॥

ॐ हर हर हर महादेव
सच्चिदानन्द परम हितकारी
जय जय साम्बर
सदा शिव उपकारी
जय जय त्रिपुरारी
जय जय महादेव शंकर भोले-२ ॥५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ

श्री रुद्राक्ष माहात्म्य

★ मंगल नमस्कार ★

नमः शिवाय रुद्राय पशूनां पतये नमः।
माता पितृ स्वरूपाय श्री गौरीशङ्करात्मने ॥
भगवन भर्ग समग्रबिभूते भावक भद्रद रुद्र नमस्ते।
पूर्णात्मक परमेश्वरमूर्त्ते तस्मै पशुपतयेऽस्तु नमस्ते ॥

पशुपति शब्दका अर्थ—

इस चराचर में काम, अज्ञान और मोह-पाश में बँधे हुए प्राणीमात्र पशु माने जाते हैं। उन सभी पशुओं को मृत्युपाश से छुटकारा दिलाने वाले अमृतात्मरूपी अमर; देवादिदेव मृत्युके भी मृत्यु संहार शक्तिरूपी मृत्युञ्जय रुद्र ही पशुपति हैं।

पञ्चमुखी पशुपति

चार वेद उनके मुख हैं, वे स्वयं परमानन्दमय हैं: चैतन्य परब्रह्म परमात्मा ही उनका सच्चा स्वरूप है। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और ऊर्ध्व पाँच दिशाओं में स्थित पंच प्राणरूप पांच

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुखवाले पंच ब्रह्मरूपी इस विश्वरूप तत्त्व से सम्पन्न अद्वितीय श्री भगवान पशुपतिनाथ सर्व समर्थ प्रभू हैं।

पूर्व मुख

श्री पशुपति के पूर्वमुख का नाम तत्पुरुष हैं। सूर्यादि सभी दिव्य देवादि का उदय पूर्व दिशा में होता है। इसलिए वे ब्राह्मी शक्ति से युक्त हैं। उनका तत्पुरुष तीन नेत्रों से युक्त मंगलरूपी महादेवका हम ध्यान करते हैं। वे रुद्र हमें प्रेरणा दें।

दक्षिण मुख

दक्षिण मुख का नाम अघोर है, जो घोर नहीं है अर्थात् शान्तरूप ही अघोर का अर्थ है। वे घोरा-घोररूपी हैं। वे दक्षिण दिशा के अधिपति साक्षात कालाग्निरुद्र "यमराज" हैं। इसलिए तीन नेत्रों वाले वे अत्यन्त उग्ररूपी माने जाते हैं। इस दक्षिण मुख के दाहिने कान में सर्प का कुन्डल है। बाएं कान में गोल कुण्डल है। इसलिए घोराघोर स्वरूप वाले हैं। इस रूपमें पशुपति भयंकर भेष-धारण किए रहते हैं। वेद में इस रूप का नाम "शर्व"।

उत्तर मुख—

पशुपति के उत्तर मुखका नाम "वामदेव" है। उत्तर दिशा के अधिपति "सोम" ही वामदेव हैं। वामदेव के बाएँ कान में नागकुण्डल है। बायों तरफ शिर पर ऊँचा जटाजूट है। दाहिनी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तरफ जटा से भिन्न स्त्री की भांति बटे हुए केशके मुकुट जैसा है, कान में कमल जैसा गोलाकार नक़्क़ाशीदार कुण्डल है। इस प्रकार वे "वामदेव" दायीं ओर के अर्द्ध भागमें स्त्री विलास के योग्य आभरणों के गुणकला से विभूषित हैं। इसलिए ये सुन्दर रूपवाले हैं।

पश्चिम मुख—

पशुपति के पश्चिम मुखका नाम "सद्योज़ात" हैं। ये पश्चिम दिशाके देवतारूपी "वरुण" हैं।

सद्योजात-अभी अभी पैदा हुआ बालक। ये बाल भावसे सिद्ध प्राथमिक निर्विषय अवस्था रूप हैं। इस मुख में तीन नेत्र हैं। शिर में किरीट और दोनों कानों में एक ही तरह का पद्मकुण्डल है। अथर्व वेद में इस पश्चिम मुख का नाम "पशुपति" प्रसिद्ध है।

पशुपति के चारों मुखों में प्रत्येक मुख के दो-दो हाथ हैं। उनमें भी प्रत्येक मुख में दाए हाथ में १६ (१२) दानेवाले रुद्राक्षों की माला और बाए हाथ में कमण्डल है।

स्वर और वर्णरूप तत्त्व से युक्त वाक्शक्ति रूप वर्णमाला ही वह रुद्राक्षमाला है। रुद्र से निकले हुए अकारान्त, क्षकारान्त वर्णमाला ही रुद्राक्षमाला माने जाते हैं।

रुद्राक्ष के बारे में शिवपुराण में यों वर्णन किया गया है। सूतजी ने शौनकमुनि से कहा ! तुम अधिक विद्वान महाप्रतिभा-शाली और शिवस्वरूप हो। अब मैं तुम्हे रुद्राक्ष धारण करने का माहात्म्य कहता हूं। सुनो ! रुद्राक्ष परम पवित्र है और शिवजी को सबसे अधिकतम प्रिय है। इसके दर्शन, स्पर्श और इसके द्वारा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिवमंत्र जपने से सब पाप दूर हो जाते हैं। भगवान शंकर ने पूर्व समय में संसार के मनुष्यों के हित के लिए देवी पार्वती के सम्मुख यों वर्णन किया। मैं शिवभक्तों के हितकी इच्छा से तुम्हारे प्रेमके कारण रुद्राक्ष की महिमा कहता हूं। सुनो।

"पूर्वकाल में मैंने अपने मन को स्थिर करके हजारों वर्ष तपस्या की। उस समय मुझे भय-सा प्रतीत हुआ। मैंने लोकोपकार की भावना से अनायास नेत्र खोला। सुन्दर नयनों के कोने से जलकी बिन्दुएँ गिरीं। उससे रुद्राक्ष नाम के वृक्ष उत्पन्न हुए। भक्तों पर कृपा करने के कारण उन्होंने स्थावरयोनि में जन्म लिया।" ये (रुद्राक्ष) वृक्ष अधिकतर गौड़ देश (हिमालय पर्वत श्रेणी) से लेकर मथुरा, अयोध्या, काशी, श्रीलंका, मलयाचल, सह्याद्रि पर्वत आदि अन्य स्थानों में उत्पन्न हुए। (अब उसके वृक्ष संसार के विभिन्न भागों में मिलने लगे हैं)। (लेखक)

चारों वर्णों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के रुद्राक्ष धारण करने का भी उल्लेख है। मनुष्य अपने-अपने वर्णों के अनुसार रुद्राक्ष धारण करें। आंवले के आकार का रुद्राक्ष भोग, मोक्ष देनेवाला उत्तम बताया गया है। बेर (छोटे आकार का रुद्राक्ष सुख और सौभाग्य बढ़ाने वाला है)। आमले के फल के समान जो रुद्राक्ष है वह सब प्रकार के अरिष्टों का नाश करता है। गुंजा के समान जो रुद्राक्ष है वह सब प्रकार के मनोरथों का दाता है। अधिक क्या कहें, जितना छोटा रुद्राक्ष होगा, उतना ही अधिक फल देगा। विद्वानों ने तीनों प्रकार के रुद्राक्षों का फल क्रम से दश अंशों से उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ बताया है। इसलिए पापों के निवारण के लिए और मनोरथों की सिद्धि के लिए रुद्राक्ष की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माला अवश्य धारण करनी चाहिये। हे उमे ! रुद्राक्ष की माला की अपेक्षा और कोई माला अधिक फलदायक प्रतीत नहीं होती। रुद्राक्ष गोल, चिकना, दृढ़, स्थूल, कांटेदार सुन्दर होते हैं वे मुक्ति-भुक्ति और कामना के देने वाले हैं। परन्तु जो रुद्राक्ष कीड़ों के खाये हुए, कटे, टूटे फूटे 'बिना कांटों के फफोले वाले और चपटे हैं, उन ६ प्रकार के रुद्राक्षों की माला धारण नहीं करनी चाहिये। स्वयं छेद वाले रुद्राक्ष उत्तम होते हैं। परन्तु मनुष्य द्वारा किये हुए छेद वाले रुद्राक्ष मध्यम होते हैं। पापोंके नाश करने वाले रुद्राक्ष किस प्रकार और कितनी संख्या तक के धारण करने चाहिये। १०० रुद्राक्ष धारण करने वाला भक्त रुद्र रूप समझा जाता है। ११०० रुद्राक्ष धारण करने वाले सज्जन को जो फल मिलता है उसका फल तो वर्णानातीत है। उनके धारण का प्रकार इस भाँति है। ५५० रुद्राक्षों का मुकुट बनावे। ३ आवृत्ति वाला ३६० रुद्राक्षों का यज्ञोपवीत बनावे, तीन रुद्राक्ष शिखा में, दोनों कर्णों में ६,६ रुद्राक्ष, १०८ रुद्राक्षों की माला कंठ में, दोनों भुजाओं में, दोनों कोहनियों में और दोनों मणि-बन्धों में क्रम से ११/११ रुद्राक्ष धारण करें। ३ रुद्राक्ष यज्ञोपवीत में और ५ रुद्राक्ष कमर में धारण करें। हे पार्वती, इस प्रकार ११०० रुद्राक्ष धारण करने वाला भक्त प्रणाम करने योग्य है और वह शंकर के समान स्तुति के योग्य है।

ग्यारह सौ रुद्राक्ष धारण विधि का वर्णन किया। इसके अभाव में अन्य प्रकार बताते हैं। शिखा में एक रुद्राक्ष, शिर में तीन सौ, कंठ में ५०, भुजाओं में १६, १६, मणि बन्ध में १२, दोनों कंधों में ५०० और १०८ रुद्राक्ष की यज्ञोपवीत माला। इस भाँति सहस्र रुद्राक्ष के धारण करने वाले व्रती को समस्त देव

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रणाम करते हैं। और उसे शिव समान मानते हैं। तीसरी विधि इस प्रकार है। एक रुद्राक्ष शिखा में, ४० रुद्राक्ष मस्तक में, ३२ कंठ में, १०८ वक्ष स्थल पर, छः छः कानों में, १६/१६ भुजाओं में, हाथों में ३२/३२ धारण करें। जो प्रेम से इतने रुद्राक्ष धारण करते हैं वे भी प्रशंसनीय और शिव समान वंदनीय हैं। रुद्राक्ष धारण करने के समय भक्त को शिवजी का मूल मन्त्र "ॐ नमः शिवाय," कहना चाहिये। यदि वैदिक मन्त्र बोलने में अशक्त हो। शिव व्रती को, मदिरा, मांस, प्याज, लहसुन, और अभक्ष्य वस्तुओं का त्याग कर देना चाहिये। हे पार्वती ! मेरी आज्ञा है समस्त वर्णों, समस्त आश्रमियों, स्त्रियों और पतितों को अवश्य रुद्राक्ष धारण करना चाहिये। दिन में रुद्राक्ष के धारण से रात्रि के पाप नष्ट हो जाते हैं। और रात को रुद्राक्ष के धारण करने से दिन के पाप दूर हो जाते हैं। हे ! ऋषियो मुनि के गले में रुद्राक्ष, भाल पर त्रिपुण्ड्र और मुख से पंचाक्षर शिवमन्त्र का जप इन तीनों साधनों का सच्चे मन से पालन करने वाला भक्त निःसन्देह साधु है आप के द्वारा भी पूजनीय है। शिव के सच्चे उपासकों के विषयमें यमराज ने अपने सेवको से क्या कहा ? यह बात सदा स्मरण के योग्य है। मेरे सेवको ! मेरे यमलोक में उसी मनुष्य को लाओ जिसके कंठ में रुद्राक्ष माला नहीं। जिसके ललाट पर त्रिपुंड्र नहीं, और जिसके मुख में पंचाक्षर मन्त्र नहीं। भस्म और रुद्राक्ष धारण करने वाले और प्रतिक्षण शिव नाम के उपासक भक्त मेरे पूज्य हैं।

रुद्राक्ष अनेक प्रकार के होते हैं। उनके भेद मैं तुम से कहता हूँ। अतः हे प्रिय ! भक्ति के साथ सुनिये :—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१. एकमुखी रुद्राक्ष शिवरूप हैं। इसके केवल दर्शन से ब्रह्म हत्यादिक पाप नष्ट हो जाते हैं। जिस स्थान पर रुद्राक्ष का पूजन किया जाता है उस स्थान पर लक्ष्मी हठात् रहती हैं। वहां किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित नहीं होता। सब अभिलाषायें स्वत: पूर्ण हो जाती हैं।

२. द्विमुखी रुद्राक्ष देवेश के समान सब कामनाओं का दाता है। विशेष कर यह रुद्राक्ष गौ हत्या के पाप से मुक्ति दिलाता है।

३. तीन मुख वाला रुद्राक्ष सिद्ध रूप है।

४. चार मुख वाला रुद्राक्ष ब्रह्म रूप है।

५. पंचमुखी रुद्राक्ष रुद्र रूप है।

६. छै मुखी रुद्राक्ष स्वामी कार्तिक के समान है।

७. सप्तमुखी रुद्राक्ष अनंग और धन रूपी है।

८. अष्टमुखी रुद्राक्ष भैरव रूप है।

९. नौ मुख वाला रुद्राक्ष कपिल रूप है।

१०. दसमुखी रुद्राक्ष विष्णु रूप है।

११. एकादशमुखी रुद्राक्ष के धारण करने से उसकी सर्वत्र विजय होती है।

१२. द्वादश मुखी रुद्राक्ष आदित्य के समान है। उसके मस्तक पर धारण करने से बारह सूर्यों जैसा तेज मनुष्य के शरीर में प्रकाशित होता है।

१३. त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष विश्व देवता के समान है। उसके धारण करने से सौभाग्य तथा कामनाओं की प्राप्ति होती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१४. चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष तो परम शिव है। उसके मस्तक पर धारण करने से सब पाप नष्ट होते हैं।

इसके धारण करने से भक्त को यथावत सुख शान्ति भोग और मोक्ष मिलता है। हे प्रिये मुख भेद से मैंने रुद्राक्षों के भेदों का वर्णन किया है। अब मैं क्रम से चौदह रुद्राक्षों के मंत्रों का वर्णन कहता हूँ—आप सुनिये !

१) ॐ ह्रीं नमः २) ॐ नमः ३) क्लीं नमः ४) ॐ ह्रीं नमः ५) ॐ ह्रीं नमः ६) ॐ ह्रीं हुं नमः ७) ॐ हुं नमः ८) ॐ हुँ नमः ९) ॐ ह्रीं हुं नमः१०) ॐ ह्रीं नमः ११) ॐ ह्रीं हुं नमः १२) ॐ क्रों क्षौं रौं नमः १३) ॐ ह्रीं नम १४) ॐ नमः।

शिव भक्त, इन मन्त्रों के द्वारा सब मनोरथ की प्राप्ति के लिये रुद्राक्ष धारण करें। बिना मंत्र के रुद्राक्ष धारण करने वाला मनुष्य घोर नरकगामी होता है। हे मुनियो ! मैने आप को यह विद्येश्वर संहिता कह कर सुना दी। संहिता शिव की आज्ञा से सिद्धिदायी और मुक्ति दात्री है।

उपरोक्त १४ मुखी रुद्राक्षों के अलावा १६, २१ मुखी तक के रुद्राक्षों का वर्णन अन्य ग्रन्थों में आया है। साथ ही दो जुड़े हुए "ज्वालामुखी" रुद्राक्ष का वर्णन भी मर्मस्पर्शी है। इसके धारण से सब तरह के कुपित ग्रहों के दुष्परिणाम नहीं होते।

बालकों पर कुदृष्टि एवं भयानक स्वप्नों में रुद्राक्ष धारण से त्राण पाता है।

श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक जो मनुष्य रुद्राक्ष की माला १ मुखी रुद्राक्ष से लेकर २१ मुखी रुद्राक्ष के संग्रह कर पूजन आरती करते हैं उन्हें धन धान्य की प्राप्ति होती है। मनोवांछित फल की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कामना से प्रेरित मानव को इन संग्रहीत रुद्राक्षों की माला धारण एवं विधि पूर्वक पूजन करने से मनोवांछित फल प्राप्ति होती हैं।

देश, विदेश की यात्रा के समय रुद्राक्ष की पूजा, दर्शन, स्पर्श मात्र से यात्रा सफल होती हैं।

शुभ कार्य के शुभारंभ में रुद्राक्ष धारण करने पर सब प्रकार के बाधा विघ्न नाश होते हैं।

मांगलिक कार्यो में रुद्राक्ष का स्पर्श अति शुभ माना गया है।

शिव पुराण में रुद्राक्ष की महिमा इस प्रकार मानी गयी है— चतुर्दश प्रकार के रुद्राक्षों को अर्जित कर अभिमंत्रित कर धारण करना चाहिए।

शैव मतावलम्बियों की मान्यता है कि सदाशिव स्वरूप एकमुखी रुद्राक्ष वृक्ष से चटक कर वहीं गिरता है जहाँ विधिवत शिवलिंग स्थापित होता है तथा वहीं विलीन हो जाता है। दो मुखी रुद्राक्ष परम साधक की गोद में ही गिरता है।

इसके अतिरिक्त आयुर्वेद में भी रुद्राक्ष के विशेष महत्व का वर्णन आया हैं। रुद्राक्ष धारण करते समय इस बात का ख्याल रहे कि रुद्राक्ष की माला से हृदय प्रदेश का स्पर्श सदा होता रहे।

विभिन्न रोगों में रुद्राक्ष का प्रयोग :—

१. **शीतला :**—शीतला में रुद्राक्ष के दानों को गोदूध में पिष्ठितकर प्रतिदिन सन्ध्याहार के पूर्व सेवन करावे, शनैः शनैः शीतलाका शीघ्र शमन होता है। दाह शान्त होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२. **रक्तचाप :**—रक्तचाप उभय भेदात्मक निम्न रक्तचाप, उग्र-रक्तचाप दोनों में रुद्राक्ष का प्रयोग हितकर है। इस रोग में कालाग्नि रुद्र नामक छहमुखी (सात एवं नौमुखी भी प्रयोग में ला सकते हैं)—लेखक। या पंच मुखी रुद्राक्ष कंठ में या बाँह में (मन्त्र के साथ) धारण करें। लवणीय पदार्थ का सेवन यथा संभव न करें। विशुद्ध रुद्राक्ष चाहे वह किसी वर्ण का हो १० दाना लेकर ताम्रपात्र में ५० ग्राम जल में रात्रिभर डुबोए रखें, प्रात: शौचादि से निवृत होकर खाली पेट नित्य दो माह तक सेवन करें आशातीत लाभ होगा। यह परीक्षित है (लेखक)

३. **राजयक्ष्मा :**—राजयक्ष्मा में पंचमुखी रुद्राक्ष कंठ एवं बाँह में धारण करें। साथ ही दारचीनी १ भाग, छोटी इलायची २ भाग, पीपल ४ भाग एवं वंशलोचन ८ भाग, इन सब के समान भाग मिश्री के साथ सूक्ष्म पिष्तिठ कर मधु एवं नवनीत के साथ नित्य तीन माह सेवन करें। रुद्रन्ती (रुदन्ती) फल का प्रयोग करें, हितकर होता है। प्रयोग परीक्षित है।

४. **वातरक्त :**—वात रोग में कंठ एवं गले में छह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए। इस रुद्राक्ष को मंत्र से सिक्तकर जलमें घर्षित कर मंजिष्ठादि क्वाथ समान भाग का सेवन करें। बहुत लाभ दायक है।

अन्य विशेष प्रकार के रोगों के लिये भी रुद्राक्ष उपयोगी एवं फलदायक हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ श्रीशिवमहापुराण भाषाटीकासहितं प्रारभ्यते

सूतजी बोले हे महाभाग शौनकजी महाबुद्धिमान शिवरूप रुद्राक्ष का माहात्म्य सुनो, मैं संक्षेप में कहता हूं। परमपावन रुद्राक्ष शिवका अत्यन्त प्यारा है दर्शन स्पर्शन और त्रिनेत्रं त्रिगुणाधारं-त्रिदेवजनकं शिवम्। स्मरन्नमः शिवायेति ललाटे तु त्रिपुण्ड्रकम् ।।१४।। ईशाभ्यांनमइत्युक्त्वापार्श्वयोश्च त्रिपुण्ड्रकम्। बीजाभ्यांनमइत्युक्त्वा-धारयेत्तुप्रकोष्ठयोः ।।१५।। कुर्यादधः पितृभ्यां च उमेशाभ्यांतथोपरि। भीमायेतिततः पृष्ठेशिरसः पश्चिमेतथा ।।११६।। इति श्रीशैवेमहा-पुराणे विद्येश्वरसंहितायां भस्मधारणवर्णनोनामचतुर्विंशोऽध्यायः ।।२४।। सूतउवाच। शौनकर्षे महाप्राज्ञशिवरूपमहापते। शृणुरुद्राक्ष-माहात्म्यं समासात्कथयाम्यहम् ।।१।। शिवप्रियतमोज्ञेयोरुद्राक्षः परपावनः। दर्शनात्स्पर्शनाज्जाप्यात्सर्वपापहरः स्मृतः ।।२।। पुरारुद्राक्षमहिमादेव्यग्रे कथितोमुने। लोकोपकरणार्थायशिवेन परमात्मना ।।३।। शिवउवाच। शृणुदेविमहेशानिरुद्राक्षमहिमाशिवे। कथयामितवप्रीत्याभक्तानांहितकाम्यया ।।४।। दिव्यवर्षसहस्राणि-महेशानि पुनः पुरा। तपः प्रकुर्वतस्त्वस्तंमनः संयम्यवै मम ।।५।। स्वतंत्रेण परेशेन लोकोपकृतिकारिणा। लीलयापरमेशानि चक्षुरुन्मी-लितंमया ।।६।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जप से सब पाप हरने वाला है ॥ २ ॥ हे मुने। पहले परमात्मा शिव ने लोक के उपकार के निमित्त देवी के आगे रुद्राक्ष की महिमा कही थी ॥ ३ ॥ शिवजी बोले हे देवि ! महेशानि रुद्राक्ष की महिमा सुनो भक्तों के हित की इच्छा कर तुम्हारी प्रीति के कारण कहता हूं ॥ ४ ॥ हे महेशानि ! पहले दिव्य सहस्र वर्ष तक तप करते हुए और एकाग्र मन करते हुए मेरा मन क्षुभित हुआ ॥ ५ ॥ स्वतंत्र परमेश्वर लोक के उपकार के निमित्त हे परमेशानि ! मैंने लीला से ही नेत्र भीच लिये ॥ ६ ॥

इनके नाम मात्र से पण्डितजन त्रिपुण्ड्र धारण कर अथवा सोलह स्थान में त्रिपुण्ड्र धारण करें ॥ २ ॥ शिर ललाट कंठ दोनों कंधे भुजा कूर्पर मणिबंध हृदय नाभि दोनों, पार्श्व ॥ ३ ॥ तथा पीठमें स्थापितकर अश्विनीकुमारका यजन करे शिव शक्ति रुद्र ईश नारद ॥ ४ ॥ और वामादि नौ शक्ति यह सोलह देवता नासत्य और दस्र ये दो अश्विनी कुमार ॥ ५ ॥ अथवा शिर केश कान मुख बाहु हृदय नाभि दोनों ऊरु ॥ ६ ॥ दोनों जानु चरण पृष्ठभाग इन सोलह स्थानों में लगावै, शिव चन्द्र रुद्र ब्रह्मा विघ्नेश विष्णु ॥ ७ ॥ श्री हृदय में शिव नाभि में ।

एतेषांनाममात्रेणत्रिपुण्ड्रं धारयेदबुधाः । कुर्याद्वाषोडशस्थाने-त्रिपुण्ड्रं तुसमाहितः ॥२॥ शीर्षकेचललाटेचकंठेचांसद्वयेभुजे । कूर्परेमणिबन्धेचत्हृदयेनाभिपार्श्वके ॥३॥ पृष्ठेचैवं प्रतिष्ठायय-जेत्तत्राश्विदैवते । शिवशक्तितथारुद्रमीशंनारदमेवच ॥४॥ वामादिनवशक्तीश्चएताःषोडशदेवताः । नासत्योदस्रकश्चैव-अश्विनौद्वौप्रकीर्तितौ ॥५॥ अथवामूर्ध्निकेशेचकर्णयोर्वदनेतथा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बाहुद्वयेचतद्धृदयेनाभ्यामूरुयुगेतथा ॥६॥ जानुद्वयेचपदयोः पृष्ठभागे च षोडश । शिवश्चन्द्रश्च रुद्रःकोविघ्नेशोविष्णुरेव वा ॥७॥ श्रीश्चैव-हृदयेशम्भुस्तथानाभौप्रजापतिः । नागश्चनागकन्याश्च उभयोर्ऋषिकन्यकाः ॥८॥ पादयोश्चसमुद्राश्चतीर्थाः पृष्ठेविशालतः । इत्येव-षोडश स्थानमथोच्यते ॥९॥ गुह्यस्थानं ललाटश्च कर्णद्वयमनुत्तमम् । अंसयुग्मं च हृदयं नाभिरित्येवमष्टकम् ॥१०॥ ब्रह्मा च ऋषयः सप्तदेवताश्चप्रकीर्तिताः । इत्येवं तु समुद्दिष्टं भस्मविद्भिर्मुनीश्वराः ॥११॥ अथ वा मस्तक बाहूहृदयं नाभिरेव च । पंचस्थानान्यमून्याहुर्धारणे भस्मविज्जनाः ॥१२॥ यथासम्भवनं कुर्य्याद्देशकालाद्यपेक्षया । उद्धूलनेप्यशक्तश्च त्रिपुण्ड्रादीनिकारयेत् ॥१३॥

प्रजापति नाग नागकन्या दोनों ऋषिकन्या ॥ ८ ॥ चरणों के समुद्र पृष्ठमें तीर्थ यह सोलह स्थान हैं अब आठ स्थान कहते हैं ॥ ९ ॥ गुह्यस्थान, ललाट, दोनों कान, दोनों कंधे, हृदय और नाभि यह आठ स्थान हैं ॥ १० ॥ ब्रह्मा और सात ऋषि इनके देवता हैं हे मुनीश्वरो ! भस्मके जानने वालों ने यह विधान कहा है ॥ ११ ॥ अथवा मस्तक हृदय नाभि इन पांच स्थानों में भस्म धारण करे ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥ १२ ॥ देशकाल की अपेक्षासे यथासंभव कार्य करे । उद्धूलनमें असमर्थ हो तो त्रिपुण्ड्र-आदिक धारण करे ॥ १३ ॥

तब मेरे नेत्रपुट से जलके बिन्दु गिरे उन आँसुओं से रुद्राक्ष के वृक्ष उत्पन्न हुए ॥ ७ ॥ वे भक्तों के अनुग्रह करने को, स्थावरपने को प्राप्त हो गये यह विष्णुके भक्त और चारों वर्णोंके निमित्त देने ॥ ८ ॥ वे गौड देश में रुद्राक्ष के वृक्ष हुए । यह शिव के प्रिय मथुरा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१४ अयोध्या लंका मलयाचल ॥ ९ ॥ सह्यपर्वत काशी तथा दूसरे देशों में पाप समूह के नाश करने को बलात्कार से हुए हैं ॥ १० ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र वर्णवाले मेरी आज्ञा से हुए हैं पृथ्वी में रुद्राक्षों के यह भेद हैं शुभाक्ष (भद्राक्ष) उनकी जात के ही हैं. ॥ ११ ॥ क्रम से विद्वानों को इनके श्वेत रक्त पीत कृष्ण भेद

पुटाभ्यांचारुचक्षुर्भ्योपतिताजलबिन्दवः । तत्राश्रुबिन्दवोजाता-वृक्षारुद्राक्षसंज्ञकाः ॥७॥ स्थावरत्वमनुप्राप्यभक्तानुग्रहकारणात् । ते दत्ताविष्णुभक्तेभ्यश्चतुर्वर्णभ्यएव च ॥८॥ भूमौगौंडोद्भवांश्चक्रे-रुद्राक्षाञ्छिववल्लभान् । मथुरायामयोध्यायांलंकायांमलयेतथा ॥९॥ सह्याद्रौचतथाकाश्यांदशेष्वन्येषुवातथा । परानसह्यंचपापौघभेदना-ञ्छ्रुतिनोदनात् ॥१०॥ ब्राह्मणाः क्षत्रियावैश्याः शूद्राजाताममा-ज्ञया । रुद्राक्षास्ते पृथिव्यातुतज्जातीयाः शुभाक्षकाः ॥११॥ श्वेत-रक्ताः पीतकृष्णावर्णाज्ञेयाः क्रमादबुधैः । स्वजातीयंनृभिर्धार्यंरुद्राक्ष वर्णतः क्रमात् ॥१२॥ वर्णैस्तुतत्फलधार्यंभुक्तिमुक्तिफलेप्सुभिः । शिवभक्तैर्विशेषणशिवयोः प्रीतयेसदा ॥१३॥ धात्रीफलप्रमाण यच्छ्रेष्ठमेतदुदाहृतम् । बदरीफलमात्रंतुमध्यमंसंप्रकीर्तितम् ॥१४॥ अधमंचणमात्रंस्यात्प्रक्रियैषापरोच्यते । श्रृणुपार्वतिसुप्रीत्या भक्तानांहितकाम्यया ॥१५॥ बदरीफलमात्रंचयत्स्यात्किलमहेश्वरि । तथापिफलदंलोके सुखसौभाग्यवर्द्धनम् ॥१६॥ धात्रीफलसमंयत्स्या-त्सर्वारिष्टविनाशनम् । गुंजयासदृशंयत्स्यात्सर्वार्थफलसाधनम् ॥१७॥

जानने उचित हैं । वर्णों के अनुसार प्राणियों को अपनी जाति के रुद्राक्ष धारण करने उचित हैं ॥१२॥ भुक्ति मुक्ति की इच्छा करनेवालों को इसका फल अवश्य धारण करना चाहिये विशेष कर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिव के भक्तों को शिवा शिव की प्रीति के निमित्त यह धारण करना चाहिये ॥ १३ ॥ जो आमलेके फल के समानहै वह श्रेष्ठ है बदरी-फल के समान मध्यम है ॥ १४ ॥ चनेमात्र का अधम है इनकी प्रक्रिया कहते हैं हे पार्वति ! मन लगाकर सुनो, भक्तों के हितकी कामनासे कहता हूँ ॥ १५ ॥ हे महेश्वरि ! बेरके बराबर भी रुद्राक्ष हो तो भी लोक में सुख सौभाग्य का बढ़ाने वाला है ॥ १६॥ जो धात्री फलके समान है वह सम्पूर्ण अरिष्ट का शान्त करता है जो चौटली के फल के समान है वह सम्पूर्ण अर्थ का साधने वाला है ॥ १७ ॥ जैसा जैसा छोटा है वैसा वैसा अधिक फल का देने वाला है एक दूसरे से एक एक दशांश फल अधिक देता है ॥ १८ ॥ रुद्राक्ष का धारण पाप नाशन के निमित्त है इस कारण इसे सम्पूर्ण अर्थ के साधनेवालों को धारण करना चाहिये ॥ १९ ॥ जैसा लोक में फल देने वाला रुद्राक्ष है हे परमेश्वरि ! वैसी और माला नहीं है ॥२०॥ सम स्निग्ध दृढ़ स्थूल कंटकों से युक्त शुभ रुद्राक्ष कामना के देने वाले हैं। हे देवि ! यह सदा भुक्ति मुक्ति के देने वाले हैं ॥२१॥ कृमिसे खाये हुए छिन्न भिन्न कन्टकों से हीन व्रणयुक्त गोलाई से हीन ऐसे छः दोषों से युक्त रुद्राक्षों को त्यागन कर दे ॥ २२ ॥

यथायथालघुःस्याद्वैंतथाधिकफलप्रदम् ॥ एकैकतः फलंप्रोक्तं दशांशैरधिकंबुधैः ॥ १८ ॥ रुद्राक्षधारणंप्रोक्तंपापनाशनहेतवे ॥ तस्माच्चधारणीयोवैसर्वार्थसाधनो ध्रुवम् ॥ १९ ॥ यथाचदृश्यते-लोकेरुद्राक्ष फलदशुभः ॥ नतथादृश्यतेऽन्याचमालिका-परमेश्वरि ॥ २० ॥ समाःस्निग्धादृढाःस्थूलाःकंटकैःसंयुताः शुभाः ॥ रुद्राक्षाः कामदादेविभुक्तिमुक्तिप्रदाः सदा ॥ २१ ॥ क्रिमिदुष्टंछिन्नभिन्नंकटकैर्हीनमेवच ॥ व्रणयुक्तमवृत्तं चरुद्राक्षान्ष-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१४ द्विवजयेत् ।। २२ ।। स्वयमेवकृतद्वारंरुद्राक्षंस्यदिहोत्तमम् ।। यन्मपौरुषयत्नेनकृतंतत्तुमध्यमं भवेत् ।। २३ ।। रुद्राक्षधारणंप्राप्तं-महापातकनाशनम् ।। रुद्रसंख्याशतंधृत्वारुद्ररूपोभवेन्नरः ।। २४ ।। एकादशशतानीहधृत्वायत्फलमाप्यते ।। तत्फलंशक्यतेनैववक्तुं-वर्षशतैरपि ।। २५ ।। शताद्धं नयुतैः पंचशतैर्वेमुकुटंमतम् ।। रुद्राक्षैर्विरचेत्सम्यग्भक्तिमान्पुरुषो वरः ।। २६ ।। त्रिभिः शतैः षष्टियुक्तैस्त्रिरावृत्यातथापुनः ।। रुद्राक्षैरुपवीतंच निर्मीयाद्भक्तितत्परः ।। २७ ।।

जिसमें स्वयं छिद्र हो वही उत्तम रुद्राक्ष है पुरुष द्वारा छिद्र किया हुआ मध्यम है। ।। २३ ।। रुद्राक्ष के धारण से महापातक नष्ट होते हैं। एकादश सौ रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य रुद्र रूप हो जाता है ।। २४ ।। ग्यारह सौ रुद्राक्ष धारण करने से जो फल प्राप्त होता है वह सौ वर्ष में भी नहीं कह सकते ।। २५ ।। जो (५५०) साढे पांच सौ रुद्राक्षों का भक्तिपूर्वक मुकुट धारण करता है, वह भक्तिवान् पुरुष श्रेष्ठ होता है ।। २६ ।। जो तीन सौ साठ रुद्राक्षों की तीन लड़ी करके यज्ञोपवीत धारण करता है और भक्ति करता है ।। २७ ।।

शिखा में तीन कानों में छः २ बायें और दक्षिण दोनों में पहरे ।।२८।। कंठ में एक सौ एक, बाहों में ग्यारह कूर्पर और मणि-बन्ध में इसी प्रकार ।। २९ ।। शिव भक्त मनुष्य को यज्ञोपवीत में धारण करने चाहिये पांच-कटि में धारण करें ।। ३० ।। हे परमेश्वरि इस प्रकार यह रुद्राक्ष जिसने धारण किये हैं उसका रूप शिव के समान होता है वह स्तुति के योग्य होता है ।। ३१ ।। इस प्रकार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रूपकर ध्यान में स्थित हुए आसन पर स्थित शिव का उच्चारण करते हुए मनुष्य को देखकर यह प्राणी सब पापों से छूट जाता है ॥ ३२ ॥ यह ग्यारह सौ विधि कही है इसके अभाव में दूसरा

शिखायांचत्रयंप्रोक्तं रुद्राक्षाणां महेश्वरि ॥ कर्णयोः षट्च षट्चैव वामदक्षिणयोस्तथा ॥ २८ ॥ शत्तमेकोत्तरंकंठे बाह्वोर्वैरुद्रसंख्यया ॥ कूर्परद्वारयोस्तत्रमणिबंधेतथापुनः ॥ २९ ॥ उपवीतेत्रयंधार्यंशिवभक्तिरतैर्नरैः ॥ शेषानुर्वरितान्पंचसम्मितान्धारयेत्कटौ ॥ ३० ॥ एतत्संख्याधृतायेनरुद्राक्षाः परमेश्वरि ॥ तद्रूपंतुप्रणम्यंहिस्तुत्यंसर्वैर्महेशवत् ॥ ३१ ॥ एवंभूतंस्थितंध्यानेयदाक्तवासनैर्जनम् ॥ शिवेतिव्याहरंश्चैवदृष्ट्वापापैः प्रमुच्यते ॥ ३२ ॥ शतादिकसहस्रस्यविधिरेषप्रकीर्तितः ॥ तदभावेप्रकारोन्यः शुभः संप्रोच्यतेमया ॥ ३३ ॥ शिखायामेकरुद्राक्षंशिरसात्रिंशतंवहेत् ॥ पंचाशच्चगलेदध्याद्बाह्वोः षोडश षोडश ॥३४॥ मणिबन्धेद्वादश द्विस्कन्धेपंचशतं वहेत् ॥ अष्टोत्तर-शतैर्माल्यमुपवीतंप्रकल्पयेत् ॥ ३५ ॥ एवं सहस्र रुद्राक्षान्धारयेद्योदृढ़व्रतः ॥ तंनमंतिसुराः सर्वेयथारुद्रस्तथैवसः ॥ ३६ ॥ एकंशिखायां रुद्राक्षंचत्वारिंशत्तुमस्तके ॥ द्वात्रिंशत्कंठदेशेतुवक्षस्यष्टोत्तरंशतम् ॥ ३७ ॥ एकैकंकर्णयोः षट् षड बाह्वोः षोडश षोडश ॥ करयोरविमानेन द्विगुणेन मुनीश्वर ॥ ३८ ॥ संख्याप्रीतिर्धृता येनसोपिशैवजनःपर ॥ शिववत्पूजनीयोहिवंद्यस्सर्वैरभीक्षणशः ॥ ३९ ॥

प्रकार है वह मैं तुमसे कहता हूं ॥ ३३ ॥ शिखामें एक रुद्राक्ष शिर में तीस धारण करें पचास गले में और भुजाओं में सोलह सोलह धारण करे ॥ ३४ ॥ मणिबन्ध में बारह स्कन्ध में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१४ पांच सौ एक सौ आठ का यज्ञोपवीत कल्पित करें ॥ ३५ ॥ इस प्रकार जो दृढ़व्रत हो सहस्र रुद्राक्षों को धारण करे उसे सब देवता नमस्कार करते हैं वह रुद्र के समान है ॥ ३६ ॥ शिखामें एक रुद्राक्ष, मस्तक में चालीस, कंठ में बत्तीस, हृदय में एकसौ आठ ॥३७॥ एक एक कानों में छः छः भुजाओं में सोलह सोलह हाथ में बारह बारह अथवा २४ चौबीस ॥ ३८ ॥ इतने जिसने प्रीति से धारण किये हैं वह भी शिव का भक्त है वह भी निरन्तर सब से पूजनीय और बन्दनीय हैं ॥ ३९ ॥ ईशान मन्त्र से शिर में, तत्पुरुष मन्त्र से कानोंमें, अघोर मन्त्रसे गले और हृदयमें धारण करने चाहिये ॥ ४० ॥ अघोर और बीज मन्त्र से हाथों में धारण करे पन्द्रह रुद्राक्ष वामदेव मन्त्र से उदर में धारण करे ॥ ४१ ॥ सद्यो जातादि पंचब्रह्ममन्त्रों से दूसरे अङ्गों में तीन माला पांच वा सात धरे अथवा मूलमन्त्र से सम्पूर्ण रुद्राक्षों को धारण करे ॥ ४२ ॥

मद्य मांस लशुन पलांडु (प्याज) शिग्रु (सैजना) श्लेष्मान्तक (बंहुयारवृक्ष) विड्वराह (ल्हसन) इनको न खाय ॥ ४३ ॥

शिरसीशानमंत्रेणकर्णेतंत्पुरुषेण च ॥ अघोरेणगलेधार्येतेनैव-हृदयेपि च ॥ ४० ॥ अघोरबीजमंत्रेण कर्योर्धारयेत्सुधीः ॥ पंचदशाक्षग्रथितांवामदेवेनचोदरे ॥ ४१ ॥ पञ्चब्रह्मभिरंगश्च त्रिमालांपंचसप्तच ॥ अथवामूलमंत्रेणसर्वानिक्षांस्तुधारयेत् ॥ ४२ ॥ मद्यं मासंतुलशुनंपलाण्डुं शिग्रुमेवच ॥ श्लेष्मांतकं विड्वराहं भक्षणेवर्जयेत्ततः ॥ ४३ ॥ वलक्षंरुद्राक्षंद्विजतनुभिरेवेहविहितं सुरक्तंक्षत्राणांप्रमुदितमुमेपीतमसकृत ॥ ततोवैश्यैर्धार्य प्रतिदिवस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मावश्यकमहोतथाकृष्णंशूद्रैः श्रुतिगदितमार्गोयमगजे ॥ ४४ ॥
वर्णीवनीगृहयतीर्नियमेनदध्याद्रेतद्रहस्यपरमोनहिजातुतिष्ठेत् ॥
रुद्राक्षधारणमिदंसुकृतैश्चलभ्यंत्यक्त्वेदमेतदखिलान्नरकान्प्रयांति।४५।
आदावामलकात्स्वतोलधुतरा रुग्णास्ततः कंटकैः संदष्टाः
क्रिमिभिस्तनूप्रकरणच्छिद्रेण हीनास्तथा ॥ धार्यानैवशुभेप्सुभिश्चण-
कवद्द्राक्षमप्यंततोरुद्राक्षोममलिंगमंगलमुमेसूक्ष्मंप्रशस्तंसदा ।४६।
सर्वाश्रमाणांवर्णानांस्त्रीशूद्राणांशिवाज्ञया ॥ धार्यः
सदैवरुद्राक्षायतीनां प्रणवेन हि ॥ ४७ ॥

श्वेत रुद्राक्ष ब्राह्मणों को हितकारी है, क्षत्रियों को लाल, वश्यों को पीले और शूद्रों को कृष्ण वर्ण के धारण करने चाहिये यह परमरहस्य है यह रुद्राक्ष बड़े पुण्य से प्राप्त होता है इसके त्यागन करने से नरक की प्राप्ति होती है ॥ ४५ ॥ आमले से छोटे अत्यन्त लघु भएया और किसी प्रकार से हीन हुए कंटकहीन कृमिके खाये हुए छिद्रहीन ऐसे रुद्राक्षों को मंगल की इच्छा वाला न धारण करे और चने के समान सूक्ष्म की प्रशंसा की गई है। शिवजी कहते हैं यह हमारा चिन्ह स्वरूप सदा धारण करना चाहिये ॥ ४६ ॥ सम्पूर्ण आश्रम और वर्णों को स्त्री शूद्रों को शिव की आज्ञा से सदा रुद्राक्ष धारण करना चाहिये और यतियों को ॐकार पूर्वक धारण करने चाहिये ॥ ४७ ॥ दिन में धारण करने से रात्रि के, रात्रि में धारण करने से दिन के, इसी प्रकार प्रभात मध्यान्ह और संध्याकाल के सब पातक दूर हो जाते हैं ॥ ४८ ॥ जो जो त्रिपुण्ड्र धारण करने वाले हैं अथवा जो जटा धारण करने वाले हैं रुद्राक्ष के धारण करने वाले जो हैं वे यमलोक को नहीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जाते ।। ४९ ।। एक रुद्राक्ष शिर में और माथे पर त्रिपुण्ड्र धारण करता है और जो पंचाक्षर शब्द का मंत्र करते हैं वे महात्मा पूज्य हैं ।। ५० ।। जिसके अंग में रुद्राक्ष, माथे पर त्रिपुण्ड्र तिलक, मुख में पञ्चाक्षर मंत्र नहीं है उनको मेरे यमलोक को लावो ।।५१।।

दिवाबिभ्रद्रात्रिकृतैरात्रौबिभ्रद्दिवाकृतैः ।। प्रातर्मध्याह्नसायाह्नेमुच्यतेसर्वपातकैः ।। ४८ ।। ये त्रिपुण्ड्र धरालोकेजटाधारिणएवये ।। येरुद्राक्षधरास्तेवैयमलोकंप्रयांतिन ।। ४९ ।। रुद्राक्षमेकंशिरसाबिभर्तितथात्रिपुण्ड्रंचललाटमध्ये ।। पंचाक्षरयेहिजपंतिमंत्रंपूज्याभवद्भिः खलुतेहिसाधवः ।। ५० ।। यस्याङ्गेनास्तिरुद्राक्ष स्त्रिपुण्ड्र भालपट्टके ।। मुखेपंचाक्षरंनास्तितमानययमालयम् ।। ५१ ।। ज्ञात्वाज्ञात्वातत्प्रभावभस्मरुद्राक्षधारिणः ।। तेपूज्याः सर्वदास्माकंनोनेतव्याः कदाचन ।। ५२ ।। एवमाज्ञापयामासकालोपिनिजकिङ्करान् ।। तथेतिमत्त्वातेसर्वेतूष्णीमासन्सुविस्मिताः ।। ५३ ।। अतएवमहादेविरुद्राक्षोत्यघनाशनः ।। तद्धरोमर्तिप्रयः शुद्धोऽत्यघवानपिपार्वति ।। ५४ ।। हस्ते बाहौतथामूर्ध्नि रुद्राक्षंधारयेत्तुयः ।। अवध्यः सर्वभूतानांरुद्ररूपीचरेद्भुवि ।। ५५ ।। सुरासुराणांसर्वेषांवंदनीयः सदासवै ।। पूजनीयोहिदृष्टस्यपापहाचयथाशिवः ।। ५६ ।। ध्यानज्ञानावमुक्तोपिरुद्राक्षंधारयेत्तुयः ।। सर्वपापविनिर्मुक्तः संयाति परमांगतिम् ।। ५७ ।।

भस्मरुद्राक्ष धारण करने वालों के उन-उन प्रभावोंको जानकर पूजनीय जानो उन्हें हमारे लोक को मत लाओ ।। ५२ ।। वह यमराज ने अपने किंकरों से कहा है यह सुन वे विस्मय को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राप्त हो मौन हुए ॥ ५३ ॥ हे महादेवि ! उस प्रकार रुद्राक्ष महापाप नाश करने वाला है हे पार्वति ! उनका धारण करने वाला अधिक पापी भी हो तथापि ॥ ५४ ॥ हाथ बाहु शिर में जो रुद्राक्ष धारण करता है वह सब प्राणियों से अवश्य रुद्ररूप हो पृथ्वी में विचरण करता है ॥ ५५ ॥ वह सुर असुर सदा सबका बन्दनीय है। वह देखते ही पूजनीय है शिव के समान पापों को दूर करने वाला है ॥ ५६ ॥ ध्यान ज्ञान से अवमुक्त हुआ भी जो यह रुद्राक्ष धारण करता है वह सब पापों से छूटकर परमगति को प्राप्त होता है ॥ ५१ ॥ रुद्राक्ष से मन्त्र जपने से करोड़गुना पुण्य होता है उसके ध्यान करने से दसकरोड़गुना पुण्य मनुष्य पाता है ॥५८॥ जब तक जीता है तब तक स्वस्थ शरीर रहता है हे देवि । उसको कभी अकाल मृत्यु नहीं होती ॥ ५९ ॥ त्रिपुण्ड्र के सहित जिसके अङ्ग में रुद्राक्ष शोभित होता है और जो मृत्युंजय का जप करता है उसके दर्शन से रुद्रदर्शन का फल है ॥ ६० ॥ हे प्रिये पांच-देवताओं की उपासना करने वाला सब देवताओं का प्रिय रुद्राक्षमाला से सब देवताओं का जप करें ॥ ६१ ॥ इसको विष्णु आदि देवताओं के भक्त भी धारण करें ॥ ६२ ॥

रुद्राक्षेणजपन्मन्त्रं पुण्यंकोटि गुणं भवेत् ॥ दशकोटिगुणंपुण्यं धारणाल्लभते नरः ॥ ५८ ॥ यावत्कालंहिजीवस्यशरीरस्थो-भवेत्सवै ॥ तावत्कालंस्वल्पमृत्युर्नतंदेविविबाधते ॥ ५९ ॥ त्रिपुण्ड्रेणचसंयुक्तंरुद्राक्षाविलसांगकम् ॥ मृत्युंजयंजपंतंचदृष्ट्वा रूद्रंफलंलभेत् ॥ ६० ॥ पंचदेवप्रियश्चैवसर्वदेवप्रियस्तथा ॥ सर्वमन्त्राञ्जपेद्भक्तोरुद्राक्षमालयाप्रिये । ६१ ॥ विष्णवादि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यभक्ताश्च धारयेयुर्नसंशय ॥ रुद्र भक्तो विशेणषे रुद्राक्षान्धारयेत्सदा ॥ ६२ ॥ रुद्राक्षाविविधाः प्रोक्तास्तेषां भेदान्वदाम्यहम् ॥ शृणु पार्वति सद्भक्त्या भुवित मुक्तिफलप्रदान् ॥ ६३ ॥ एकवक्त्रं शिवः साक्षाद्भुक्तिमुक्तिफलप्रदः ॥ तस्यदर्शनमात्रेणब्रह्महत्या व्यपोहति ॥ ६४ ॥ यत्र सम्पूजितस्तत्रलक्ष्मीदूरतरा नहि ॥ नश्यंत्युयद्रवाः सर्वेसर्वकामाभवंतिहि ॥ ६५ ॥ द्विवक्त्रोदेवदेवेशस्सवकामफलप्रदः ॥ विशेषतः सरुद्राक्षो गोवधंनाशयेद्द्रुतम् ॥ ६६ ॥ त्रिवक्त्रोयोहिरुद्राक्षः साक्षात्साधनदस्सदा ॥ तत्प्रभावाद्भवेयुर्वै विद्याःसर्वाः प्रतिष्ठिताः ॥ ६७ ॥

रुद्राक्ष बहुत प्रकार के होते हैं में उनके भेद कहता हूं हे पार्वति ! सुद्भक्तिसे उन भुक्ति मुक्ति देने वालों का चरित्र सुनो ॥ ६३ ॥ एक मुखी से साक्षात् भुक्ति मुक्ति का देने वाला शिव रूप है उसके दर्शन मात्र से ब्रह्महत्या नष्ट होती है ॥ ६४ ॥ जहाँ तक पूजित होता है वहां से लक्ष्मी दूर नहीं है सब उपद्रव शान्त होकर सब कामना सिद्ध होती है ॥ ६५ ॥ दो मुखवाला देवदेवेश सब काम और फल का देने वाला है विशेष यह रुद्राक्ष गोवध हत्या को दूर करता है ॥ ६६ ॥ तीन मुखी रुद्राक्ष सदा साधन देने वाला है उसके प्रभाव से सब विद्या प्रतिष्ठित होती है ॥ ६७ ॥ चारमुखी ब्रह्मारूप है नरहत्या दूर करने वाला है वह दर्शन स्पर्शन से चारों वर्ग का देने वाला है ॥ ६८ ॥ पांचमुखी स्वयं रुद्ररूप है उसी का नाम कालाग्नि है सब मुक्ति और सब कामना का देने वाला है ॥ ६९ ॥ अगम्या में गमन करने अभक्ष्य भक्षण करने से जो पाप है इत्यादि और भी सभी सभी पाप पंच-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
मुखी रुद्राक्ष दूर करता है ॥ ७० ॥ छह मुखी कार्तिकेयस्वरू इसको दक्षिण भुजा में धारण करे तो वह ब्रह्महत्यादि के पापों से छूट जाता है इसमें संदेह नहीं ॥ ७१ ॥ हे महेशानि ! सातमुख का अनंग होता है उसके धारण करने से दरिद्र भी ईश्वर हो जाता है ॥ ७२ ॥ आठ मुख का रुद्राक्ष वसुमूर्ति भैरवरूप

चतुर्वक्त्रः स्वयं ब्रह्मानरहत्यां व्यपोहति ॥ दर्शनात्स्पर्शनात्सद्यश्चतुर्वर्गफलप्रदः ॥ ६८ ॥ अगम्यागमनंपापमभक्ष्यस्यचभक्षणम् ॥ इत्यादिसर्वपापानि पंचवक्त्रो व्यपोहति ॥ ७० ॥ षडवक्त्रः कार्तिकेयस्तुधारणाद्दक्षिणेभुजे । ब्रह्महत्यादिकैः पापैर्मुच्यते तेनात्रसंशयः ॥ ७१ ॥ सप्तवक्त्रोमहेशानिह्यनंगोनामनामतः ॥ धारणात्तस्यदेवेशिदरिद्रोपीश्वरोभवेत् ॥ ७२ ॥ रुद्राक्षश्चाष्टवक्त्रश्चवसुमूर्तिश्चभैरवः ॥ धारणात्तस्यपूर्णायुर्मृतो भवतिशूलभृत् ॥ ७३ ॥ भैरवोनव वक्त्रश्चकपिलश्चमुनिः स्मृतः ॥ दुर्गावातदधिष्ठात्रीनवरूपा महेश्वरी ॥ ७४ ॥ तं धारयेद् वामहस्तेरुद्राक्षंभक्तितत्परः ॥ सर्वेश्वरोभवेन्नूनंमम तुल्योनसंशयः ॥ ७५ ॥ दशवक्त्रोमहेशानि स्वयंदेवोजनार्दनः ॥ धारणात्तस्यदेवेशिसर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ ७६ ॥ एकादशमुखोयस्तुरुद्राक्षः परमेश्वरि ॥ सरुद्रोधारणात्तस्यसर्वत्रविजयी भवेत् ॥ ७७ ॥ द्वादशास्यं तुरुद्राक्षंधारयेत्केश देशके ॥ आदित्याश्चैवतेसर्वेद्वादशैवस्थितास्तथा ॥ ७८ ॥

है उसके धारण से पूर्णायु होती है और शरीर के अन्त में शिव रूप होता है ॥ ७३ ॥ नौमुख का भैरव और कपिल मुनि है, या उसकी अधिष्ठात्री देवता दुर्गा महेश्वरी है ॥ ७४ ॥ उस रुद्राक्ष को भक्ति में तत्पर हो बायें हाथ में धारण करें, वह सर्वेश्वर तथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुल्य हो जाता है, इसमें संदेह नहीं ॥ ७५ ॥ हे महेशानि ! दशमुखी रुद्राक्ष स्वयं जनार्दन देव है, हे देवेशि ! उसके धारण करने से सब कामना को प्राप्त होता है ॥ ७६ ॥ ग्यारहमुखी रुद्राक्ष को धारण करने से रुद्ररूपी हो सर्वत्र विजयी होता है ॥ ७७ ॥ जो बारह मुख का रुद्राक्ष केशदेश में धारण करता है, वह बारह आदित्य के समान है ॥ ७८ ॥ तेरहमुखी रुद्राक्ष धारण करने से विश्वेदेव के तुल्य होता है, वह सब कामना को प्राप्त हो सौभाग्य और मंगल को प्राप्त होता है ॥ ७९ ॥ चौदहमुखी रुद्राक्ष परमशिवरूप उसको भक्तिसे शिर पर धारण करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं ॥ ८० ॥ मुख भेद से इतने रुद्राक्षों के भेद वर्णन किये हैं हे पर्वतराजपुत्री ! अब क्रम से प्रीति पूर्वक उनके मंत्रो को सुनो ॥ ८१ ॥ "ओं ह्रीं नमः ॥ १ ॥ ओं नमः ॥ २ ॥ क्लीं नमः ॥ ३ ॥ ओं ह्रीं नमः ॥ ४ ॥ ओं ह्रीं नमः ॥ ५ ॥ औं ह्रीं हुं नमः ॥ ६ ॥ ओं हुं नमः ॥ ७ ॥ ओं हुं नमः ॥ ८ ॥ औं ह्रीं हूं नमः ॥ ९ ॥ ओं ह्रीं नमः ॥ १० ॥ ओं ह्रीं हुं नमः ॥ ११ ॥ ओं क्रौं क्षौं रौं नमः ॥ १२ ॥ ओं ह्रीं नमो नमः ॥ १३ ॥ ओं नमः ॥ १४ ॥" भक्ति और श्रद्धा के सहित सम्पूर्ण काम अर्थ की सिद्धि के निमित्त इन मन्त्रों से रुद्राक्षों को धारण करें आलस्य न करें चौदहमुखी रुद्राक्षों तक के चौदह मन्त्र हैं पहले मन्त्र से एकमुखी दूसरे से दोमुखी त्रयोदशमुखो विश्वेदेवस्तद्धारणान्नरः । सर्वान्कामानवाप्नोतिसौभाग्यंमंगलंलभेत् ॥ ७९ ॥ चतुर्दशमुखो-यो हि रुद्राक्षः परमः शिवः । धारयेन्मूर्ध्नि तं भक्त्यासर्वपापं प्रणश्यति ॥ ८० ॥ इतिरुद्राक्षभेदा हि प्रोक्तावैमुखभेदतः । तत्तन्सं-त्राञ्छृणुप्रीत्याक्रमाच्छैलेश्वरात्मजे ॥ ८१ ॥ ॐ ह्रीं नमः १

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ नमः २ ॐ क्लीं नमः ३ ॐ ह्लीं नमः ४ ॐ ह्लीं नमः ॐ ह्लीं हुं नमः ६ ॐ हुं नमः ७ ॐ हुं नमः ८ ॐ ह्लीं हुं नमः ॐ ह्लीं नम: नमः १० ॐ ह्लीं हुं नमः ११ ॐ क्रों क्षौं रौं नमः १२ ॐ ह्लीं नमः १३ ॐ नमः.१४ भक्ति श्रद्धायुतश्चैव सर्वकामार्थ सिद्धये। रुद्राक्षान्धारयेन्मंत्रै र्देवनालस्य र्वजितः ॥ ८२ ॥ विनामंत्रेणयोधत्ते-रुद्राक्षं भुविमानवः। स याति नरकं घोरं यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥ ८३ ॥ रुद्राक्षमालिनंदृष्ट्वाभूतप्रेतपिशाचकाः। डाकिनीशाकिनीचैवये चान्येद्रोहकारकाः ॥ ८४ ॥ कृत्रिमंचैव यत्किंचिद्भिचारादिकंच-यत। तत्सर्वंदूरतोयातिद्दष्ट्वाशंकितविग्रहम् ॥ ८५ ॥ रुद्रक्षमालि-नंदृष्ट्वा शिवोविष्णुः प्रसीदति। देवीगण पतिस्सूर्यः सुराश्चान्येपि-पार्वति ॥ ८६ ॥ एवज्ञात्वातुमाहात्म्यंरुद्राक्षस्यमहेश्वरि। सम्य-ग्धार्यास्समंत्राश्चभक्त्याधर्मविवृद्धये ॥ ८७ ॥

इसी क्रम से धारण करे ॥ ८२ ॥ पृथ्वी पर जो मनुष्य बिना मन्त्र के रुद्राक्ष को धारण करता है वह चौदह इन्द्र की आयु अर्थात् एक कल्प तक घोर नरक में पड़ता है ॥ ८३ ॥ रुद्राक्ष की माला वाले को देखकर भूत प्रेत पिशाच डाकिंनी शाकिनी अथवा जो दूसरे द्रोह करने वाले जीव हैं ॥ ८४ ॥ और जो कुछ कृत्रिम अभिचारादिक हैं वह दूरसे ही रुद्राक्षधारी को देख पलायन करते हैं ॥ ८५ ॥ रुद्राक्ष माला धारी को देखकर शिव और विष्णु प्रसन्न होते हैं हे पार्वती ! देवी गणपति सूर्य तथा दूसरे देवता प्रसन्न होते हैं ॥ ८६ ॥ हे महेश्वरि ! इस प्रकार रुद्राक्ष का महात्म्य जानकर मन्त्र और भक्ति से धर्मवृद्धि के निमित्त सम्यक प्रकार से रुद्राक्ष धारण करने चाहिये ॥ ८७ ॥ इस प्रकार पार्वती

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परमात्मा शिव ने वर्णन किया था भस्म रुद्राक्ष का माहात्म्य भुक्ति मुक्ति के फल का देने वाला है ॥ ८८ ॥ भस्म और रुद्राक्ष के धारण करने वाले शिव के अतिप्रिय जानने, उसके धारण के प्रभाव से भुक्ति मुक्ति होती है इसमें संदेह नहीं ॥ ८९ ॥ हे गौरी ! भस्म रुद्राक्ष का धारण करने वाला शिव भक्त कहाता है जो पञ्चाक्षर जप में आसक्ति है वह परिपूर्ण है ॥ ९० ॥ बिना भस्म और त्रिपुण्ड्र के बिना रुद्राक्ष माला के पूजित हुए महादेव अभीष्ट फल नहीं देते ॥ ९१ ॥ हे मुनीश्वरों ! जो तुमने पूछा वह वह सब तुमसे वर्णन किया भस्म रुद्राक्ष का माहात्म्य सब कामना और समृद्धि का देने वाला है ॥९२॥ जो इस परम शुभ माहात्म्य को

इत्युक्तंगिरिजेहिशिवेन परमात्मना । भस्मरुद्राक्षमाहात्म्यंभुक्ति-मुक्तिफलप्रदम् ॥ ८८ ॥ शिवस्यातिप्रियौज्ञेयौभस्मरुद्राक्षधारिणौ । तद्धारणप्रभावद्धिभुक्तिर्मुक्तिर्नसंशयः ॥ ८९ ॥ भस्मरुद्राक्षधारी यः शिवभक्तस्सउच्यते । पंचाक्षरजपासक्तः परिपूर्णश्चसन्मुखे ॥ ९० ॥ विनाभस्मत्रिपुण्ड्रेणविनारुद्राक्षमालया । पूजितोपि महादेवोना-भीष्टफलदायकः ॥ ९१ ॥ तत्सर्वं च समाख्यातंयत्पृष्टंहिमुनीश्वर । भस्मरुद्राक्षमाहात्म्यंसर्वकामसमृद्धिदम् ॥ ९२ ॥ एतद्यः श्रृणुयान्नित्य-माहात्म्यंपरमं शुभम् । रुद्राक्षभस्मनोर्भक्त्यासर्वान्कामानवाप्नु-यात् ॥ ९३ ॥ इहसर्वसुखंभुक्त्वापुत्रपौत्रादिसंयुतः । लभेत्परत्र सन्मो-क्षशिवस्यातिप्रियोभवेत् ॥ ९४ ॥ विद्येश्वरसंहितेयकथिता वो मु-नीश्वराः । सर्वसिद्धिप्रदा नित्यंमुक्तिदा शिवशासनात् ॥ ९५ ॥ इतिश्रीशिवमहापुराणेप्रथमायांविद्येश्वरसंहितायां साध्यसाधनखण्डे-रुद्राक्षमाहात्म्यवर्णनोनाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ विद्येश्वर-संहिता समाप्ता ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नित्यप्रति श्रवण करते हैं रुद्राक्ष और भस्म में भक्ति हैं वह सब कामनाओं को प्राप्त होते हैं ॥ ९३ ॥ यहाँ सब गु भोग पुत्र पौत्रादि से संयुक्त हो फिर मुक्ति में शिव के सायुज्य को प्राप्त होता है ॥ ९४ ॥ हे मुनीश्वरो यह तुमसे विद्येश्वरसंहिता कही है शिव की आज्ञा से यह सब सिद्धि और मु देने वाली है ॥ ९५ ॥

इति श्री शि० विद्ये० सं० सा० सा० खण्डे पं० ज्वालाप्रसाद मिश्रकृतभारुद्राक्षमाहात्म्यवर्णनोनाम पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥
इति श्री विद्ये० सं० समाप्ता ॥

श्लोक

भूमिबाणांकचन्द्रेब्दे मांगल्ये भृगुवासरे ॥
भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां टीका पूर्तिमुपगात् ॥ १ ॥

इति शिवमहापुराणे भाषाटीकासमेते प्रथमा
विद्येश्वरसंहिता स०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुस्तक मिलने का पता :
रामेश्वरलाल केदारनाथ सहरिया
डिब्रूगढ़ (आसाम)
दूरभाष : १२०१, १२०२

★

केदारनाथ सहरिया
३८९, ब्लोक "जी"
न्यू अलीपुर
कलकत्ता-२७
दूरभाष : ४५-८६६३
४५-८६६८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection